v0;Dr ok.kh

04 नवम्बर 2001 से 28 मार्च 2002 तक
की अव्यक्त वाणियों का संग्रह तथा
अव्यक्त बापदादा के दिव्य सन्देशों का संकलन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
मुख्यालय : पाण्डव भवन, आबू पर्वत (राज.)

अव्यक्त शिवबाबा और ब्रह्माबाबा ने
ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी के माध्यम से
ब्रह्मा-वत्सों के सम्मुख जो
कल्याणकारी महावाक्य उच्चारण किये,
यह पुस्तक उनका संकलन है।

प्रथम संस्करण :
मई, 2002

प्रतियाँ : 5000

प्रकाशक एवं मुद्रक:
साहित्य विभाग,
ओमशान्ति प्रेस, ज्ञानामृत भवन,
शान्तिवन, **आबू रोड – 307 510**
☎ – 28124, 28125

पुस्तक मिलने का पता:
साहित्य विभाग,
पाण्डव भवन, **आबू पर्वत – 307 501**

© **Copyright :** Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyalaya, Mount Abu, (Raj)
No part of this book may be printed without the permission of the publisher.

अमृत-सूची

04-11-01 सत्यवादी बनो और समय प्रमाण रहमदिल बन बेहद की वृत्ति, दृष्टि और कृति बनाने के दृढ़ संकल्प का दीप जलाओ **5**

25.11-01 दुआयें दो-दुआयें लो, कारण का निवारण कर समस्याओं का समाधान करो **13**

15-12-01 एकव्रता बन पवित्रता की धारणा द्वारा रूहानियत में रह मनसा सेवा करो **24**

31-12-01 इस नये वर्ष में सफलता भव के वरदान द्वारा बाप और स्वयं की प्रत्यक्षता को समीप लाओ **31**

18-01-02 स्नेह की शक्ति द्वारा समर्थ बनो, सर्व आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली दो **44**

03-02-02 लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ, सर्व खज़ानों में सम्पन्न बनो **50**

24-02-02 बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए अपनी व दूसरों की वृत्ति को पॉजिटिव बनाओ **60**

11-03-02 विशेषतायें परमात्म-देन हैं – इन्हें विश्व सेवा में अर्पण करो **69**

28-03-02 इस वर्ष को निर्माण, निर्मल वर्ष और व्यर्थ से मुक्त होने का मुक्ति वर्ष मनाओ **79**

अव्यक्त सन्देश

05-05-01 बाप को अपना अविनाशी कम्पेनियन और कम्पनी बनाओ **91**

12-05-01 लक्ष्य की सम्पन्नता के लिए दृढ़ता और परिपक्वता की आवश्यकता **92**

13-05-01 स्पेशल बच्चों द्वारा वतन से स्पेशल सेवा करने का पार्ट **94**

14-05-01 अपने पुराने संस्कारों को भस्म करने में एवररेडी बनो **96**

17-05-01 याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा कार्य करने से यादगार बनते हैं .. **100**

27-05-01 डबल लाइट बन उड़ने के लिए मेरे को तेरे में परिवर्तन कर सब बोझ बाप को दे दो **104**

21-06-01 मात-पिता को फालो कर मायाजीत, प्रकृतिजीत और कर्मेन्द्रिय जीत बनो **108**

25-06-01 बालक सो मालिक का प्रत्यक्ष रूप में एक्जैम्पल बनो **112**

26-06-01 अपने ऊंचे स्वमान में रह समस्याओं को खेल समझकर पार करो **113**

01-07-01 सिर्फ प्रीत करने वाले नहीं लेकिन निभाने वाले बनो **115**
05-07-01 सेवा के साथ रूहानी स्वमान का भी बैलेन्स रखो **116**
06-07-01 दिल में बाबा का प्यार समाया हुआ है
इसलिए सहज मदद मिलती रहती है **118**
24-07-01 सरेन्डर होना अर्थात् हर श्रेष्ठ कार्य में जिम्मेवार बनना **120**
20-08-01 ज्ञान, योग, धारणा और सेवा में अलबेला नहीं अलर्ट बनो **123**
12-09-01 साइलेन्स की शक्ति द्वारा
आत्माओं को और प्रकृति को विशेष सहयोग दो **125**
17-09-01 नथिंग न्यू के स्मृति स्वरूप बन प्रकृति का खेल देखो **125**
20-09-01 अन्तिम सीन को देखने के लिए साहस के साथ
अपनी अवस्था को साक्षी बनाओ **128**
21-09-01 अपना मनोबल बढ़ाओ और मनसा सेवा करो **130**
23-09-01 सदा सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करो **132**
11-10-01 समय प्रमाण अब शान्ति, शक्ति और सुख देवा बनो
तब बाप की प्रत्यक्षता होगी **133**
09-12-01 प्रकृति के पांचों तत्वों द्वारा वन्डरफुल स्वागत **135**
16-01-02 अव्यक्त मिलन की आकर्षण से
नियमों का बंधन निभाने में सहयोग **138**
02-03-02 रूहानी छत्रछाया ही सेफ्टी का साधन है **139**
03-03-02 हलचल के वायुमण्डल में
योगयुक्त, निर्भय, निरसंकल्प हो निर्णय करो **140**
19-03-02 अब मनसा द्वारा अनुभूति कराने और वाचा द्वारा
सन्देश देने की सेवा साथ-साथ करो **141**
02-04-02 स्व, सेवा साथी और विश्व परिवर्तन के लिए
अपने शक्ति स्वरूप को इमर्ज करो **142**
03-04-02 समय प्रमाण योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवा की विधि अपनाओ **143**
05-04-02 अब अपनी मूर्त से हर एक को
आत्मिक रूहानी सीरत का अनुभव कराओ **144**
23-04-02 हर समय, हर शुभ कार्य, श्रेष्ठ सहयोग में
हाँ जी का पार्ट बजाओ **145**
17-05-02 बाप समान बनने के लिए नि:स्वार्थ और
निर-इच्छुक बनकर तपस्या करो **147**

4-11-2001

सत्यवादी बनो और समय प्रमाण रहमदिल बन बेहद की वृत्ति, दृष्टि और कृति बनाने के दृढ़ संकल्प का दीप जलाओ

आज प्यार के सागर बापदादा अपने अति प्यारे सिकीलधे मीठे-मीठे बच्चों से मिलन मनाने आये हैं। आप सब भी मिलन मनाने आये हैं ना! भाग-भाग कर आये हैं। तो बापदादा भी बच्चों से मिलने के लिए भाग-भाग के आये हैं। आप सभी तो इस लोक से आये हो और बापदादा परलोक और सूक्ष्मलोक से आये हैं। तो सबसे दूर से कौन आया है? कौन दूरदेशी है? डबल फारेनर्स दूरदेशी हैं? नहीं। सबसे दूर से दूर, दूरदेशी तो बाप ही है। बापदादा को इस बारी डबल विदेशी वा भारतवासी बच्चों की एक बात पर बहुत नाज़ है। कौन-सी बात पर नाज़ है? बोलो। विशेष डबल विदेशी बच्चों की हिम्मत देख बापदादा को नाज़ है कि कैसी भी परिस्थिति में बाप से मिलने के लिए पहुँच ही गये हैं। ड्रामा ने खेल भी दिखाया लेकिन बाप और बच्चों के मिलन को ड्रामा भी रोक नहीं सका। तो ऐसे हिम्मत वाले बच्चों पर बापदादा विशेष वरदानों की वर्षा कर रहे हैं।

आज इस घड़ी जो भी बच्चा जो भी वरदान चाहे वह वरदान मिलेगा। सहज मिलेगा लेकिन इस वरदान को रोज़ अमृतवेले और कर्मयोगी स्थिति में बार-बार दिल से याद करना। दिलशिकस्त नहीं होना। वरदान प्राप्त है सिर्फ जैसे स्थूल नयनों के बीच में निरन्तर बिन्दी चमकती है ना! ऐसे सदा नयनों में बाप बिन्दी को समाकर रखना। रख सकते हो या मुश्किल है? (सहज है) तो जैसे स्थूल बिन्दी निरन्तर है, ऐसे नयनों में निरन्तर बाप बिन्दी भी समाया हुआ हो। समा लिया? फिट हो गया? निकल तो नहीं जायेगा? अगर नयनों में निरन्तर बाप बिन्दी समाया हुआ है तो और किसी तरफ भी नयन आकर्षित नहीं होंगे। मेहनत से छूट जायेंगे। और तरफ नज़र जायेगी ही नहीं। बिल्कुल सेफ हो जायेंगे। कुछ भी हो जाए लेकिन नयनों में सदा बिन्दी बाप समाया हुआ हो। सदा नयनों में समाया हुआ होगा तो दिल में भी वही

समाया हुआ होगा। तो दिल में और नयनों में समाने की विधि है - बापदादा, साहेब को राज़ी करना। तो साहेब राज़ी है? आप समझते हो बापदादा साहेब आपके ऊपर राज़ी है? कितने परसेन्ट राज़ी है? (कोई ने कहा ९९, कोई ने कहा ९७ परसेन्ट) आफरीन है। बापदादा को राज़ी करना बहुत सहज है। बापदादा को राज़ी करने का सहज साधन है ''सच्ची दिल''। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। हर कर्म में सत्यवादी। सत्यता महानता है। जो सच्ची दिल वाला है, वह सदा संकल्प, वाणी और कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में राज़युक्त होगा अर्थात् राज़ को समझ करने वाले, चलने वाले; और हम कहाँ तक राज़युक्त हैं - उसको परखने की निशानी है - अगर राज़ जानता है तो वह कभी भी अपने स्व-स्थिति से नाराज़ नहीं होगा अर्थात् दिलशिकस्त नहीं होगा और संकल्प में भी, वृत्ति से भी, स्मृति से भी, दृष्टि से भी किसी को नाराज़ नहीं करेगा; क्योंकि वो सबके वा अपने संस्कार-स्वभाव को जानने वाला राज़युक्त है। तो बाप को राज़ी करने की विधि है - राज़युक्त चलना और राज़युक्त अर्थात् न अपने अन्दर नाराज़गी आये, न औरों को नाराज़ करे।

सदा समय अनुसार अपने मन, बुद्धि को स्वप्न तक भी सदा शुभ और शुद्ध रखो। कई बच्चे रूहरूहान में कहते हैं - बापदादा तो शक्तियां देता है लेकिन समय पर शक्ति यूज़ नहीं होती। बापदादा विशेष सब बच्चों के साथी होने के सम्बन्ध से विशेष ऐसे समय पर एकस्ट्रा मदद देते हैं, क्यों? बाप जिम्मेवार है बच्चों को सम्पन्न बनाए साथ ले जाने के लिए। तो बाप अपनी जिम्मेवारी विशेष ऐसे समय पर निभाते हैं लेकिन कभी-कभी बच्चों के मन की कैचिंग पावर का स्विच आफ होता है, तो बाप क्या करे? बाप तो फिर भी स्विच आन करने की, खोलने की कोशिश करते हैं लेकिन टाइम लग जाता है। इसलिए जब फिर स्विच आन हो जाता है तो कहते हैं - करना तो नहीं चाहिए था, लेकिन हो गया। तो सदा अपने मन की कैचिंग पावर, जिसको आप कहते हैं टचिंग, उस टचिंग व कैचिंग पावर का स्विच

आन रखो। माया कोशिश करती है आफ करने की, सेकण्ड में आफ करके चली जाती है, इसीलिए जैसा समय नाज़ुक होता जायेगा, अभी होना है और। डरते तो नहीं हो ना? बापदादा ने पहले भी कहा कि आप सबने वर्ष क्यों मनाया है? कौन-सा वर्ष मनाया है? संस्कार से संसार परिवर्तन का। पक्का है ना! मनाया है ना! या भूल गये हैं? (मना रहे हैं) तो जब बच्चों ने संसार परिवर्तन का पक्का संकल्प लिया है तो प्रकृति बाप से पूछती है कि मैं तैयारी करती हूँ, सफाई करने की लेकिन सफाई करने वाले जो निमित्त हैं वह करते-करते सोच में पड़ जाते हैं, दुविधा में पड़ जाते हैं करें या नहीं करें। जल्दी करें, धीरे से करें, तो मैं क्या करूं! प्रकृति पूछती है, तो बापदादा प्रकृति को क्या जवाब दे? डबल विदेशी बोलो। (थोड़ा इन्तजार करे) यह तो ठीक जवाब नहीं है। अगर डबल विदेशी इन्तजार करेंगे तो फिर प्लेन नहीं मिलेंगे। अभी तो प्लेन मिल गये ना। सोते-सोते आये हो ना प्लेन में! आराम से आ गये ना। सारी सभा में से किसी को भी आने में मुश्किल हुई? हाथ उठाओ। (एक ने कहा कि हमारा प्लेन एक बार वापस चला गया) टाइम पर पहुँच तो गई। यह हिम्मत की बात है। जो थोड़ा डरे तो बैठ गये। आप लोगों ने दृढ़ संकल्प किया, जाना ही है तो पहुँच गये। सिर्फ एक का प्लेन लौटा, बस ना। उसकी कोई बात नहीं, फिर अच्छा मिलेगा। अभी आगे तो प्रकृति को, सफाई करने वालों को सोच में नहीं डालो क्योंकि स्थापना वाले अभी भी कभी-कभी सोच में पड़ जाते हैं। क्या करें, ऐसे करें, नहीं करें! ठीक होगा या नहीं ठीक होगा? एकदम स्पष्ट हो हाँ या ना। यह राइट है, यह रांग है - क्लीयर हो। तो प्रकृति आपके वर्ष मनाने के कारण तैयारी तो करेगी। अभी भी करा रही है लेकिन स्थापना के निमित्त बनी हुई आत्माओं को अभी किसी भी बातों में चाहे स्व प्रति, चाहे औरों के प्रति सोचने में समय नहीं लगाना चाहिए। सेकण्ड में क्लीयर टचिंग हो। बिन्दी लगाने में कितना टाइम लगता है? (सेकण्ड) तो जब प्रैक्टिकल लाइफ में बिन्दी लगाते हो तो सेकण्ड लगता है? कोई भी बात में बिन्दी लगाने में या बिन्दू

रूप स्थिति में स्थित होने में सेकण्ड लगता है? मानो कोई बात आपके सामने आ गई, उसको बिन्दी लगाने में सेकण्ड लगता है? पाण्डवों को सेकण्ड लगता है? (कभी-कभी) पाण्डवों को बिन्दी लगाने में टाइम लगता है? यह तो कह रही हैं सेकण्ड लगता है। शक्तियों में शक्ति है। (पाण्डव सच बोलते हैं) नहीं, दोनों सच्चे हैं, क्योंकि उन्हों की बिन्दी अभी लगती होगी, आपकी अभी नहीं लगती होगी, इसलिए फर्क हो गया। बाकी तो सब सच्चे हैं। सच्चे दिल वाले हैं। अच्छा।

हाल तो फुल है। (नीचे पाण्डव भवन में भी बैठे हैं) नीचे तो बैठे हैं लेकिन बापदादा के सामने हैं। जो देश-विदेश में इसी याद में बैठे हैं - बापदादा मधुबन में आ गये। अपने-अपने दूरदेशी दृष्टि, दूरबीन से देख रहे हैं। तो वह भी अभी बाबा के सामने आ रहे हैं कि कैसे दूर बैठे भी मन से मधुबन में हैं। आपके इस साकार वतन के यह साधन तो नीचे-ऊपर हो सकते हैं लेकिन यह आध्यात्मिक दूर दृष्टि, दूरादेशी दृष्टि कभी खराब नहीं हो सकती। तो बापदादा के सामने सभी चारों ओर के सेवाकेन्द्र के बच्चे दिखाई दे रहे हैं। अच्छा।

दीवाली मना ली? संगमयुग है ही मनाने का युग। चाहे अन्तर्मुखी हो, अतीन्द्रिय सुख की मौज़ मनाओ। चाहे सेवा में महादानी बन आत्माओं के प्रति महादान देते हुए मनाओ, चाहे आपस में रूहरूहान करो, डांस करो, सम्बन्ध-सम्पर्क से एक-दो की विशेषता को देखो, विशेषता की खुशबू लो, सदा मनाना ही मनाना है। गंवाने का समय समाप्त हो गया। गंवाने का युग तो नहीं है ना? अभी मनाने का और कमाने का युग है, जमा करने का युग है। तो बापदादा सदा हर बच्चे को यही देखता रहता, तो मना रहे हैं, किसी भी रूप में मनाना ही है क्योंकि संगम पर ही गंवाना और मनाना, दोनों का नॉलेज है। इसीलिए गंवा के फिर मनाना उसका महत्त्व होता है। अभी गंवाने को बिन्दी लगाओ। स्टॉप। गंवाना नहीं है। एक संकल्प भी गंवाना नहीं है। कमाने के समय पर गंवायेंगे तो कमायेंगे कब? फिर तो समय मिलना नहीं

है। चेक करो जो भी खजाने हैं, सबसे बड़ा खज़ाना कौन-सा है? संकल्प, समय, ज्ञान का खज़ाना, प्रत्यक्ष जीवन में आये। ज्ञान सुनाना और सुनना यह फर्स्ट स्टेज है लेकिन ज्ञान अर्थात् नॉलेज। नॉलेज को क्या कहते हो? नॉलेज लाइट है, माइट है, कहते हो ना! तो ज्ञान वा नॉलेज का अर्थ है, इस संकल्प में, बोल में, कर्म में लाइट और माइट है तब कहेंगे नॉलेजफुल।

कुमारियां नॉलेजफुल बनने वाली हैं ना? सिर्फ कोर्स कराने वाली नहीं बनना। भाषण करने वाली नहीं बनना। साथ-साथ नॉलेज की लाइट-माइट, संकल्प, बोल और कर्म में हो। कुमारियों से तो बापदादा का विशेष प्यार है। क्यों? अपने जीवन का फैंसला कर लिया। कर लिया है या करना है? अच्छी तरह से सोच लिया या वहाँ जाके सोचेंगी? पक्का सोच लिया है तो मुबारक हो। देखो इतने हैण्डस तैयार मिलेंगे आपको। जो कुमारियां ट्रेनिंग कर रही हैं वह हाथ उठाओ। कितनी संख्या है? (250) जो अभी सेवा में नहीं लगी हुई हैं, सेन्टर नहीं सम्भालती हैं, वह हाथ उठाओ। गिनती करो, आधे हैं। अच्छा इतने हैण्ड तो मिलेंगे ना! राइट हैण्ड या लेफ्ट हैण्ड? राइट हैण्ड बनेंगे ना! अच्छा है। कुमारियां हैं ना तो बापदादा कुमारियों को सेन्टर का घर भी देता और वर तो मिला ही है। हमेशा घर और वर दो चाहिए। कुमारियों को वर तो मिल गया, अभी घर भी मिलेगा, सेन्टर मिलेगा। कुमारों को भी मिलता है। कुमार समझते हम पीछे क्यों। पीछे नहीं आगे हो। कुमारों के बिना भी सेवा कहाँ चलती है। कोई भी सेन्टर पर देखो, अगर हार्ड वर्कर कुमार नहीं हों तो बहनें कुछ नहीं कर सकती। दोनों ही ज़रूरी हैं। इसीलिए पाण्डवों का भी नाम है तो शक्तियों का भी नाम है। दोनों का नाम है। अच्छा।

आप सबके देश-विदेश की मीटिंग्स का समाचार बापदादा के पास पहुँचा। इस वर्ष में चाहे देश में, चाहे विदेश में, देश में कान्फ्रेन्सेज़, स्नेह मिलन ज्यादा हुए हैं और विदेश में भिन्न-भिन्न प्रोजेक्ट चला रहे हैं। लेकिन बापदादा ने देखा कि सेवा में लगन भी है और सेवा की गति में तीव्रता भी है। दोनों हैं। समय अनुसार हर प्रोजेक्ट या कान्फ्रेन्स या स्नेह मिलन कहो, कोई

भी प्रोग्राम जो भी चलता है, उसमें सिर्फ समय प्रमाण टॉपिक को उसी रूप से रखना ज़रूरी है क्योंकि जिस समय किसको पानी की प्यास है, और आप उसको ४८ प्रकार का भोजन दे दो तो वह स्वीकार करेगा? तो प्रोजेक्ट कोई भी है, टापिक कोई भी है लेकिन इस समय सर्व आत्माओं को चाहिए - शान्ति और स्नेह। शान्ति के भी प्यासी हैं तो स्नेह के भी प्यासी हैं। तो अच्छी सेवा कर रहे हैं, जो भी प्लैन बनाये हैं, वह अच्छे बनाये हैं, जो चल रहे हैं वह अच्छे चल रहे हैं। रिज़ल्ट भी है और हिम्मत भी है। इसलिए बापदादा सेवा के समाचार सुनते हर्षित होते हैं। और गीत कौन-सा गाते हैं? बापदादा गीत गाते हैं, कौन-सा? वाह बच्चे वाह! और इस समय प्रोग्राम्स तो चलने ही हैं, प्रोग्राम्स को नहीं रोकना है। समय के सरकमस्टांश प्रोग्राम को रोकते हैं तो रोकें। लेकिन आप नहीं प्रोग्राम्स रोक सकते हो। अच्छा, अगर मानो कोई प्रोग्राम्स रखते हो और समस्या बदल जाती है तो प्रोग्राम में आने वाले भी समझते हैं, जाने वाले भी समझते हैं। आप क्यों ना करो। दाता के बच्चे हैं ना, तो आप देने में, प्रोग्राम करने में ना नहीं कर सकते हो। आओ, भले आओ, खुशी से आओ। स्वागत करेंगे। जब सरकमस्टांश होंगे तो सरकमस्टांश ही उन्हों को रोंकें, आप नहीं रोको। अभी भी देखो अमेरिका के पीस विलेज में, हंगामा होते हुए भी अमेरिका में भी प्रोग्राम चल रहे हैं ना और बहुत अच्छे चले हैं। रुके हैं? नहीं रुके हैं ना! अभी ७ तारीख तक जो भी प्रोग्राम आपने बनाये, वह कोई रुका है! बाम्ब्स भी चल रहे हैं, चलने दो। लड़ाई तो चल रही है ना! सुनते रहो। अच्छा है, सुनने से आप सब ब्राह्मणों के जो विशेष संस्कार वा स्वभाव है - रहमदिल, मर्सीफुल के वह इमर्ज होंगे और होना ही ज़रूरी है। इस समय आप हर एक को, आत्माओं प्रति रहमदिल और दाता बन कुछ न कुछ देना ही है, चाहे मनसा सेवा द्वारा दो, चाहे शुभ भावना से दो, श्रेष्ठ सकाश देने की वृत्ति से दो, चाहे आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न बोल से दो, चाहे अपने स्नेह सम्पन्न सम्बन्ध-सम्पर्क से दो लेकिन कोई भी आत्मा वंचित नहीं रहे। दाता बनो, रहमदिल बनो। चिल्ला रहे हैं। बाप के आगे

अपनी-अपनी भाषा में चिल्ला रहे हैं - शान्ति दो, स्नेह दो, दिल का प्यार दो, सुख की किरणें दिखाओ। तो बाप कैसे देंगे? आप बच्चों द्वारा ही देंगे ना! बाप के आप सभी राइट हैण्ड हो। कोई को कुछ भी देना होता है तो हैण्ड द्वारा देते हैं ना! तो आप सभी बाप के राइट हैण्ड हो ना! पाण्डव राइट हैण्ड हो? आप राइट हैण्डस का यादगार है। पता है कौन-सा यादगार है? विराट रूप का चित्र देखा है, तो उसमें कितने हाथ दिखाते हैं? तो आप राइट हैण्ड का चित्र है ना! कुमारियां, उसमें आप लोगों का चित्र है ना? तो अभी बाप राइट हैण्डस द्वारा आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली तो दिलायेगा ना! बिचारों को अंचली भी नहीं देंगे तो कितने तड़फेंगे! अभी सभी हद की बातों से ऊँचे हो जाओ। हद की बातों में, हद के संस्कारों में समय नहीं गंवाओ। बापदादा आज भी सभी बच्चों को, चाहे यहाँ बैठे हैं, चाहे सेन्टर्स पर बैठे हैं, चाहे देश में हैं, चाहे विदेश में हैं लेकिन रहमदिल भावना से इशारा दे रहे हैं - बापदादा हर बच्चे की हद की बातें, हद के स्वभाव-संस्कार, नटखट वा चतुराई के संस्कार, अलबेलेपन के संस्कार बहुत समय से देख रहे हैं, कई बच्चे समझते हैं सब चल रहा है, कौन देखता है, कौन जानता है लेकिन अभी तक बापदादा रहमदिल है, इसलिए देखते हुए भी, सुनते हुए भी रहम कर रहा है। लेकिन बापदादा पूछते हैं आखिर भी रहमदिल कब तक? कब तक? क्या और टाइम चाहिए? बाप से समय भी पूछता है, आखिर कब तक? प्रकृति भी पूछती है। जवाब दो आप। जवाब दो। अभी तो सिर्फ बाप का रूप चल रहा है, शिक्षक और सतगुरु तो है ही। लेकिन बाप का रूप चल रहा है। क्षमा के सागर का पार्ट चल रहा है। लेकिन धर्मराज़ का पार्ट चला तो? क्या करेंगे? बापदादा यही चाहते हैं कि धर्मराज़ के पार्ट में भी वाह! बच्चे वाह! का आवाज कानों में गूंजे। फिर बाप को उलहना नहीं देना। बाबा, आपने सुनाया नहीं, हम तैयार हो जाते थे ना! इसलिए अभी हद की छोटी-छोटी बातों में, स्वभाव में, संस्कारों में समय नहीं गंवाओ। चल रहे हैं, चलता है, नहीं, जमा होता जाता है। दुगुना, तीगुना, सौगुना जमा होता जाता है, चलता

है नहीं। इसलिए इस दृढ़ संकल्प का दिल में दीप जगाओ। हद से बेहद में वृत्ति, दृष्टि, कृति बनानी ही है। इसीलिए बापदादा कहते हैं बनानी पड़ेगी। आज यह कह रहे हैं बनानी पड़ेगी फिर क्या कहेंगे ? टू लेट। समय को देखो, सेवा को देखो, सेवा बढ़ रही है, समय आगे दौड़ रहा है। लेकिन स्वयं हद में हैं या बेहद में हैं? हद की बातों के पीछे आप नहीं दौड़ो। तो बेहद की वृत्ति, स्वमान की स्थिति आपके पीछे दौड़ेगी।

बापदादा इस वर्ष में जो इस समय तक किया, उसमें सन्तुष्ट हैं, आफरीन भी देते हैं। लेकिन अभी सेवा में अनुभूति कराना, शमा के ऊपर परवाने बनाना, चाहे सहयोगी बनाओ, चाहे साथी बनाओ, कुछ बनें। अनुभूति की खान खोलो। अच्छा है - यहाँ तक ठीक है। लेकिन सिर्फ चक्कर लगाने वाले परवाने नहीं बनें। पक्के परवाने बनेंगे - अनुभूति का कोर्स कराने से। इतने तक अनुभूति होती है - बहुत अच्छा है, स्वर्ग है। यही यथार्थ ज्ञान है, नॉलेज है, इतना सेवा का रिज़ल्ट अच्छा है। अभी अनुभूति स्वरूप बन अनुभव कराओ। अनुभव करने वाले अर्थात् बाप से डायरेक्ट सम्बन्ध रखने वाले। ऐसे अनुभवी परवाने तैयार करो। सहयोगी बनाये हैं, उसकी मुबारक है और बनाओ। यह स्थान है, यहाँ से ही प्राप्ति हो सकती है, इतने तक भी मानते हैं लेकिन बाप के साथ ज़रा-सा कनेक्शन तो जोड़ो, जो शमा के पीछे ही भागते रहें। तो इस वर्ष विशेष बापदादा सेवा में अनुभूति कराने का कोर्स कराने चाहते हैं। इससे ही साक्षात्कार भी होंगे और साक्षात बाप प्रत्यक्ष होंगे। सुना, क्या करना है? प्लैन मिला?

अभी इस वर्ष की रिज़ल्ट देखेंगे, कितनों को बाप शमा के परवाने बनाये। चलो चक्कर तो लगायें, स्वाहा नहीं हों, बाबा-बाबा का चक्कर तो लगायें। अच्छा। कुमारियां ठीक है ना! अच्छा।

चारों ओर के बच्चों के पत्र भी बापदादा को मिलते रहते हैं। वह बच्चे लिखना शुरू करते हैं और बाप के पास पहले ही पहुँच जाता है। दिल का आवाज है ना! यह तो हाथों से लिखते हैं, लेकिन पहले दिल का आवाज

दिलाराम के पास पहुँच जाता है। यह भी अच्छा है, बापदादा की याद तो आती है ना! समाचार लिखने के टाइम कितनी खुशी होती है। तो बापदादा जिन्होंने भी पत्र, ई-मेल, किसी भी साधन द्वारा याद-प्यार या समाचार भेजा है उन सभी को, एक-एक को नाम सहित स्पेशल याद-प्यार और मुबारक दे रहे हैं। आप सब तो सम्मुख दे रहे हो ना! उन्हों को देना पड़ेगा ना। तो सभी को, चारों ओर के बच्चों को दीवाली मुबारक भी दे रहे हैं, कौन-सी दीवाली मनानी है वह तो सुना ही दिया। अच्छा।

चारों ओर के अति प्यारे बापदादा के दिलतख्त नशीन श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा हद के स्वभाव, संस्कार परिवर्तन करने वाले बेहद की परिवर्तक आत्माओं को, सदा एक सेकण्ड, एक संकल्प भी व्यर्थ न गंवाने वाले, जमा करने वाले तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को, सदा रहमदिल बन, दाता बन हर आत्मा को, चाहे ब्राह्मण आत्मा, चाहे प्यासी आत्माओं को कुछ-न-कुछ अंचली देने वाले, सकाश देने वाले, ऐसे बड़ी दिल रखने वाले बच्चों को बापदादा का बहुत-बहुत-बहुत-बहुत याद-प्यार और नमस्ते।

25-11-2001

दुआयें दो-दुआयें लो, कारण का निवारण कर, समस्याओं का समाधान करो

आज प्यार के सागर बापदादा अपने प्यार स्वरूप बच्चों के प्यार की डोरी में खींचकर मिलन मनाने आये हैं। बच्चों ने बुलाया और हज़ूर हाज़िर हो गये। अव्यक्ति मिलन तो सदा मनाते रहते हैं, फिर भी साकार में बुलाया तो बापदादा बच्चों के विशाल मेले में पहुँच गये हैं। बापदादा को बच्चों का स्नेह, बच्चों का प्यार देख खुशी होती है और दिल ही दिल में चारों ओर के बच्चों के लिए गीत गाते हैं -''वाह! श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चे वाह! भगवान के प्यार के पात्र आत्मायें वाह!'' इतना बड़ा भाग्य और इतना साधारण रूप में सहज प्राप्त होना है, यह स्वप्न में भी नहीं सोचा था। लेकिन आज साकार रूप में भाग्य को देख रहे हो। बापदादा देख रहे हैं कि दूर बैठे भी बच्चे मिलन मेला मना रहे हैं। बापदादा उन्हों को देख मिलन मना रहे हैं। मैजारिटी माताओं को गोल्डन चांस मिला है और बापदादा को भी विशेष शक्ति सेना को देख खुशी होती है कि चार दीवारों में रहने वाली मातायें बाप द्वारा विश्व कल्याणकारी बन, विश्व की राज्य अधिकारी बन गई हैं। बन गये हैं या बन रहे हैं, क्या कहेंगे? बन गये हैं ना! विश्व के राज्य का माखन का गोला आप सबके हाथ में है ना! बापदादा ने देखा कि जो भी मातायें मधुबन में पहुँची हैं उन्हों को एक बात की बहुत खुशी है, कौन-सी खुशी है? कि बापदादा ने हम माताओं को विशेष बुलाया है। तो माताओं से विशेष प्यार है ना! नशे से कहती हैं - बापदादा ने बुलाया है। हमको बुलाया है, हम क्यों नहीं आयेंगे! बापदादा भी सबकी रूहरूहान सुनते रहते हैं, यह खुशी का नशा देखते रहते हैं। वैसे तो पाण्डव भी कम नहीं हैं, पाण्डवों के बिना भी विश्व के कार्य की समाप्ति नहीं हो सकती। लेकिन आज विशेष माताओं को पाण्डवों ने भी आगे रखा है।

बापदादा सभी बच्चों को बहुत सहज पुरुषार्थ की विधि सुना रहे हैं। माताओं को सहज चाहिए ना! तो बापदादा सब माताओं, बच्चों को कहते हैं, सबसे सहज पुरुषार्थ का साधन है - ''सिर्फ चलते-फिरते सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हर एक आत्मा को दिल से शुभ भावना की दुआयें दो और दूसरों से भी दुआयें लो।'' चाहे आपको कोई कुछ भी दे, बद्दुआ भी दे लेकिन आप उस बद्दुआ को भी अपने शुभ भावना की शक्ति से दुआ में परिवर्तन कर दो। आप द्वारा हर आत्मा को दुआ अनुभव हो। उस समय अनुभव करो जो बद्दुआ दे रहा है वह इस समय कोई-न-कोई विकार के वशीभूत है। वशीभूत आत्मा के प्रति वा परवश आत्मा के प्रति कभी भी बद्दुआ नहीं निकलेगी। उसके प्रति सदा सहयोग देने की दुआ निकलेगी। सिर्फ एक ही बात याद रखो कि हमें निरन्तर एक ही कार्य करना है - ''संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, कर्मणा द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा दुआ देना और दुआ लेना। अगर किसी आत्मा के प्रति कोई भी व्यर्थ संकल्प वा निगेटिव संकल्प आवे भी तो यह याद रखो मेरा कर्त्तव्य क्या है! जैसे कहाँ आग लग रही हो और आग बुझाने वाले होते हैं तो वह आग को देख जल डालने का अपना कार्य भूलते नहीं, उन्हों को याद रहता है कि हम जल डालने वाले हैं, आग बुझाने वाले हैं, ऐसे अगर कोई किसी भी विकार की आग वश कोई भी ऐसा कार्य करता है जो आपको अच्छा नहीं लगता है तो आप अपना कर्त्तव्य याद रखो कि मेरा कर्त्तव्य है - किसी भी प्रकार की आग बुझाने का, दुआ देने का। शुभ भावना की भावना का सहयोग देने का। बस एक अक्षर याद रखो, माताओं को सहज एक शब्द याद रखना है -''दुआ देना, दुआ लेना''। मातायें यह कर सकती हो? (सभी मातायें हाथ उठा रही हैं) कर सकती हो या करना ही है? पाण्डव कर सकते हैं? पाण्डव कहते हैं - करना ही है। गाया हुआ है पाण्डव अर्थात् सदा विजयी और शक्तियां सदा विश्व कल्याणकारी नाम से प्रसिद्ध हैं।

बापदादा को चारों ओर के बच्चों से अभी तक एक आश रही हुई है।

बतायें वह कौन-सी आश है? जान तो गये हो! टीचर्स जान गई हो ना! सभी बच्चे यथा शक्ति पुरुषार्थ तो कर रहे हो। बापदादा पुरुषार्थ देख करके मुस्कराते हैं। लेकिन एक आश यह है कि पुरुषार्थ में अभी तीव्रगति चाहिए। पुरुषार्थ है लेकिन अभी तीव्रगति चाहिए। इसकी विधि है - 'कारण' शब्द समाप्त हो जाए और निवारण स्वरूप सदा बन जायें। कारण तो समय अनुसार बनते ही हैं और बनते रहेंगे। लेकिन आप सब निवारण स्वरूप बनो क्योंकि आप सभी बच्चों को विश्व के निवारण कर सभी को, मैजारिटी आत्माओं को निर्वाणधाम में भेजना है। तो जब स्वयं को निवारण स्वरूप बनाओ तब विश्व की आत्माओं को निवारण स्वरूप द्वारा सब समस्याओं का निवारण कर निर्वाणधाम में भेज सकेंगे। अभी विश्व की आत्मायें मुक्ति चाहती हैं तो बाप द्वारा मुक्ति का वर्सा दिलाने वाले निमित्त आप हो। तो निमित्त आत्मायें पहले स्वयं को भिन्न-भिन्न समस्याओं के कारण को निवारण कर मुक्त बनायेंगे तब विश्व को मुक्ति का वर्सा दिला सकेंगे। तो मुक्त हैं? किसी भी प्रकार की समस्या का कारण आगे नहीं आये, यह कारण है, यह कारण है, यह कारण है.... जब कोई कारण सामने बनता है तो कारण का सेकण्ड में निवारण सोचो, यह सोचो कि जब विश्व का निवारण करने वाली हूँ तो क्या स्वयं की छोटी-छोटी समस्याओं का स्वयं निवारण नहीं कर सकती! नहीं कर सकता! अभी तो आत्माओं की क्यू आपके सामने आयेगी ''हे मुक्तिदाता मुक्ति दो'' क्योंकि मुक्ति दाता के डायरेक्ट बच्चे हो, अधिकारी बच्चे हो। मास्टर मुक्तिदाता तो हो ना। लेकिन क्यू के आगे आप मास्टर मुक्ति दाताओं के तरफ से एक रुकावट का दरवाजा बन्द है। क्यू तैयार है लेकिन कौन-सा दरवाजा बन्द है? पुरुषार्थ में कमजोर पुरुषार्थ का, एक शब्द का दरवाजा है, वह है 'क्यों'। क्वेश्चन मार्क,(?) क्यों, यह क्यों शब्द अभी क्यू को सामने नहीं लाता। तो बापदादा अभी देश-विदेश के सभी बच्चों को यह स्मृति दिला रहे हैं कि आप समस्याओं का दरवाजा ''क्यों'', इसको समाप्त करो। कर सकते हैं? टीचर्स कर सकती

हैं? पाण्डव कर सकते हैं? सभी हाथ उठा रहे हैं या कोई-कोई? फारेनर्स तो एवररेडी हैं ना! हाँ या ना? अगर हाँ तो सीधा हाथ उठाओ। कोई ऐसे-ऐसे कर रहे हैं। अभी कोई भी सेवाकेन्द्र पर समस्या का नाम-निशान न हो। ऐसे हो सकता है? हर एक समझे मुझे करना है। टीचर्स समझें मुझे करना है, स्टूडेन्ट समझें मुझे करना है, प्रवृत्ति वाले समझें मुझे करना है, मधुबन वाले समझें हमें करना है। कर सकते हैं ना? समस्या शब्द ही समाप्त हो जाये, कारण खत्म होके निवारण आ जाए, यह हो सकता है! क्या नहीं हो सकता है, जब पहले-पहले स्थापना के समय में सभी आने वाले बच्चों ने क्या प्रॉमिस किया था और करके दिखाया! असम्भव को सम्भव करके दिखाया। दिखाया ना? तो अभी कितने साल हो गये? स्थापना को कितने वर्ष हो गये? (६५) तो इतने वर्षो में असम्भव से सम्भव नहीं हो सकता है? हो सकता है? मुख्य टीचर्स हाथ उठाओ। पंजाब नहीं उठा रहा है, शक्य है क्या? थोड़ा सोच रहे हैं, सोचो नहीं। करना ही है। औरों का नहीं सोचो, हर एक अपना सोचे, अपना तो सोच सकते हो ना? दूसरे को छोड़ो, अपना सोचकर अपने लिए तो हिम्मत रख सकते हो ना? कि नहीं? फारेनर्स रख सकते हैं? (हाथ उठाया) मुबारक हो। अच्छा, अभी जो समझते हैं, वह दिल से हाथ उठाना, दिखावे से नहीं। ऐसे नहीं सब उठा रहे हैं तो मैं भी उठा लूं। अगर दिल से दृढ़ संकल्प करेंगे कि कारण को समाप्त कर निवारण स्वरूप बनना ही है, कुछ भी हो, सहन करना पड़े, माया का सामना करने पड़े, एक-दो के सम्बन्ध-सम्पर्क में सहन भी करना पड़े, मुझे समस्या नहीं बनना है। हो सकता है? अगर दृढ़ निश्चय है तो वह पीछे से लेकर आगे तक हाथ उठाओ। (बापदादा ने सभी से हाथ उठवाया और सारा दृश्य टी.वी. पर देखा) अच्छा है ना एक्सरसाइज़ हो गई! हाथ इसीलिए उठाते हैं, जैसे अभी एक दो को देख करके हाथ उठाने में उमंग आता है ना! ऐसे ही जब भी कोई समस्या आवे तो सामने बापदादा को देखना, दिल से कहना बाबा, और बाबा हाजिर हो जायेगा, समस्या खत्म हो जायेगी। समस्या सामने से हट जायेगी और

बापदादा सामने हाजिर हो जायेगा। ''मास्टर सर्वशक्तिवान'' अपना यह टाइटल हर समय याद करो। नहीं तो बापदादा अभी याद-प्यार में मास्टर सर्वशक्तिवान न कहकर सर्वशक्तिवान कहे? शक्तिवान बच्चों को याद-प्यार, अच्छा लगेगा? मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान क्या नहीं कर सकते हैं! सिर्फ अपना टाइटल और कर्त्तव्य याद रखो। टाइटल है ''मास्टर सर्वशक्तिवान'' और कर्त्तव्य है ''विश्व-कल्याणकारी''। तो सदा अपना टाइटल और कर्त्तव्य याद करने से शक्तियां इमर्ज हो जायेंगी। मास्टर बनो, शक्तियों के भी मास्टर बनो, आर्डर करो, हर शक्ति को समय पर आर्डर करो। वैसे शक्तियां धारण करते भी हो, हैं भी लेकिन सिर्फ कमी यह हो जाती है कि समय पर यूज़ नहीं करने आती। समय बीतने के बाद याद आता है, ऐसे करते तो बहुत अच्छा होता। अब अभ्यास करो जो शक्तियां समाई हुई हैं, उसको समय पर यूज़ करो। जैसे इन कर्मेन्द्रियों को आर्डर से चलाते हो ना, हाथ को, पांव को चलाते हो ना! ऐसे हर शक्ति को आर्डर से चलाओ। कार्य में लगाओ। समा के रखते हो, कार्य में कम लगाते हो। समय पर कार्य में लगाने से शक्ति अपना कार्य ज़रूर करेगी। और खुश रहो, कभी-कभी कोई बच्चों का चेहरा बड़ा सोच-विचार में, थोड़ा ज़्यादा गम्भीर दिखाई देते हैं। खुश रहो, नाचो-गाओ, आपकी ब्राह्मण जीवन है ही खुशी में नाचने की और अपने भाग्य और भगवान के गीत गाने की। तो नाचने-गाने वाले जो होते हैं ना वह ऐसा गम्भीर होके नाचे तो कहेंगे नाचना नहीं आता। गम्भीरता अच्छी है लेकिन टू मच गम्भीरता, थोड़ा-सा सोच-विचार का लगता है।

बापदादा ने तो अभी सुना कि देहली का उद्घाटन हो रहा है (६ दिसम्बर को देहली में ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर का उद्घाटन रखा गया है) लेकिन बापदादा अभी कौन-सा उद्घाटन देखने चाहता है? वह डेट तो फिक्स करो, यह छोटे-मोटे उद्घाटन तो हो ही जायेंगे। लेकिन बापदादा उद्घाटन चाहते हैं ''सब विश्व की स्टेज पर बाप समान साक्षात फरिश्ते सामने आ जाएं और

पर्दा खुल जाए।'' ऐसा उद्घाटन आप सबको भी अच्छा लगता है ना! रूहरूहान में भी सभी कहते रहते हैं, बाप भी सुनते रहते हैं, बस अभी यही इच्छा है - बाप को प्रत्यक्ष करें और बाप की इच्छा है कि पहले बच्चे प्रत्यक्ष हों। बाप बच्चों के साथ प्रत्यक्ष होगा। अकेला नहीं होगा। तो बापदादा वह उद्घाटन देखने चाहते हैं। उमंग भी अच्छा है, जब रूहरूहान करते हैं तो रूहरूहान के समय सबके उमंग बहुत अच्छे होते हैं। लेकिन जब कर्मयोगी बनते हैं तो थोड़ा फर्क पड़ जाता। तो मातायें क्या करेंगी? बड़ा झुण्ड है माताओं का। और माताओं को देख बापदादा को बहुत खुशी होती है। किसने भी माताओं को इतना आगे नहीं लाया है लेकिन बापदादा माताओं को आगे बढ़ते देख खुश होते हैं। माताओं का विशेष यह संकल्प है कि जो किसी ने नहीं करके दिखाया वह हम मातायें बाप के साथ करके दिखायेंगे। करके दिखायेंगी? अभी एक हाथ की ताली बजाओ। मातायें, सब कुछ कर सकती हैं। माताओं में उमंग अच्छा है। कुछ भी नहीं समझें लेकिन यह तो समझ लिया है ना कि मैं बाबा की हूँ, बाबा मेरा है। यह तो समझ लिया है ना! मेरा बाबा तो सब कहते हैं ना? बस दिल से यही गीत गाते रहो - मेरा बाबा, मेरा बाबा, मेरा बाबा....

अच्छा - टीचर्स हाथ उठाओ। टीचर्स बहुत आई हैं (ᑎᘔDD टीचर्स आई हैं) टीचर्स माताओं को अच्छी तरह से ले आई ना! यह भी अपने पुण्य की पूंजी जमा कर ली। आपको फायदा हुआ ना। आपके पुण्य का खाता बढ़ गया। अच्छा - डबल फारेनर्स हाथ उठाओ। डबल फारेनर्स की स्पेशल एक विशेषता बापदादा ने देखी है। कोई ऐसा ग्रुप नहीं होता जिसमें डबल फारेनर्स नहीं हों। सर्वव्यापी हो गये हैं। मधुबन निवासी और बापदादा आप डबल फारेनर्स को देखकर खास खुश होते हैं इसलिए भले आओ। अच्छा। इसमें जो सारी सभा में कुमारियां हैं, वह हाथ उठाओ। बहुत कुमारियां हैं। कुमारियां तो कमाल करने वाली हैं ना? कुमारियों को एकस्ट्रा लक मिला हुआ है। यह पाण्डव हंसते हैं, उलहना देते हैं कि कुमारी अगर सेन्टर पर आती तो दीदी

बन जाती और पाण्डव सेन्टर पर आते तो दादा नहीं बनते हैं, तो देखो कुमारियों को विशेष यह एक लिफ्ट है, सरेन्डर मन से हुई और बापदादा का मुरली बजाने का तख्त मिल जाता है। यह तख्त कम नहीं है। पाण्डव भी मुरली सुनाते हैं लेकिन मैजारिटी बहिनें। तो यह कुमारियों का लक है। कुमारी अपनी गिफ्ट जितनी चाहें उतनी ले सकती हैं। अच्छा - कुमार कितने हैं? कुमार भी कम नहीं हैं। कुमार अभी सुकुमार बन गये हैं। और कुमारों के बिना सेन्टर नहीं चल सकता है। टीचर्स बताओ कुमारों के बिना सेन्टर चल सकता है? नहीं चल सकता। कुमारों की एक विशेषता बहुत अच्छी है, कुमार जो दृढ़ संकल्प करें वह प्रैक्टिकल में ला सकते हैं क्योंकि सुकुमार उल्टा तो करेंगे नहीं, सुल्टा ही करेंगे। तो कुमारों में दृढ़ संकल्प की गिफ्ट है, जो चाहते हैं वह कर सकते हैं - यह गिफ्ट है। बाकी यूज़ करना आपके हाथ में है। गवर्मेन्ट भी चाहती है कि सुकुमारों का ग्रुप बड़े ते बड़ा बने, कुमारों का नहीं। अभी बापदादा का यह इशारा प्रैक्टिकल में नहीं लाया है, सारे विश्व के कुमारों का ग्रुप मधुबन में इक्ट्ठा हो और प्राइम मिनिस्टर, मिनिस्टर यहाँ आवें। आ सकते हैं। अच्छा है। कुमार अपना जलवा दिखा सकते हैं। कुमारों का ऐसा ग्रुप साथ ले जाओ, कोई कहाँ का, कोई कहाँ का.. और डायरेक्ट निमन्त्रण देवें, सब देशों के हों और निमन्त्रण देवें, डेट फिक्स करें। कुमारों में तो बापदादा की बहुत-बहुत-बहुत शुभ उम्मीदें हैं और पूर्ण होनी ही हैं। अच्छा।

(भारत के कोने-कोने से दो मास माताओं के अभियान निकले) तब तो मातायें इतनी आई हैं, पौना हाल तो मातायें हैं। (८५ हज़ार मातायें आई हैं) सारे हाल की शोभा मातायें हैं। अच्छा, मातायें या कन्यायें जो अभियान में गई थीं, वह उठो। थोड़े आये हैं। उन्हों को याद मिल जायेगी। बापदादा उन्हों को भी टी.वी में देख रहे हैं। उन सबको भी मुबारक है। अच्छी यात्रा निकाली और चारों ओर सेवा भी बहुत अच्छी हुई, इसलिए बहुत-बहुत मुबारक हो। प्रवृत्ति वाले अधरकुमार हाथ उठाओ। अच्छा, अधरकुमारों की विशेषता

क्या है? अधरकुमारों ने विश्व के आत्माओं की एक विशेष भ्रांति मिटाई है, लोग समझते थे कि ब्राह्मण बनना अर्थात् घर गृहस्थ छोड़ना लेकिन जब से अधरकुमार और अधर कुमारियों को देखते हैं तो वह प्रेरणा लेते हैं कि हम भी ब्राह्मण बन सकते हैं इसलिए पहली जो भ्रांतियां थी, ब्रह्माकुमारियों के पास कोई जावे नहीं, तो अधर कुमारों ने सेवा की वृद्धि का दरवाजा खोला है। (सभी ने तालियां बजाई) भले खूब ताली बजाओ। अधरकुमार भी कम नहीं हैं। हर एक वर्ग का बापदादा के पास ब्राह्मण जीवन में महत्त्व है।

अच्छा - छोटे बच्चे कितने आये हैं। छोटे बच्चों को देखकर सब खुश होते हैं क्योंकि छोटेपन में कितना बड़ा भाग्य पा लिया है। हर एक छोटा बच्चा फलक से कहता है मैं ब्रह्माकुमार हूँ। और छोटे बच्चे अनुभव बहुत अच्छा सुनाते हैं, हम भगवान से मिलते हैं, बातें करते हैं। तो छोटे बच्चों की बातें सबको बहुत अच्छी लगती हैं इसलिए छोटे नहीं हो लेकिन आप छोटे बच्चे भी सेवा करने निमित्त बहुत अच्छे हो। इसलिए बापदादा छोटे बच्चों को बहुत-बहुत, बहुत-बहुत प्यार करते हैं। अच्छा।

सेवाधारियों से – यह सिस्टम बहुत अच्छी बनाई है, हर एक को सेवा का, खाता जमा करने का चांस मिलता है। सेन्टर पर सेवा करते हो, वह तो करते ही हो। लेकिन यज्ञ की सेवा का विशेष महत्त्व है, तो अभी यह महत्त्व पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर को मिला है, बहुत बड़ा ज़ोन लिया है। अचल, प्रेम, राज यह जो भी बैठी हैं, पंजाब की मुख्य टीचर्स उठो। फर्स्ट और सेकण्ड के बिना गति नहीं है। अच्छा, बापदादा को तो पंजाब को देख करके पंजाब की शेरनी (दादी चन्द्रमणि) याद आ रही है। पंजाब को भी याद आती है। तो बहुत अच्छा, मेहनत ज्यादा करनी पड़ी ना। पांच ज़ोन मिलकर पंजाब कहलाते हैं, पंजाब में पांच नदियां भी मशहूर हैं। तो आपको बड़ा ग्रुप मिला है और पहला ग्रुप मिला है, तो पहला नम्बर ले लिया ना। अच्छा और जो पंजाब के सेवाधारी आये हैं वह उठो। बहुत सेवाधारी हैं। बहुत अच्छा सेवा की मुबारक हो, मुबारक हो। यज्ञ सेवा का महत्त्व क्यों है?

वैसे तो सेन्टर भी यज्ञ ही है ना! लेकिन मधुबन को महायज्ञ कहा जाता है। हैं तो सभी यज्ञ, महायज्ञ का महान सेवा का प्रसाद मिलता है क्योंकि महायज्ञ में कितनी महान आत्मायें आती हैं। तो इतनी महान आत्माओं की सेवा का चांस मिलता है इसलिए महायज्ञ की सेवा का महत्त्व है। पंजाब ज़ोन ने एक तो कमाल की है। बताओ, कौन-सी कमाल की है? याद आता है, क्या कमाल की है? बोलो। आतंकवाद खत्म कर दिया। छोटा-मोटा तो छोड़ो। वह तो जहाँ-तहाँ है लेकिन जितना ही आतंकवाद का चक्कर चला, उतना चक्कर को छोटा कर दिया। तो यह भी अच्छी कमाल है, आपके कोने-कोने की तपस्या की। अभी डर तो नहीं है ना! बाकी तो विश्व में ही आतंकवाद है। फारेन में भी है। अच्छा फारेन वाले, फारेन की विशेषता है - जो भी बाप ने कहा वह फौरन करने वाले। फारेन माना फौरन। बाप ने कहा और डबल फारेनर्स ने फौरन किया। यह है फारेन की निशानी। ठीक है ना! अच्छा - अभी कोई रह गया? सब आ गये। सभी सोचते हैं हमसे बापदादा मिला ही नहीं। अब तो सबसे मिल लिया ना। एक स्थान पर बैठकर सबसे मिल गये।

अच्छा - अभी एक सेकण्ड बापदादा देता है, सब अलर्ट होकर बैठो। बापदादा से सभी का प्यार ८DD परसेन्ट है ना! प्यार तो परसेन्ट में नहीं है ना। ८DD परसेन्ट है? तो ८DD परसेन्ट प्यार का रिटर्न देने के लिए तैयार हो? ८DD परसेन्ट प्यार है ना। जिसका थोड़ा सा कम हो, वह हाथ उठा लो। पीछे बच जायेंगे। अगर कम हो तो हाथ उठा लो। ८DD परसेन्ट प्यार नहीं है तो वो हाथ उठाओ। प्यार की बात कर रहे हैं। (एक-दो ने हाथ उठाया) अच्छा प्यार नहीं है, कोई हर्जा नहीं, हो जायेगा। जायेंगे कहाँ, प्यार तो करना ही पड़ेगा। अच्छा - अभी सभी अलर्ट होकर बैठे हैं ना! अभी सभी प्यार के रिटर्न में एक सेकण्ड बाप के सामने अन्तर्मुखी हो अपने आपसे दिल से, दिल में संकल्प कर सकते हो कि अब हम स्वयं के प्रति वा औरों के प्रति समस्या नहीं बनेंगे। यह दृढ़ संकल्प प्यार के रिटर्न में कर सकते हो? जो समझते हैं - कुछ भी हो जाए, अगर कुछ हो भी गया तो सेकण्ड में स्वयं को

परिवर्तन कर देंगे, वह दिल में संकल्प दृढ़ करें। जो कर सकता है दृढ़ संकल्प, बापदादा मदद देंगे लेकिन मदद लेने की विधि है दृढ़ संकल्प की स्मृति। बापदादा के सामने संकल्प लिया है, यह स्मृति की विधि आपको सहयोग देगी। तो कर सकते हो? कांध हिलाओ। देखो, संकल्प से क्या नहीं हो सकता है, घबराओ नहीं, बापदादा की एकस्ट्रा मदद ज़रूर मिलेगी।

बापदादा ने तो सिर्फ अपना शुभ संकल्प सुनाया। अभी करना बच्चों का काम है। जो जितना करता है उतना उसका खाता जमा होता है। बापदादा समझते हैं कि सब बच्चों का खाता सारे कल्प के लिए इतना जमा हो जाए जो राज्य भी करें और आधा कल्प पूज्य भी बनें। पूज्य बनने का खाता और राज्य अधिकारी बनने का खाता दोनों ही जमा हो जायें। किसी भी बच्चे का खाता कम नहीं हो। सब भरपूर हों। सम्पन्न हों, सम्पूर्ण हों।

अच्छा - आज साइन्स के साधन से दूर-दूर में भी बच्चे सुन रहे हैं, देख रहे हैं। (आज बापदादा की मुरली भारत में टी.वी. पर तथा विदेश में इन्टरनेट द्वारा सभी सुन वा देख रहे हैं) तो उन सभी बच्चों को बापदादा भी देख रहे हैं।

अच्छा, सभी बच्चों को बापदादा मिलन मेले की मुबारक दे रहे हैं। चाहे कोई ने पत्र द्वारा मिलन मेला मनाया, चाहे कार्ड द्वारा मिलन मेला मनाया, चाहे सम्मुख मिलन मेला मना रहे हैं। चाहे अपने स्थान पर बैठे मिलन मेला मना रहे हैं। चारों ओर का एक-एक बच्चा बाप का अति प्यारा है। बापदादा एक-एक बच्चे को देख बहुत हर्षित होते हैं। बच्चे कहते हैं बाप का प्यार गिनती करने में नहीं आता, वर्णन करने में नहीं आता तो बाप भी कहते हैं कि सिकीलधे, लाडले, विशेष आत्मायें बच्चों का प्यार भी वर्णन करने में नहीं आता। ऐसे बच्चे भी सारे कल्प में किसको नहीं मिलेंगे।

ऐसे सर्व तीव्र पुरुषार्थी श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बाप के प्यार का रिटर्न करने वाले हिम्मतवान बच्चों को, सदा अपने विशेषताओं द्वारा औरों को भी विशेष आत्मा बनाने वाले पुण्य आत्मायें बच्चों को, सदा समस्या समाधान

स्वरूप विशेष आगे उड़ने वाले बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

विदाई के समय

आज विशेष जो मधुबन में ऊपर सिक्यूरेटी के कार्य में बिजी हैं, वह बापदादा के सामने आ रहे हैं। यज्ञ की रखवाली करने वालों की बहुत ही बड़ी ड्युटी है तो रखवाली कर रहे हैं, दूर बैठे भी याद कर रहे हैं, तो खास बापदादा जो ऊपर कोई भी सेवा अर्थ बैठे हैं, चाहे ज्ञान सरोवर में, चाहे पाण्डव भवन में, चाहे शान्तिवन में जो भी रखवाली करने वाले हैं, उन्हों को बापदादा विशेष याद-प्यार दे रहे हैं। म्यूजियम वाले, मानेसर वाले जो भी ड्युटी में हैं उन सबको भी बहुत-बहुत याद। मेहनत बहुत अच्छी कर रहे हैं।

(रोज़ी बहन ने विशेष याद दी है) जिन्होंने भी खास याद दी है उन सबको खास-खास-खास याद। बाकी मानेसर में भी अच्छी मेहनत कर रहे हैं। दिल्ली वाले जलवा दिखायेंगे। दिखायेंगे ना जलवा? सेवा की नई झलक दिखायेंगे। अच्छी मेहनत है और मन से मेहनत कर रहे हैं। जो इन्जीनियर निमित्त हैं, अभी तैयार कर रहे हैं, उन्हों की हिम्मत पर भी बापदादा बलिहार जा रहे हैं। दिखाई नहीं देता है लेकिन दिखायेंगे, यह भी तो हिम्मत है ना। तो बापदादा ने जो दिल्ली को गिफ्ट दी है उस गिफ्ट को सहयोग दिया है, इसके लिए बहुत-बहुत मुबारक हो। आप सबकी दिल्ली है। सिर्फ दिल्ली वालों की नहीं, आप सबकी दिल्ली है। राज्य तो करना है ना। दिल्ली में राज्य करेंगे या फारेन में राज्य करेंगे, फारेनर्स?

(अभी सोनीपत का भी कार्य शुरू करना है) सब हो जायेगा। सबमें सफलता है ही। (हैदराबाद की जमीन का भी फाइनल हो गया है) थोड़ा-बहुत तो जमीनों के ऊपर खिटखिट होती है, यह तो वरदान है ब्राह्मणों को खिटखिट का भी लेकिन सफलता साथ है। खिटखिट के साथ, सफलता का भी वरदान साथ है इसलिए थोड़ा टाइम लग जाता है। होना तो है ही। हुआ ही पड़ा है। जो हैदराबाद के निमित्त बने हैं चीफ मिनिस्टर्स या जो भी आफिसर्स उन सबको याद भेजना, टोली भेजना। हिम्मत अच्छी रखी है। अभी तो सबमें

हिम्मत आ गई है। चाहे छोटे हैं, चाहे बड़े हैं लेकिन हिम्मत से कर रहे हैं। अच्छा कर रहे हैं। जहाँ भी बन रहा है, बापदादा, ड्रामा, सर्व परिवार की दुआयें हैं ही हैं। इसलिए सफलता है ही। (सारनाथ, आगरा, लण्डन आदि में भवन बन रहे हैं) जहाँ भी बन रहा है, सेवा पहले ही तैयार है। आप सबके, सर्व के अंगुली देने से चारों ओर कार्य चल रहा है, सफलता हो रही है। और आगे बढ़के और सफलता होनी ही है। तो आप सब बना रहे हो या वहाँ बनाने वाले बना रहे हैं। आप सब भी साथी हो ना! जहाँ भी जो भी बनता है, हमारा बन रहा है। ऐसे नहीं दिल्ली में बन रहा है, हैदराबाद में बन रहा है। हमारे बाबा का है, हमारा है। हमारा पन सब तरफ होना चाहिए। इसको कहा जाता है बेहद परिवार, बेहद की भावना और इसी भावना का फल मिलता है। (बोरीवली में भी जमीन का साइन हुआ है)

अच्छा है ना - समाचार सुनके खुशी होती है ना। अच्छा।

(बहुत ही मातायें टेन्ट में रही हुई हैं) टेन्ट में रहने वालों को टेन्ट तो मिला ना और नीचे कुछ बिछौना तो मिला ना। भक्ति में तो मिट्टी में सोते हैं, आपको मिट्टी तो नहीं मिली ना। कम्बल तो मिला ना, वह तो ठण्ड में सोते हैं। आपको बहुत-बहुत मौज हैं बस बाप की गोदी में सो जाओ। टेन्ट नहीं देखो, बाप की गोदी देखो। बापदादा पहले-पहले टेन्ट में ही चक्कर लगाता है क्योंकि देखो टेन्ट वालों ने सहन तो किया ना। तो सहन करने का फल मिलता है। अच्छा है टेन्ट में सोने वाले हाथ उठाओ। अच्छा है, बापदादा टेन्ट वालों को अपने वतन में बुलाके मसाज़ करेंगे। खुश हैं। देखो, सबकी नज़र, दादियों से पूछो सबसे ज्यादा किसको याद किया? टेन्ट वालों को याद किया ना। (दादियों ने सब टेन्ट में चक्कर लगाया) इसीलिए आप भाग्यवान हो। अच्छा। सभी देश-विदेश वालों ने, जिसने भी याद भेजी है, वह समझें हमको विशेष रूप से बापदादा ने याद दी है। अच्छा।

15-12-2001

एकव्रता बन पवित्रता की धारणा द्वारा रूहानियत में रह मनसा सेवा करो

आज रूहानी बाप चारों ओर के रूहानी बच्चों की रूहानियत को देख रहे हैं। हर एक बच्चे में रूहानियत की झलक कितनी है? रूहानियत नयनों से प्रत्यक्ष होती है। रूहानियत की शक्ति वाली आत्मा सदा नयनों से औरों को भी रूहानी शक्ति देती है। रूहानी मुस्कान औरों को भी खुशी की अनुभूति कराती है। उनकी चलन, चेहरा फ़रिश्तों के समान डबल लाइट दिखाई देता है। ऐसी रूहानियत का आधार है पवित्रता। जितनी-जितनी मन-वाणी-कर्म में पवित्रता होगी उतना ही रूहानियत दिखाई देगी। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का शृंगार है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। तो बापदादा हर बच्चे की पवित्रता के आधार पर रूहानियत को देख रहे हैं। रूहानी आत्मा इस लोक में रहते हुए भी अलौकिक फ़रिश्ता दिखाई देगी।

तो अपने आपको देखो, चेक करो - हमारे संकल्प, बोल में रूहानियत है? रूहानी संकल्प अपने में भी शक्ति भरने वाले हैं और दूसरों को भी शक्ति देते हैं। जिसको दूसरे शब्दों में कहते हो रूहानी संकल्प मनसा सेवा के निमित्त बनते हैं। रूहानी बोल स्वयं को और दूसरे को सुख का अनुभव कराते हैं। शान्ति का अनुभव कराते हैं। एक रूहानी बोल अन्य आत्माओं के जीवन में आगे बढ़ने का आधार बन जाता है। रूहानी बोल बोलने वाला वरदानी आत्मा बन जाता है। रूहानी कर्म सहज स्वयं को भी कर्मयोगी स्थिति का अनुभव कराते हैं और दूसरों को भी कर्मयोगी बनाने के सैम्पुल बन जाते हैं। जो भी उनके सम्पर्क में आते हैं वह सहजयोगी, कर्मयोगी जीवन का अनुभवी बन जाते हैं। लेकिन सुनाया रूहानियत का बीज है पवित्रता। पवित्रता स्वप्न तक भी भंग न हो तब रूहानियत दिखाई देगी। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, लेकिन हर बोल ब्रह्माचारी हो, हर संकल्प

ब्रह्माचारी हो, हर कर्म ब्रह्माचारी हो। जैसे लौकिक में कोई-कोई बच्चे की सूरत बाप समान होती है तो कहा जाता है कि इसमें बाप दिखाई देता है। ऐसे ब्रह्माचारी ब्राह्मण आत्मा के चेहरे में रूहानियत के आधार पर ब्रह्मा बाप समान अनुभव हो। जो सम्पर्क वाली आत्मायें अनुभव करें - यह बाप समान है। चलो ८०० परसेन्ट नहीं भी हो तो समय अनुसार कितनी परसेन्ट दिखाई दे? कहाँ तक पहुँचे हैं? ९९ परसेन्ट, ९० परसेन्ट, ६० परसेन्ट, कहाँ तक पहुँचे हैं? यह आगे की लाइन बताओ, देखो बैठने में तो आपको नम्बर आगे मिला है। तो ब्रह्माचारी बनने में भी नम्बर आगे होंगे ना! हैं आगे कि नहीं?

बापदादा हर बच्चे की पवित्रता के आधार पर रूहानियत देखने चाहते हैं। बापदादा के पास सबका चार्ट है। बोलते नहीं हैं लेकिन चार्ट है, क्या-क्या करते हैं, कैसे करते हैं, सब बापदादा के पास चार्ट है। पवित्रता में भी अभी कोई-कोई बच्चों की परसेन्टेज़ बहुत कम है। समय के अनुसार विश्व की आत्मायें आप आत्माओं को रूहानियत का सैम्पुल देखने चाहती हैं। इसका सहज साधन है - सिर्फ एक शब्द अटेन्शन में रखो, बार-बार उस एक शब्द को अपने आप अण्डरलाइन करो, वह एक शब्द है - एकव्रता भव। जहाँ एक है वहाँ एकाग्रता स्वत: ही आ जाती है। अचल, अडोल स्वत: ही बन जाते हैं। एकव्रता बनने से एकमत पर चलना बहुत सहज हो जाता है। जब है ही एकव्रता तो एक की मत से एकमती सद्गति सहज हो जाती है। एकरस स्थिति स्वत: ही बन जाती है। तो चेक करो - एकव्रता हैं? सारे दिन में मन-बुद्धि एकव्रता रहता है? हिसाब में भी आदि हिसाब एक से शुरू होता है। एक बिन्दी और एक शब्द, एक अंक लगाते जाओ, एक बिन्दी लगाते जाओ तो कितना बढ़ता जायेगा! तो और कुछ भी याद नहीं आवे, एक शब्द तो याद रहेगा ना! समय, आत्मायें आप एकव्रता आत्माओं को पुकार रहे हैं। तो समय की पुकार, आत्माओं की पुकार - हे देव आत्मायें सुनने नहीं आती? प्रकृति भी आप प्रकृतिपति को देख-देख पुकार रही है - हे प्रकृतिपति

आत्मायें, अब परिवर्तन करो। यह तो बीच-बीच में छोटे-छोटे झटके लग रहे हैं। बिचारी आत्माओं को बार-बार दु:ख के, भय के झटके नहीं खिलाओ। आप मुक्ति दिलाने वाली आत्मायें मास्टर मुक्तिदाता कब इन आत्माओं को मुक्ति दिलायेंगे? क्या मन में रहम नहीं आता? कि समाचार सुन करके चुप हो जाते हो, बस, हो गया, सुन लिया। इसलिए बापदादा हर बच्चे का अभी मर्सीफुल स्वरूप देखने चाहते हैं। अपनी हद की बातें अभी छोड़ दो, मर्सीफुल बनो। मनसा सेवा में लग जाओ। सकाश दो, शान्ति दो, सहारा दो। अगर मर्सीफुल बन औरों को सहारा देने में बिजी रहेंगे तो हद की आकर्षणों से, हद की बातों से स्वत: ही दूर हो जायेंगे। मेहनत से बच जायेंगे। वाणी की सेवा में बहुत समय दिया, समय सफल किया, सन्देश दिया। आत्माओं को सम्बन्ध-सम्पर्क में लाया, ड्रामानुसार अब तक जो किया वह बहुत अच्छा किया। लेकिन अभी वाणी के साथ मनसा सेवा की ज्यादा आवश्यकता है। और यह मनसा सेवा हर एक नया, पुराना, महारथी, घोड़ेसवार, प्यादा सब कर सकते हैं। इसमें बड़े करेंगे, हम तो छोटे हैं, हम तो बीमार हैं, हम तो साधनों वाले नहीं हैं..... कोई भी आधार नहीं चाहिए। यह छोटे-छोटे बच्चे भी कर सकते हैं। बच्चे, मनसा सेवा कर सकते हैं ना? (हाँ जी) इसलिए अभी वाचा और मनसा सेवा का बैलेन्स रखो। मनसा सेवा से आप करने वालों को भी बहुत फायदा है। क्यों? जिस आत्मा को मनसा सेवा अर्थात् संकल्प द्वारा शक्ति देंगे, सकाश देंगे वह आत्मा आपको दुआ देगी। और आपके खाते में स्व का पुरुषार्थ तो है ही लेकिन दुआओं का खाता भी जमा हो जायेगा। तो आपका जमा खाता डबल रीति से बढ़ता जायेगा। इसलिए चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, क्योंकि इस बारी नये बहुत आये हैं ना! नये जो पहले बारी आये हैं, वह हाथ उठाओ। पहले बारी आये हुए बच्चों से भी बापदादा पूछते हैं कि आप आत्मायें मनसा सेवा कर सकती हो? (बापदादा ने पाण्डवों से, माताओं से सबसे अलग-अलग पूछा आप मनसा सेवा कर सकते हो?) यह तो बहुत अच्छा हाथ उठाया, चाहे कोई टी.वी. से देख सुन रहे हैं, चाहे

सम्मुख सुन रहे हैं, अभी बापदादा सभी बच्चों को जिम्मेवारी देते हैं कि रोज़ सारे दिन में कितने घण्टे मनसा सेवा यथार्थ रीति से की, उसका हर एक अपने पास चार्ट रखना। ऐसे नहीं कहना हाँ कर ली। यथार्थ रूप में कितने घण्टे मनसा सेवा की, वह हर एक चार्ट रखना। फिर बापदादा अचानक चार्ट मंगायेंगे। डेट नहीं बतायेंगे। अचानक मंगायेंगे, देखेंगे कि जिम्मेवारी का ताज पहना या हिलता रहा है? जिम्मेवारी का ताज पहनना है ना! टीचर्स ने तो जिम्मेवारी का ताज पहना हुआ है ना! अभी उसमें यह एड करना। ठीक है ना! डबल फारेनर्स हाथ उठाओ। यह जिम्मेवारी का ताज अच्छा लगता है, तो ऐसे हाथ उठाओ। टीचर्स भी हाथ उठाओ आपको देखकर सबको प्रेरणा मिलेगी। तो चार्ट रखेंगे? अच्छा, बापदादा अचानक एक दिन पूछेगा, अपना-अपना चार्ट लिखकर भेजो, फिर देखेंगे क्योंकि वर्तमान समय बहुत आवश्यकता है। अपने परिवार का दु:ख, परेशानी आप देख सकते हो! देख सकते हो? दु:खी आत्माओं को अंचली तो दो। जो आपका गीत है - एक बूंद की प्यासी हैं हम... आज के समय में सुख शान्ति के एक बूंद की आत्मायें प्यासी हैं। एक सुख-शान्ति के अमृत की बूंद मिलने से भी खुश हो जायेंगी। बापदादा बार-बार सुनाते रहते हैं - समय आपका इन्तजार कर रहा है। ब्रह्मा बाप अपने घर का गेट खोलने का इन्तजार कर रहा है। प्रकृति तीव्रगति से सफाया करने का इन्तजार कर रही है। तो हे फ़रिश्ते, अभी अपने डबल लाइट से इन्तजार को समाप्त करो। एवररेडी शब्द तो सब बोलते हो लेकिन सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में एवररेडी बने हो? सिर्फ शरीर छोड़ने के लिए एवररेडी नहीं बनना है, लेकिन बाप समान बनकर जाने में एवररेडी बनना है।

यह मधुबन के सब आगे-आगे बैठते हैं, अच्छा है। सेवा भी करते हैं। मधुबन वाले एवररेडी हैं? हंसते हैं, अच्छा पहली लाइन वाले महारथी एवररेडी हैं? बाप समान बनने में एवररेडी? ऐसे जाना तो एडवांस पार्टी में जायेंगे। एडवांस पार्टी तो न चाहते बढ़ती जाती है। अभी वाणी और मनसा सेवा के

बैलेन्स में बिजी हो जायेंगे तो ब्लैसिंग बहुत मिलेंगी। डबल खाता जमा हो जायेगा - पुरुषार्थ का भी और दुआओं का भी। तो संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, वाणी द्वारा, कर्म द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा दुआयें दो और दुआयें लो। एक ही बात करो बस दुआयें देनी हैं। चाहे कोई बद्दुआ दे तो भी आप दुआ दो क्योंकि आप दुआओं के सागर के बच्चे हो। कोई नाराज हो आप नाराज नहीं हो। आप राज़ी रहो। ऐसे हो सकता है? DDD जने आपको नाराज करें और आप राज़ी रहो, हो सकता है? हो सकता है? दूसरी लाइन वाले बताओ हो सकता है? अभी और भी नाराज करेंगे, देखना! पेपर तो आयेगा ना। माया भी सुन रही है ना! बस यह व्रत लो, दृढ़ संकल्प लो - ''मुझे दुआयें देनी हैं और लेनी हैं, बस''। हो सकता है? माया भले नाराज़ करे ना! आप तो राज़ी करने वाले हो ना? तो एक ही काम करो बस। नाराज़ न होना है, न करना है। करे तो वह करे, हम नहीं होवें। हम न करें न होवें। हर एक अपनी जिम्मेवारी ले। दूसरे को नहीं देखें, यह करती है, यह करता है, हम साक्षी होके खेल देखने वाले हैं, सिर्फ राज़ी का खेल देखेंगे क्या, नाराजगी का भी तो बीच-बीच में देखना चाहिए ना। लेकिन हर एक अपने आपको राज़ी रखे।

मातायें, पाण्डव हो सकता है? बापदादा नक्शा देख लेंगे। बापदादा के पास बहुत बड़ी टी.वी. है, बहुत बड़ी है। एक एक का देख सकते हैं, किस समय कोई क्या कर रहा है, बापदादा देखता है लेकिन बोलता नहीं है, आपको सुनाता नहीं है। बाकी रंग बहुत देखते हैं। छिप-छिपकर क्या करते हो वह भी देखता है। बच्चों में चालाकी भी बहुत है ना! चालाक बहुत हैं। अगर बापदादा बच्चों की चालाकियां सुनायें ना तो सुनकर ही आप थोड़ा सा सोचने लगेंगे, इसलिए नहीं सुनाते हैं। आपको सोच में क्यों डालें। लेकिन करते बहुत होशियारी से हैं। अगर सबसे होशियार देखना हो तो भी ब्राह्मणों में देखो। लेकिन अभी किसमें होशियार बनेंगे? मनसा सेवा में। नम्बर आगे ले लो। पीछे नहीं रहना। इसमें कोई कारण नहीं। समय नहीं मिलता, चांस नहीं

मिलता, तबियत नहीं चलती, पूछा नहीं गया, यह कुछ नहीं। सब कर सकते हो। बच्चों ने दौड़ लगाने का खेल खेला था ना, अभी इसमें दौड़ लगाना। मनसा सेवा में दौड़ लगाना। अच्छा।

कनार्टक का टर्न है - कर्नाटक वाले जो सेवा में आये हैं, वह उठो। इतने सब सेवा के लिए आये हैं। अच्छा है, यह भी सहज श्रेष्ठ पुण्य जमा करने का गोल्डन चांस मिलता है। भक्ति में कहा जाता है - एक ब्राह्मण की भी सेवा करो तो बड़ा पुण्य होता है और यहाँ कितने सच्चे ब्राह्मणों की सेवा करते हो। तो यह अच्छा चांस मिलता है ना! अच्छा लगा कि थकावट हुई? थके तो नहीं! मज़ा आया ना! अगर सच्ची दिल से पुण्य समझ करके सेवा करते हैं तो उसका प्रत्यक्ष फल है, उसको थकावट नहीं होगी, खुशी होगी। यह प्रत्यक्षफल पुण्य के जमा का अनुभव होता है। अगर थोड़ा भी किसी कारण से थकावट होती या थोड़ा सा महसूस करते तो समझो सच्ची दिल से सेवा नहीं है। सेवा अर्थात् प्रत्यक्षफल, मेवा। सेवा नहीं करते मेवा खाते हैं। तो कनार्टक के सभी सेवाधारियों ने अपनी अच्छी सेवा का पार्ट बजाया और सेवा का फल खाया।

अच्छा सभी टीचर्स ठीक हैं। टीचर्स को तो कितने बारी सीजन में टर्न मिलता है। यह टर्न मिलना भी भाग्य की निशानी है। अभी टीचर्स को मनसा सेवा में रेस करनी है। लेकिन ऐसे नहीं करना कि सारा दिन बैठ जाओ, मैं मनसा सेवा कर रही हूँ। कोई कोर्स करने वाला आवे तो आप कहो नहीं, नहीं मैं तो मनसा सेवा कर रही हूँ। कोई कर्मयोग का टाइम आवे तो कहो मनसा सेवा कर रही हूँ, नहीं। बैलेन्स चाहिए। कोई कोई को ज्यादा नशा चढ़ जाता है ना! तो ऐसा नशा नहीं चढ़ाना। बैलेन्स से ब्लैसिंग है। बैलेन्स नहीं तो ब्लैसिंग नहीं। अच्छा।

दिल्ली के सेवाधारी भी आये हैं, उठो कौन-कौन आये हैं? इन्जीनियर्स आये हैं। उद्घाटन तो कर लिया ना! अच्छा किया। सभी ठीक हैं। थक तो नहीं गये हैं? नहीं, और मकान भी बनाने के लिए देवें, एवररेडी हैं? और मकान बनाने का आर्डर देवें? अच्छा। यह तो एवररेडी हैं, विश्वकर्मा के समान जो आप आर्डर करो वह बन जायेंगे। हैं ना! ब्राह्मण परिवार के

संगमयुगी विश्वकर्मा का पार्ट बजाने वाले। द्वापर वाले नहीं, संगम वाले। बहुत अच्छा है। सभी बहुत खुश हुए। मुहूर्त में सब खुश होकर आये, इसलिए सफलता है। थोड़ा-बहुत तो होता ही है। लेकिन मैजारिटी सब देख देख खुश हुए। इसलिए आप सबको दुआयें मिली। आपके खाते में दुआयें जमा हुई। ठीक है ना! एक-एक विशेष आत्मा है। किसी भी ड्युटी पर रहे लेकिन विशेष आत्मायें हैं। इसीलिए देखो आप लोगों को विशेष निमन्त्रण मिला। बहुत अच्छा किया, बापदादा और परिवार खुश है। ठीक है ना?

अभी सभी एक सेकण्ड में मनसा सेवा का अनुभव करो। आत्माओं को शान्ति और शक्ति की अंचली दो। अच्छा।

चारों ओर के सर्व श्रेष्ठ रूहानियत का अनुभव कराने वाले रूहानी आत्माओं को, सर्व संकल्प और स्वप्न में भी पवित्रता का पाठ पढ़ने वाले ब्रह्माचारी बच्चों को, सर्व दृढ़ संकल्पधारी, मनसा सेवाधारी तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को, सदा दुआयें देने और लेने वाले पुण्य आत्माओं को बापदादा का, दिलाराम बाप का दिल व जान, सिक व प्रेम सहित याद-प्यार और नमस्ते।

दादी जी, दादी जानकी जी से पर्सनल मुलाकात

बापदादा ने त्रिमूर्ति ब्रह्मा का दृश्य दिखाया। आप सबने देखा? क्योंकि बाप समान, बाप के हर कार्य में साथी हो ना! इसलिए यह दृश्य दिखाया। बापदादा ने आप दोनों को विशेष पावर्स की विल की है। विल पावर भी दी और सर्व पावर्स की विल भी की। इसलिए वह पावर्स अपना काम कर रही हैं। करावनहार करा रहा है, और आप निमित्त बन कर रहे हो। मजा आता है ना! करन करावनहार बाप करा रहा है। इसलिए कराने वाला करा रहा है, आप बेफिकर होकर कर रहे हैं। फिकर नहीं रहता है ना! बेफिकर बादशाह।
(दादी जानकी ने कहा कि बापदादा से मास्टर डिग्री लेनी है)

मास्टर डिग्री तो पास करना ही है। हुई पड़ी है। सिर्फ थोड़ा रिपीट करना

है। पास हुई पड़ी है ना! अनेक कल्प अनेक बार पास की है, अभी सिर्फ रिपीट करना है। रिपीट करने में मुश्किल नहीं होता है। नहीं तो मास्टर डिग्री प्राप्त करने वाले कौन होंगे! और आपके साथी होंगे। साथी तो चाहिए ना! लेकिन बनना तो है ही। पास हुआ पड़ा है। कितने बार पास किया है? (अनेक बार) अनेक बार किया है और हुआ ही पड़ा है। अच्छा।

तबियत के भी नॉलेजफुल। थोड़ा-थोड़ा नटखट होता है। इसमें भी नॉलेजफुल बनना ही पड़ेगा क्योंकि सेवा बहुत करनी है ना। तो तबियत भी साथ देती है। तो डबल नॉलेजफुल। अच्छा। ओम् शान्ति।

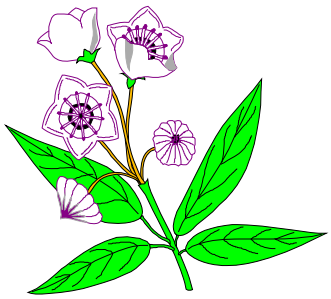

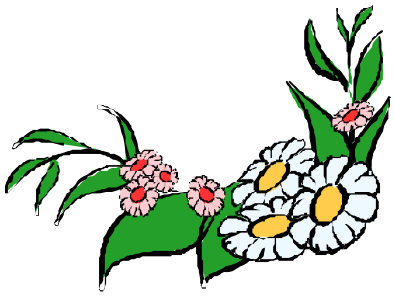

31-12-2001

इस नये वर्ष में सफलता भव के वरदान द्वारा बाप और स्वयं की प्रत्यक्षता को समीप लाओ

आज नव युग का रचता अपने मास्टर नव युग रचता बच्चों से नव वर्ष मनाने के लिए आये हैं। नव वर्ष मनाना, यह तो विश्व में सभी मनाते हैं। लेकिन आप सभी नव युग बना रहे हो। नव युग की खुशी हर बच्चे के अन्दर है। जानते हो कि नव युग अभी आया कि आया। दुनिया वालों का नव वर्ष एक दिन मनाने का है और आप सबका नव युग पूरा ही संगमयुग मनाने का है। नव वर्ष में खुशी मनाते, एक-दो को गिफ्ट देते हैं। वह गिफ्ट भी क्या है! थोड़े समय के लिए वह गिफ्ट है। नव युग रचता बाप आप सब बच्चों के लिए कौन-सी गिफ्ट लाते हैं? गोल्डन गिफ्ट, जिस गोल्डन गिफ्ट अर्थात् गोल्डन युग में सब स्वत: ही गोल्ड हो जाता है, नया हो जाता है। थोड़े समय के बाद नया वर्ष शुरू होगा लेकिन सब नया नहीं हो जायेगा। आपके नव युग में प्रकृति भी नई बन जायेगी। आत्मा भी नये वस्त्र (शरीर) धारण करेगी। हर वस्तु नई अर्थात् सतोप्रधान गोल्डन एज वाली होगी। तो नये वर्ष को मनाते आपके मन में, बुद्धि में नया युग ही याद आ रहा है। नव युग याद है ना, कि आज के दिन नया वर्ष याद है?

बापदादा पहले मुबारक देते हैं नव युग की फिर साथ में मुबारक देते हैं नये वर्ष की, क्योंकि आप सब नव वर्ष मनाने के लिए आये हो ना! मनाओ, खूब मनाओ। अविनाशी गिफ्ट जो बापदादा द्वारा मिली है, उसकी अविनाशी मुबारक मनाओ। सदा ही एक-दो को शुभ भावना की मुबारक दो। यही सच्ची मुबारक है। मुबारक जब देते हो तो स्वयं भी खुश होते हो और दूसरे भी खुश होते हैं। तो सच्चे दिल की मुबारक है - एक-दो के प्रति दिल से शुभ भावना, शुभ कामना की मुबारक। शुभ भावना ऐसी श्रेष्ठ मुबारक है जो कोई भी आत्मा की कैसी भी भावना हो, अच्छी भावना वा

अच्छा भाव न भी हो, लेकिन आपकी शुभ भावना उनका भाव भी बदल सकती है, स्वभाव भी बदल सकती है। वैसे स्वभाव शब्द का अर्थ ही है - स्व (सु) अर्थात् शुभ भाव। हर समय हर आत्मा को यही अविनाशी मुबारक देते चलो। कोई आपको कुछ भी दे लेकिन आप सबको शुभ भावना दो। अविनाशी आत्मा के अविनाशी आत्मिक स्थिति में स्थित होने से आत्मा परिवर्तित हो ही जायेगी। तो इस नये वर्ष में क्या विशेषता करेंगे? स्वयं में भी, सर्व में भी और सेवा में भी। जब नया वर्ष नाम है तो कोई नवीनता करेंगे ना! तो क्या नवीनता करेंगे? हर एक ने अपना नवीनता का प्लैन बनाया है या अभी सिर्फ नया वर्ष मना लेंगे? मिलन मनाया, नया वर्ष मनाया, नवीनता का क्या प्लैन बनाया?

बापदादा हर एक बच्चे को इस वर्ष के लिए विशेष यही इशारा देते हैं कि समय प्रमाण अभी सब बच्चों को चाहे यहाँ साकार में सम्मुख बैठे हैं, चाहे देश, विदेश में विज्ञान के साधन द्वारा सुन रहे हैं, देख रहे हैं, बापदादा भी सभी को देख रहे हैं। सभी बड़े आराम से, मजे से देख रहे हैं। तो सर्व विश्व के, बापदादा के अति प्यारे अति मीठे बच्चों को बापदादा यही इशारा देते हैं कि ''अभी अपने इस ब्राह्मण जीवन में अमृतवेले से लेकर रात तक बचत का खाता बढ़ाओ, जमा का खाता बढ़ाओ।'' हर एक अपने कार्य के प्रमाण अपना प्लैन बनावे, जो भी ब्राह्मण जीवन में खजाने मिले हैं, उस हर एक खजाने की बचत वा जमा का खाता बढ़ाओ क्योंकि बापदादा ने आज वर्ष के अन्त तक चारों ओर के बच्चों की रिज़ल्ट देखी। क्या देखा, जान तो गये हो। टीचर्स भी जान गई हैं। डबल फारेनर्स भी जान गये हैं। महारथी भी जान गये हैं। जमा का खाता जितना होना चाहिए उतना.... क्या कहें? आप खुद ही बोलो, क्योंकि बापदादा जानते हैं कि सर्व खजाने जमा करने का समय सिर्फ अब संगम है। इस छोटे से युग में जितना जमा किया उसी प्रमाण सारा कल्प प्रालब्ध प्राप्त करते रहेंगे। जो आप सबका स्लोगन है ना - कौन-सा स्लोगन है? अब नहीं तो... पीछे क्या है? ''अब नहीं तो कब नहीं''। यह

स्लोगन दिमाग में तो बहुत याद है। लेकिन दिल में, याद में भूलता भी है तो याद भी रहता है। सबसे बड़े से बड़ा खज़ाना इस ब्राह्मण जीवन की श्रेष्ठता का आधार है - संकल्प का खज़ाना, समय का खज़ाना, शक्तियों का खज़ाना, ज्ञान का खज़ाना, बाकी स्थूल धन का खज़ाना तो कामन है। तो बापदादा ने देखा जितना आप हर एक ब्राह्मण श्रेष्ठ संकल्प के खजाने द्वारा स्वयं को वा सेवा को श्रेष्ठ बना सकते हो, उसमें अभी और अण्डरलाइन लगानी पड़ेगी।

आप ब्राह्मणों के एक श्रेष्ठ संकल्प में, शुभ संकल्प में इतनी शक्ति है जो आत्माओं को बहुत सहयोग दे सकते हो। संकल्प शक्ति का महत्त्व अभी और जितना चाहो उतना बढ़ा सकते हो। जब साइंस का साधन राकेट, दूर बैठे जहाँ चाहे, जब चाहे, जिस स्थान पर पहुँचाने चाहे, एक सेकण्ड में पहुँचा सकते हैं। आपके शुभ श्रेष्ठ संकल्प के आगे यह राकेट क्या है! रिफाइन विधि से कार्य में लगाके देखो, आपके विधि की सिद्धि बहुत श्रेष्ठ है। लेकिन अभी अन्तर्मुखता की भट्ठी में बैठो। तो इस नये वर्ष में अपने आप सर्व खज़ानों की बचत की स्कीम बनाओ। जमा का खाता बढ़ाओ। सारे दिन में स्वयं ही अपने प्रति अन्तर्मुखता की भट्ठी के लिए समय फिक्स करो। आपेही आप कर सकते हो, दूसरा नहीं कर सकता है।

बापदादा प्रत्यक्षता वर्ष के पहले इस वर्ष को ''सफलता भव का वर्ष'' कहते हैं। सफलता का आधार हर खजाने को सफल करना। सफल करो, सफलता प्राप्त करो। सफलता प्रत्यक्षता को स्वत: ही प्रत्यक्ष करेगी। वाचा की सेवा बहुत अच्छी की लेकिन अब सफलता के वरदान द्वारा बाप की, स्वयं की प्रत्यक्षता को समीप लाओ। हर एक ब्राह्मणों की जीवन में सर्व खज़ानों की सम्पन्नता का आत्माओं को अनुभव हो। आजकल की आत्मायें आपके अनुभवी मूर्त द्वारा अनुभूति करने चाहती हैं। सुनने कम चाहती हैं, अनुभूति ज़्यादा चाहती हैं। ''अनुभूति का आधार है - खज़ानों का जमा खाता।'' अभी सारे दिन में बीच-बीच में यह अपना चार्ट चेक करो, सर्व

खज़ाने जमा कितने किये? जमा का खाता निकालो, पोतामेल निकालो। एक मिनट में कितने संकल्प चलते हैं? संकल्प की फास्ट गति है ना। कितने सफल हुए, कितने व्यर्थ हुए? कितने समर्थ रहे, कितने साधारण रहे? चेक करने की मशीन तो आपके पास है ना या नहीं है? सबके पास चेकिंग मशीन है? टीचर्स के पास है? आपके सेन्टर्स पर जैसे कम्प्यूटर है, ई-मेल है वैसे यह चेकिंग मशीन है? डबल फारेनर्स के पास है? चलती है या बन्द पड़ी है? पाण्डवों के पास चेकिंग मशीन है? सबके पास है, कोई के पास नहीं हो तो अप्लीकेशन डालो। जैसे कहाँ आफिस खोलते हो तो पहले ही सोचते हो कि आफिस बनाने के पहले, आजकल के जमाने में कम्प्यूटर चाहिए, ई-मेल चाहिए, टाइप मशीन चाहिए, कापी निकालने वाली मशीन चाहिए। चाहिए ना? तो ब्राह्मण जीवन में, आपके दिल के आफिस में यह सब मशीन हैं या नहीं हैं?

बापदादा ने पहले भी सुनाया कि बापदादा के पास प्रकृति भी आती है कहने के लिए कि मैं एवररेडी हूँ, समय भी ब्राह्मणों को बार-बार देखता रहता है कि ब्राह्मण तैयार हैं? बार-बार ब्राह्मणों का चक्कर लगाता है। तो बापदादा पूछते हैं, हाथ तो बहुत अच्छे उठाते हो, बापदादा भी खुश हो जाते हैं। अब ऐसे एवररेडी बनो जो हर संकल्प, हर सेकण्ड, हर श्वास जो बीते वह वाह, वाह हो। व्हाई नहीं हो, वाह, वाह हो। अभी कोई समय वाह-वाह होता है, कोई समय वाह के बजाए व्हाई हो जाता है। कोई समय बिन्दी लगाते हैं, कोई समय क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की मात्रा लग जाती है। आप सबका मन भी कहे वाह! और जिसके भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो, चाहे ब्राह्मणों के, चाहे सेवा करने वालों के वाह! वाह! शब्द निकले। अच्छा।

इस सीज़न के लास्ट टर्न में कितने मास हैं, (तीन मास)। तो तीन मास के बाद बापदादा हर एक बच्चे के बचत का एकाउन्ट चेक करेगा। ठीक है? जो समझते हैं तीन मास में चेक कराने के लिए तैयार हो जायेंगे, वह एक हाथ उठाओ। तैयार हो जायेंगे? कितने परसेन्ट में तैयार होंगे? उमंग अच्छा

है। कोई नहीं उठा रहे हैं, सोच रहे हैं क्या? तीन मास में एकाउन्ट चेक होगा। आप अपना एकाउन्ट चेक करना, फिर बापदादा चेक करेगा। बापदादा को तो देरी नहीं लगती। यहाँ तो एकाउन्ट में कितना माथा लगाना पड़ता है। लगाना पड़ता है ना? थक जाते हैं। बापदादा को मालूम पड़ता है, हो जायेगी मालिश। मधुबन वाले एकाउन्ट रखने में तो होशियार हैं ना? सब वाह, वाह हो जायेगा। कोई बात नहीं।

बापदादा टीचर्स को देखकर बहुत खुश होता है। (सभी ने ताली बजाई) तालियां तो बहुत अच्छी बजाई। वैसे तो आप सब टीचर हो ना, या यह टीचर्स ही टीचर हैं। जब कोर्स कराते हो वा मैसेज देते हो तो क्या बनते हो? टीचर बनते हो ना? बापदादा इस वर्ष में एक नवीनता देखने चाहते हैं, सुनायें। करेंगे? पाण्डव करेंगे? पक्का? पक्का करेंगे? कुछ भी हो जाए करना पड़ेगा। तैयार हैं? सभी पाण्डव तैयार हैं? यूथ भी तैयार हैं? बापदादा सुनाये करेंगे? मातायें करेंगी? (सभी ने कहा हाँ जी) अच्छा है, बापदादा बच्चों की हिम्मत पर मुबारक दे रहे हैं। अभी सुनो एक बात, दो हाथ की ताली नहीं बजाओ, एक हाथ की ताली बजाओ। घमसान हो जाता है ना?

तो आज ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फ़ादर ब्रह्मा बाप की एक शुभ आशा रही, ब्रह्मा बाप बोले कि मेरे ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड सन्स को विशेष एक बात कहनी है, वह क्या? कि सदा हर बच्चे के चेहरे पर, सदा एक तो रूहानियत की मुस्कराहट हो, सुना! अच्छी तरह से कान खोल के सुनना। और दूसरा - मुख में सदा मधुरता हो। एक शब्द भी मधुरता के बिना नहीं हो। चेहरे पर रूहानियत हो, मुख में मधुरता हो और मन-बुद्धि में सदा शुभ भावना, रहमदिल की भावना, दातापन की भावना हो। हर कदम में फालो फादर हो। तो यह कर सकते हो? टीचर्स यह कर सकते हो? यूथ कर सकते हो? (ज्ञान सरोवर में देश-विदेश के यूथ की रिट्रीट चल रही है) बापदादा के पास यूथ ग्रुप की रिज़ल्ट बहुत अच्छी आई है। पदमगुणा मुबारक हो। अच्छा रिज़ल्ट है। अनुभव भी अच्छे किये हैं, बापदादा खुश हुए। बापदादा ने अनुभव भी सुने। सुनी सुनाई

नहीं, डायरेक्ट बापदादा ने आपके अनुभव सुने, लेकिन अभी इन अनुभवों को अमर भव के वरदान से अविनाशी रखना। कुछ भी हो जाए लेकिन अपने रूहानी अनुभवों को सदा आगे बढ़ाते रहना। कम नहीं करना। तीन मास के बाद मधुबन में आओ, नहीं आओ। तीन मास के बाद फारेन से तो आयेंगे नहीं लेकिन अपना एकाउन्ट रखना और बापदादा के पास भेजना, बापदादा राइट करेगा। या जो होगा वह परसेन्टेज़ देंगे। ठीक है? हाँ, एक हाथ की ताली बजाओ। अच्छा।

आज मुबारक का दिन है तो और खुशखबरी बापदादा ने सुनी, देखी भी। छोटे-छोटे बच्चे ताजधारी बनके बैठे हैं। आपको तो ताज मिलेगा, इन्हों को अभी मिल गया है। खड़े हो जाओ। देखो, ताजधारी ग्रुप देखो। बच्चे सदा दिल के सच्चे। सच्ची दिल वाले हो ना! अच्छा है बच्चों की रिज़ल्ट भी बापदादा ने अच्छी देखी। मुबारक हो। अच्छा।

डबल फारेनर्स – इन्हों के पत्र और चिटकियाँ भी देखी। उमंग की चिटकियां हैं। लेकिन एक बात बापदादा ने देखी, जो चिटकियों में कोई-कोई में हैं। कोई ने तो बहुत अच्छे उमंग-उत्साह से परिवर्तन भी लिखा है, उमंग भी लिखा है लेकिन कोई-कोई ने थोड़ा-सा अपना अलबेलापन दिखाया है। अलबेले कभी नहीं बनना। अलर्ट। एक बापदादा को अलबेलापन नहीं अच्छा लगता और दूसरा दिलशिकस्त होना नहीं अच्छा लगता। कुछ भी हो जाए दिल बड़ी रखो। दिलशिकस्त छोटी दिल होती है। दिलखुश बड़ी दिल होती है। तो दिलशिकस्त नहीं बनना, अलबेला नहीं बनना। उमंग-उत्साह में सदा उड़ते रहना। बापदादा को डबल विदेशियों में अरब-खरब जितनी उम्मीदें हैं। डबल फारेनर्स ऐसा जलवा दिखायेंगे जो इन्डिया की आत्मायें चकित हो जायेंगी। आना है, वह भी दिन आना है, जल्दी आना है। आना है ना? वह दिन आने वाला है ना? आयेगा वह दिन? (जल्दी-जल्दी आयेगा) हाँ जी तो बोलो। बापदादा इन एडवांस मुबारक की थालियां भरकर दे रहे हैं। इतनी हिम्मत बापदादा डबल फारेनर्स में देख रहे हैं, ऐसे है ना? फारेन में

बहुत उम्मीदें हैं। अच्छा है। यूथ भी अच्छे हैं, प्रवृत्ति वाले भी बहुत हैं, कुमारियां भी बहुत हैं, कमाल ही कमाल है। ठीक है? यह सिन्धी परिवार बोलो, क्या कमाल करेंगे? निमित्त मात्र सिन्धी हैं लेकिन हैं ब्राह्मण। क्या करेंगे, बोलो? (बाबा का नाम रोशन करेंगे) कब करेंगे? (इस वर्ष में) आपके मुख में गुलाबजामुन। हिम्मत वाले हैं। (आपका वरदान साथ में है) वरदाता ही साथ में है तो वरदान क्या बड़ी बात है। अच्छा।

जो भी इस कल्प में पहली बार आये हैं, वह उठो। जो पहली बार आये हैं, उन बच्चों को बापदादा कहते हैं कि आये पीछे हैं लेकिन जाना आगे है, इतना आगे बढ़ो जो सब आपको देख करके खुश होवें और सबके मुख से यही शब्द निकले - कमाल है, कमाल है, कमाल है। ऐसी हिम्मत है? पहली बार आने वालों में हिम्मत है ना! नया वर्ष मनाने आये हो, तो नये वर्ष में कोई कमाल करेंगे ना! फिर भी बापदादा को सभी बच्चे अति प्यारे हैं। फिर भी बहुत अक्ल का काम किया है, टू लेट के पहले आ गये हो। अभी फिर भी इस हाल में बैठने की सीट तो मिली है ना! रहने का पलंग या पट तो मिला है ना! और जब टू लेट का बोर्ड लग जायेगा तो क्यू में खड़ा करना पड़ेगा। इसीलिए फिर भी अच्छे समय पर बापदादा को पहचान लिया, यह अक्ल का काम किया। अच्छा।

जो पुराने पाण्डव हैं, वह उठो। पाण्डवों की महिमा भी कम नहीं है। बापदादा का टाइटल है पाण्डव पति। तो पाण्डवों की महिमा है ना, पाण्डव पति और विजयी पाण्डव गाये हुए हैं। शक्तियां वरदानी गाई हुई हैं लेकिन विजयी पाण्डव गाये हुए हैं। तो हर एक पाण्डव के मस्तक पर कौन-सा तिलक लगा हुआ है? विजय का। आप अपने मस्तक में विजय का तिलक देखते हो कि भूल जाते हो? सदा अपने मस्तक में विजयी पाण्डव, विजय का तिलक चमकता हुआ देखो। विजय हर पाण्डव का जन्म सिद्ध अधिकार है। अधिकारी हैं ना? तो बापदादा पाण्डवों को विजयी रत्न के रूप में मुबारक दे रहे हैं। बहुत अच्छे हैं, बहुत हैं। पाण्डव कम नहीं हैं।

अच्छा पुरानी मातायें जो पहले आती रही हैं, वह उठो। माताओं की विशेषता क्या है? माताओं के चरणों में यह सब बड़े-बड़े मर्तबे वाले आप सबके चरणों में झुकेंगे। यह माता गुरु जो गाया हुआ है, वह सच्चा पार्ट आप मातायें बजायेंगी। जैसे अभी कोई भी बड़ा दिन होता है ना! तो भारत माता की जय गाते हैं ना! आगे चलकर आप माताओं की जय-जय गायेंगे। इतना ऊंच मर्तबा बापदादा ने माताओं को दिया है। तो मातायें जय-जयकार का आवाज सुनेंगी। माता गुरु का जो गायन है वह प्रत्यक्ष रूप में दिखायेंगी। ऐसी मातायें हो ना! सोई हुई आत्माओं को जगायेंगी। माताओं का बहुत अच्छा पार्ट है। जिन्होंने आपकी निंदा की है वह आपका कीर्तन गायेंगे क्योंकि बाप की बन गई हैं ना! ऊँचे ते ऊँचे भगवन की साथी बन गई हो। यह रूहानी नशा है ना? तो ऐसी माताओं को बापदादा भी नमस्ते कहते हैं। अच्छा।

कुमारियों से - कुमारियां हाथ हिलाओ। कुमारियां भी बहुत हैं। अभी साधारण कुमारियां तो नहीं हो। अभी आप सभी सु-कुमारियां बन गई हैं, श्रेष्ठ कुमारियां बन गई हैं। कुमारियों के लिए बापदादा को एक दिल में उमंग है, सुनायें! कुमारियां सुनेंगी? कुमारियों के लिए गायन है - ७८ पीढ़ी तारने वाली हैं, तो बापदादा कहते हैं, इस वर्ष में हर एक कुमारी ७८ छोड़ो लेकिन एक-एक कुमारी एक-एक वारिस क्वालिटी निकाले, हो सकता है। है हिम्मत? कितनी कुमारियां होंगी? (लगभग ८०००) तो इस वर्ष में हजार वारिस तो पैदा हो जायेंगे। (हाँ जी) इन एडवांस मुबारक हो। अभी वारिसों की माला बनायेंगे। मिक्स माल तो आता रहता है। अभी वारिसों की माला बनायेंगे। ठीक है? पहले यह ट्रेनिंग दादियों से लेना कि वारिस किसको कहा जाता है? वारिस क्वालिटी की क्वालिफिकेशन कौन-सी है? समझा! तो इस वर्ष में एक-एक, एक वारिस निकाले, फिर बापदादा वारिसों की माला बनायेंगे। इस वर्ष में कोई नवीनता करेंगे ना! तो वारिस पैदा करेंगे। दिल्ली भी करेगा, तो सब करेंगे। करना ही है? और क्या करना है? यही तो करना

है। अभी देखेंगे जो भी वारिस तैयार करे वह मधुबन में अपना समाचार लिखना, दादी वारिस आ गया। ठीक है कुमारियां? हाँ जी तो कहो।

मधुबन निवासियों से – मधुबन वालों की सेवा का चमत्कार सभी को मधुबन में खींचता है। किसी से भी पूछो तो यही सबके मुख से निकलता है, मधुबन तो मधुबन है। सेवा में नम्बरवन, ऐसे है? नम्बरवन हैं या नम्बरवार हैं? नम्बरवन हैं। बापदादा मधुबन निवासियों को सदा नम्बरवन दृष्टि से देखते हैं। नम्बरवार नहीं, नम्बरवन। है ना नम्बरवन! दादी के पास कोई कम्पलेन नहीं। सब कम्पलीट हो रहे हैं इसलिए कम्पलेन नहीं है। अच्छे हैं, फिर भी अथक तो हैं। मधुबन के सेवाधारी सब मांगते हैं। महामण्डलेश्वर भी कहकर जाते हैं मधुबन के सेवाधारी हमको भेजो। तो नम्बरवन तो हुए ना! अच्छे हैं। पक्के भी हैं, अच्छे भी हैं। ऐसे है ना! ऐसे तो नहीं बापदादा ऐसे ही कह रहा है। बापदादा को तो अच्छे लगते हैं। बाकी कभी-कभी ज्यादा काम हो जाता है, बापदादा देखते हैं कभी-कभी ज्यादा बोझ भी पड़ जाता है। लेकिन फिर भी अमर हैं। अमर भव का वरदान मिला हुआ है। ठीक है ना! अमर हैं? अच्छा। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

अच्छा - टीचर्स उठो। बापदादा सदा टीचर्स को इसी नज़र से देखते हैं कि हर टीचर के फीचर्स में बापदादा के फीचर्स दिखाई दें। फेस में ब्रह्मा बाप के फीचर्स और भ्रकुटी में ज्योतिबिन्दु के फीचर, किसी भी टीचर को देखो तो सबके मुख से यही निकले कि यह तो बाप समान हैं। यह तो ब्रह्मा बाबा जैसे लगते हैं, यह तो शिव बाप जैसे लगते हैं। हैं भी और होने ही हैं। तो टीचर्स आधार मूर्त हैं। जैसे बाप के लिए कहते हैं - ब्रह्मा बाप का सदा यही स्लोगन रहा **''जो कर्म मैं करूंगा वह सब करेंगे''**। ऐसे हर एक टीचर को यही स्लोगन सदा याद रहता है कि ''जो कर्म, जो बोल, जो वृत्ति, जो विधि हम करेंगे, हमें देख सर्व करेंगे।'' बापदादा ने ब्रह्मा बाप की गद्दी आप टीचर्स को बैठने के लिए दी है। मुरली सुनाने के लिए निमित्त टीचर्स हैं, बाप की गद्दी मिली हुई है। ड्रामा ने आप टीचर्स को बहुत-बहुत ऊंचा मर्तबा दिया है।

बापदादा भी सदा टीचर्स को इसी विशेष महत्त्व से देखते हैं। महान हो, महत्त्व वाले हो। है ना ऐसे? कभी स्टूडेन्ट से सर्टीफिकेट लेवें? बापदादा तो देखते रहते हैं। (बाबा टीचर्स को पकड़ो) यह तो प्रेम में पकड़ी हुई हैं तब तो टीचर्स बनी हैं। अभी कान दादी पकड़ेगी, बाप तो प्यार में पकड़ेंगे। फिर भी हिम्मत रखकर निमित्त तो बनी हैं ना! (दादी कह रही हैं टीचर्स बहुत अच्छी हैं) बहुत अच्छी हो, मुबारक हो। अच्छे तो हैं ही। अगर टीचर्स नहीं होते तो इतने सेन्टर्स कैसे खुलते। मुबारक हो आप सबको। बापदादा तो बहुत-बहुत श्रेष्ठ नज़र से देखते हैं। टीचर्स भी बहुत आई हैं। अच्छी हैं - हिम्मत और मेहनत में मुबारक हो।

बाकी हॉस्पिटल वाले रह गये। हॉस्पिटल वालों ने अपने नये साल का उमंग-उत्साह अच्छा लिखा है और बापदादा को सदा निश्चय रहता है और निश्चिंत रहते हैं कि हॉस्पिटल अनेक आत्माओं को ब्राह्मण जीवन में लायेगी। ब्राह्मणों की सेवा भी कर रही है और ब्राह्मण भी बनायेगी। बड़े-बड़े वी.आई.पी. हॉस्पिटल का नाम सुन प्रभावित होंगे। अभी आयेंगे आपके पास। चार्ट अच्छा लिखा है और प्रतिज्ञा भी अच्छी की है। बापदादा खुश है। सबने बहुत अच्छी रुचि से किया है। अच्छा। आप सबका प्रतिज्ञा पत्र पढ़कर बापदादा खुश हुए, इसलिए मुबारक हो।

अभी जो साइंस के साधनों से देख रहे हैं वह भी खुश हो रहे हैं कि बापदादा ने हमारा नाम नहीं लिया। बापदादा कहते हैं जो भी जहाँ देख रहे हैं, सुन रहे हैं, आप भी उठ जाओ। सुनकर खुश हो रहे हैं, मुस्करा रहे हैं। बापदादा को सभी बच्चों का उमंग-उत्साह और दिल का प्यार बहुत श्रेष्ठ लगता है। देखो दिल का प्यार है तो समय प्रमाण पहुँच जाते हैं। बड़े उत्साह से सुनते भी रहते हैं, देखते भी रहते हैं, कोई देखता है, कोई नहीं भी देखता, लेकिन सुनते बहुत हैं। तो बापदादा नव युग की, नये वर्ष की एक-एक बच्चे को नाम सहित, विशेषता सहित मुबारक दे रहे हैं। वह भी हाथ उठा रहे हैं, हिला रहे हैं। अच्छा।

सभी बच्चों के कार्ड और पत्र, नये वर्ष की मुबारकें बहुत-बहुत आई हैं।

बापदादा कहते हैं बच्चे आपके कार्ड के पहले आपकी हार्ट पहुँच जाती है। बापदादा सबकी दिल को देख खुश होते हैं। चलो खर्चा तो होता है, हाँ कल के बाद यह कार्ड सब यादगार रूप में रह जायेंगे। लेकिन बापदादा इस बात पर खुश होते हैं, खर्चे को नहीं देखते हैं, बापदादा देखते हैं कि बच्चों के दिल का क्या आवाज निकलता है। क्या दिल का प्यार हाथों से कार्ड में आता है। इसलिए कार्ड बहुत अच्छा एक-दो से अच्छे से अच्छे बनाये हैं। आप लोग देखना यहाँ कार्ड रखे हैं ना! अच्छा।

ज्युरिस्ट से – जो ज्यूरिस्ट मीटिंग में आये हैं वह उठो। बापदादा की एक प्वाइंट जो रही हुई है, पता है। कौन-सी प्वाइंट रही हुई है? (गीता के भगवान की) तो इसका प्लैन कब बनायेंगे? किताब लिखा वह तो अच्छा किया, लेकिन कोई ग्रुप तैयार करो जो कहे कि हाँ यह जो बोलते हैं, वह ठीक है। कोई एक ग्रुप तो छोटा तैयार करो ना। इस वर्ष में लायेंगे ना क्योंकि जो किसने नहीं किया है, वह करके दिखाना है। यह पत्र यहाँ भरवा करके आवे कि हाँ गीता का भगवान जो आपने बताया वह बिल्कुल सही है, कोई ऐसे अथॉरिटी वालों का आवे। बाकी आम जनता के लिए गीता का भगवान कोई भी हो, कृष्ण हो या निराकार हो। कोई ऐसे अथॉरिटी वाले बोलें, सिद्ध करें, कि हाँ आपकी यह बात बहुत आवश्यक है, ऐसा ग्रुप बनाओ। बना सकते हैं कोई बड़ी बात नहीं है। धार्मिक संस्था, जो आपका धार्मिक वर्ग है और जो जस्टिस हैं, वकील हैं, ऐसे धर्म क्षेत्र वालों का ग्रुप बनाओ जो विशेष निमित्त हो। अभी महात्मायें भी तो बहुत आये थे ना। अच्छा-अच्छा तो कहके गये। अभी ऐसी बात उन्हों से लिखवाओ। दोनों ही वर्ग मिल करके करो, हो जायेगा, कोई बड़ी बात नहीं है। ऐसे तो सभी वर्ग वाले एक-दो के सहयोगी तो हैं ही, जिसका भी सहयोग चाहिए वह मिल सकता है। लेकिन कुछ करके दिखाओ। इसी से ही प्रत्यक्षता होगी। लोगों को नई बात चाहिए ना। ठीक है ना! करके दिखायेंगे। होना ही है। जब कल्प पहले हुआ है तो अब भी रिपीट तो होना ही है। भले आये। मुबारक हो। अच्छा है - जब से यह अलग-अलग वर्ग बने हैं तो सेवा में वृद्धि तो हुई है और हर एक को उमंग आता है, हम कुछ करके दिखायें, करके दिखायें।

लेकिन वारिस नहीं निकाले हैं। हर एक वर्ग को वारिस निकालने चाहिए। अभी मिक्स तो आते ही रहते हैं, अभी लास्ट में वारिस की माला बनाओ। जैसे आदि में थोड़े से निमित्त वारिस बने, ऐसे अन्त में भी ऐसे वारिस क्वालिटी निमित्त बनेगी। अच्छा।

महाराष्ट्र के सेवाधारी – वैसे तो सबको मुबारक मिल गई है फिर भी जिन्होंने सेवा का बड़े से बड़ा पुण्य जमा किया है उनको सेवा के पुण्य की मुबारक हो। यह पुण्य कम नहीं है। यह भी एक जीवन में सहज जमा का खाता बढ़ जाता है क्योंकि ब्राह्मणों की प्रसन्नता, सन्तुष्टता पुण्य का खाता बढ़ाती है। तो यह भी चांस बहुत अच्छा, हर ज़ोन लेते रहते हैं, यह अच्छा है। अच्छा लगता है ना! पुण्य भी जमा होता है, नजदीक भी आना होता है, तो मुबारक हो महाराष्ट्र को। अच्छा।

विश्व के चारों ओर के सर्व सफलता मूर्त बच्चों को, सर्व सफल करने वाले तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को, सदा अपने एकाउन्ट को चेक करने वाले चेकर और भविष्य मेकर ऐसे श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा अपने हर कदम में बाप को प्रत्यक्ष करने वाले ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर के सर्व ग्रैण्ड सन्स को बाप और दादा का बहुत-बहुत-बहुत-बहुत याद-प्यार, मुबारक और नमस्ते।

दिल्ली तथा सोनीपत के भवन निर्माण प्रति बापदादा के इशारे

सभी ब्राह्मण परिवार के समाचार, पत्रों द्वारा समाचार तो सब सुनते रहते हैं। तो आजकल सबके संकल्प में, सहयोग में क्या याद रहता है? कि हमारी राजधानी में, आप सबकी राजधानी कौन-सी है? मधुबन है घर और राज्य कहाँ करना है? दिल्ली में करना है, मधुबन में नहीं। मधुबन में कृष्ण का महल बनेगा या दिल्ली में बनेगा? मधुबन में नहीं बनेगा? तो राजधानी याद रहती है, सभी को राजधानी याद है? तो सभी के सहयोग से अभी राजधानी में विशेष सेवास्थान बन रहा है, आप सबने बीज डाला है? सभी ने डाला है? क्योंकि बीज डालेंगे तभी फल खायेंगे ना। बिना बीज डालने के फल कैसे

खायेंगे। तो सभी ने बीज डाला है और भी डालते रहेंगे क्योंकि इस बीज से अनेक प्रकार के प्रत्यक्षता के फल निकलेंगे। इसलिए सबको अपने-अपने तरफ से सफलता वर्ष में सब सफल करना ही है। सर्व खजाने सफल करना है। उसके साथ बीज भी डालना है, डालते रहते हैं, डालते रहेंगे। ठीक है ना! डालते रहेंगे ना! हाथ उठाओ कि समझते हैं पूरा हो गया? जब तक सेवा है तो सेवा में बीज डालते जाओ और फिर फल भी आप सबको खाना है। जब प्रत्यक्षता का फल निकलेगा ना तो आप सब खायेंगे, सिर्फ दिल्ली वाले नहीं सब खायेंगे। बापदादा से प्यार है ना! तो सेवा से भी प्यार है। तो सेवा का फल भी बहुत प्यारा है। मानेसर की धरनी के सेवाधारी कौन-कौन आये हैं, वह उठो। अच्छा है, काम ठीक चल रहा है? ठीक चल रहा है और ठीक चलता रहेगा। बाप के सेवास्थानों को बाप का वरदान मिला हुआ ही है। होना ही है। सर्व के सहयोग से सेवा सफल होनी ही है। ठीक है ना! अच्छा है। जैसे उमंग-उत्साह से बेहद की वृत्ति से स्थान बना है, ऐसे ही बेहद की वृत्ति, दृष्टि और सेवा से सफलता भी बेहद की मिलनी है। सब बेहद होना है। तो बेहद में तो आप सभी हो ना! ऐसे कभी नहीं समझना यह दिल्ली का है, हमारा है क्योंकि प्रत्यक्षता का बीज आप सबका है। निमित्त दिल्ली है लेकिन फल आप सबको खाना है, मिल के खायेंगे। इसलिए बापदादा को भी खुशी है कि बेहद के उमंग-उत्साह से बेहद की सेवा बढ़ रही है, बढ़ती जायेगी। अच्छा। सोनीपत का भी तैयार होना है। वह भी दिल्ली है ना, चाहे कोई भी है, है तो दिल्ली ही। (लण्डन में भी डायमण्ड हाउस बन रहा है) देखो, विदेश तो हर समय जम्प देता है। विदेश जम्प नहीं देवे, यह हो ही नहीं सकता। यह डायमण्ड हाउस बना तो वहाँ भी ज़रूर होना ही चाहिए। (मिन्नी मधुबन बन रहा है) छोटे से बड़ा, व्हाइट हाउस जितना भी मिल जायेगा।

बापदादा ने बच्चों से मिलन मनाने के पश्चात नये वर्ष की मुबारक दी

चारों ओर के सफलता के सितारों को पुराने वर्ष की विदाई और नये वर्ष की बधाई के संगम समय की, संगम समय विदाई भी है, बधाई भी है। तो सदा सफल है और सफल रहेंगे। कभी भी असफलता का नाम निशान नहीं रहेगा। बापदादा के अति सिकीलधे, अति प्यारे, अति मीठे, नयनों के नूर हो। सब नम्बरवन बनना ही है, इस दृढ़ संकल्प से हर कदम बाप समान उठाते रहना, पदम गुणा, अरब-खरब गुणा मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

२००२, १ जनवरी, ३१ दिसम्बर रात्रि १२ बजे के बाद दादी जी ने सभी से गुडमार्निंग की।

आज नये साल और पुराने साल के संगम पर बाबा ने तो वायदा कराया हम सभी वायदे को निभायेंगे और सबको बहुत-बहुत प्यार से हैप्पी न्यू ईयर, हैप्पी न्यू ईयर। गुडमार्निंग।

विदाई के समय बापदादा ने सभी बच्चों से गुडमार्निंग, डायमण्ड मार्निंग की।

बापदादा के बहुत-बहुत अमूल्य डायमण्डस को, डायमण्ड मार्निंग, डायमण्ड मार्निंग, डायमण्ड मार्निंग।

ओम् शान्ति

18-01-2002

स्नेह की शक्ति द्वारा समर्थ बनो, सर्व आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली दो

आज समर्थ बाप अपने स्मृति स्वरूप, समर्थ स्वरूप बच्चों से मिलने के लिए आये हैं। आज विशेष चारों ओर के बच्चों में स्नेह की लहर लहरा रही है। विशेष ब्रह्मा बाप के स्नेह की यादों में समाये हुए हैं। यह स्नेह हर बच्चे के इस जीवन का वरदान है। परमात्म स्नेह ने ही आप सबको नई जीवन दी है। हर एक बच्चे को स्नेह की शक्ति ने ही बाप का बनाया। यह स्नेह की शक्ति सब सहज कर देती है। जब स्नेह में समा जाते हो तो कोई भी परिस्थिति सहज अनुभव करते हो। बापदादा भी कहते हैं कि सदा स्नेह के सागर में समाये रहो। स्नेह छत्रछाया है, जिस छत्रछाया के अन्दर कोई माया की परछाई भी नहीं पड़ सकती। सहज मायाजीत बन जाते हो। जो निरन्तर स्नेह में रहता है उसको किसी भी बात की मेहनत नहीं करनी पड़ती है। स्नेह सहज बाप समान बना देता है। स्नेह के पीछे कुछ भी समर्पित करना सहज होता है।

तो आज भी अमृतवेले से हर एक बच्चे ने स्नेह की माला बाप को डाली और बाप ने भी स्नेही बच्चों को स्नेह की माला डाली। जैसे इस विशेष स्मृति दिवस में अर्थात् स्नेह के दिन में स्नेह में समाये रहे ऐसे ही सदा समाये रहो, तो मेहनत का पुरुषार्थ करना नहीं पड़ेगा। एक है स्नेह के सागर में समाना और दूसरा है स्नेह के सागर में थोड़े समय के लिए डुबकी लगाना। तो कई बच्चे समाये हुए नहीं रहते हैं, जल्दी से बाहर निकल आते हैं। इसलिए सहज मुश्किल हो जाता है। तो समाना आता है? समाने में ही मज़ा है। ब्रह्मा बाप ने सदा बाप का स्नेह दिल में समाया, इसका यादगार कलकत्ता में दिखाया है।

अब बापदादा सभी बच्चों से यही चाहते हैं कि बाप के प्यार का सबूत समान बनने का दिखाओ। सदा संकल्प में समर्थ हो, अब व्यर्थ के समाप्ति समारोह मनाओ क्योंकि व्यर्थ समर्थ बनने नहीं देंगे और जब तक आप

निमित्त बने हुए बच्चे सदा समर्थ नहीं बने हैं तो विश्व की आत्माओं को समर्थी कैसे दिलायेंगे! सर्व आत्मायें शक्तियों से बिल्कुल खाली हो, शक्तियों की भिखारी बन चुकी हैं। ऐसे भिखारी आत्माओं को हे समर्थ आत्मायें, इस भिखारीपन से मुक्त करो। आत्मायें आप समर्थ आत्माओं को पुकार रही हैं - हे मुक्तिदाता के बच्चे मास्टर मुक्तिदाता, हमें मुक्ति दो। क्या यह आवाज आपके कानों में नहीं पड़ता? सुनने नहीं आता? अब तक अपने को ही मुक्त करने में बिजी हैं क्या? विश्व की आत्माओं को बेहद स्वरूप से मास्टर मुक्तिदाता बनने से स्वयं की छोटी-छोटी बातों से स्वत: ही मुक्त हो जायेंगे। अब समय है कि आत्माओं की पुकार सुनो। पुकार सुनने आती है या नहीं आती है? परेशान आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली दो। यही है ब्रह्मा बाप को फ़ालो करना।

आज विशेष ब्रह्मा बाप को याद ज़्यादा किया ना! ब्रह्मा बाप ने भी सभी बच्चों को स्मृति और समर्थी स्वरूप से याद किया। कई बच्चों ने ब्रह्मा बाप से रूहरूहान करते मीठा-मीठा उलहना भी दिया कि आप इतना जल्दी क्यों चले गये? और दूसरा उलहना दिया कि हम सब बच्चों से छुट्टी लेकर क्यों नहीं गये? तो ब्रह्मा बाप ने बोला कि मैंने भी शिव बाप से पूछा कि हमें अचानक क्यों बुला लिया? तो बाप ने बोला - अगर आपको कहते कि छुट्टी लेके आओ तो क्या आप बच्चों को छोड़ सकते थे, या बच्चे आपको छोड़ सकते थे? आप अर्जुन का तो यही यादगार है कि अन्त में नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप ही रहे हैं। तो ब्रह्मा बाप मुस्कराये और बोले कि यह तो कमाल थी जो बच्चों ने भी नहीं समझा कि जा रहे हैं और ब्रह्मा ने भी नहीं समझा जा रहा हूँ। सामने होते भी दोनों तरफ चुप रहे क्योंकि समय प्रमाण सन शोज़ फादर का पार्ट ड्रामा की नूंध थी, इसको कहते हैं वाह ड्रामा वाह! सेवा का परिवर्तन नूंधा हुआ था। ब्रह्मा बाप को बच्चों का बैकबोन बनना था। तो अव्यक्त रूप में फास्ट सेवा का पार्ट बजाना ही था।

विशेष आज डबल विदेशियों ने बहुत मीठे-मीठे उलहने दिये हैं। डबल

फारेनर्स ने उलहने दिये ? डबल फारेनर्स ने ब्रह्मा बाप को बोला सिर्फ दो तीन साल आप रुक जाते तो हम देख तो लेते। तो ब्रह्मा बाप ने हंसी में बोला, हंसी की - तो ड्रामा से बात करो, ड्रामा ने ऐसा क्यों किया ? लेकिन यह लास्ट सो फास्ट का एक्जैम्पुल बनना ही था - चाहे भारत में, चाहे विदेश में। इसलिए अभी लास्ट सो फास्ट का प्रत्यक्ष सबूत दिखाओ। जैसे आज समर्थ दिवस मनाया, ऐसे ही अब हर दिन समर्थ दिवस हो। किसी भी प्रकार की हलचल न हो। जो ब्रह्मा बाप ने आज के दिन तीन शब्दों में शिक्षा दी, **(निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी)** इन तीन शब्दों के शिक्षा स्वरूप बनो। मनसा में निराकारी, वाचा में निरहंकारी, कर्मणा में निर्विकारी। सेकण्ड में साकार स्वरूप में आओ, सेकण्ड में निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ। यह अभ्यास सारे दिन में बार-बार करो। ऐसे नहीं सिर्फ याद में बैठने के टाइम निराकारी स्टेज में स्थित रहो लेकिन बीच-बीच में समय निकाल इस देहभान से न्यारे निराकारी आत्मा स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करो। कोई भी कार्य करो, कार्य करते भी यह अभ्यास करो कि मैं निराकार आत्मा इस साकार कर्मेन्द्रियों के आधार से कर्म करा रही हूँ। निराकारी स्थिति करावनहार स्थिति है। कर्मेन्द्रियां करनहार हैं, आत्मा करावनहार है। तो निराकारी आत्म स्थिति से निराकारी बाप स्वत: ही याद आता है। जैसे बाप करावनहार है ऐसे मैं आत्मा भी करावनहार हूँ। इसलिए कर्म के बन्धन में बंधेंगे नहीं, न्यारे रहेंगे क्योंकि कर्म के बन्धन में फंसने से ही समस्यायें आती हैं। सारे दिन में चेक करो - करावनहार आत्मा बन कर्म करा रही हूँ? अच्छा! अभी मुक्ति दिलाने की मशीनरी तीव्र करो।

अच्छा - इस बारी जो इस कल्प में इस बार आये हैं, वह हाथ उठाओ। तो नये-नये आने वाले बच्चों को बापदादा विशेष याद-प्यार दे रहे हैं कि समय पर बाप को पहचान बाप से वर्से के अधिकारी बन गये हैं। सदा अपने इस भाग्य को याद रखना कि हमने बाप को पहचान लिया।

अच्छा - डबल फारेनर्स हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। डबल फारेनर्स को बापदादा कहते हैं कि ब्रह्मा के संकल्प की पैदाइस हैं। एक हैं डायरेक्ट मुख द्वारा वंशावली और दूसरे हैं संकल्प द्वारा वंशावली। तो संकल्प शक्ति बड़ी

महान होती है। जैसे संकल्प शक्ति फास्ट है, ऐसे ही आपकी रचना डबल फारेनर्स फास्ट पुरुषार्थ और फास्ट प्रालब्ध अनुभव करने वाले हैं इसलिए सारे ब्राह्मण परिवार में डबल फारेनर्स डबल सिकीलधे हो। भारत के भाई-बहनें आपको देख करके खुश होते हैं, वाह डबल फारेनर्स वाह! डबल फारेनर्स को खुशी होती है ना? कितनी खुशी है? बहुत है? कोई ऐसी चीज़ ही नहीं है जिससे तुलना कर सकें। डबल फारेन में भी सुन रहे हैं, देख भी रहे हैं। अच्छा है, यह साइंस के साधन आपको बेहद की सेवा करने में बहुत साथ देंगे और सहज सेवा करायेंगे। आपकी स्थापना के कनेक्शन से ही यह साइंस की भी तीव्रगति हुई है।

अच्छा - सभी पाण्डव समर्थ हैं ना? कमजोर तो नहीं, सब समर्थ हैं? और शक्तियां, समान बाप? शक्ति सेना हो। शक्तियों की शक्ति मायाजीत बनाने वाली है। अच्छा।

आज विशेष शृंगार करने वाले भी आये हैं (कलकत्ता के भाई-बहनें फूल लेकर आये हैं, सब जगह फूलों से बहुत अच्छा शृंगार किया है) यह भी स्नेह की निशानी है। अच्छा है अपना स्नेह का सबूत दिया। अच्छा। टीचर्स हाथ उठाओ। हर ग्रुप में टीचर्स बहुत आती हैं। टीचर्स को चांस अच्छा मिल जाता है। सेवा का प्रत्यक्ष फल मिल जाता है। अच्छा है अभी अपने फीचर्स द्वारा सभी को फ्यूचर का साक्षात्कार कराओ। सुना, क्या करना है? अच्छा।

मधुबन वाले हाथ उठाओ – बहुत अच्छा। मधुबन वालों को चांस बहुत मिलते हैं। इसीलिए बापदादा कहते हैं मधुबन वाले हैं रूहानी चांसलर्स। चांसलर हो ना? सेवा करनी पड़ेगी। फिर भी सबको मधुबन निवासी राज़ी तो कर लेते हैं ना! इसीलिए बापदादा मधुबन वालों को कभी भूलते नहीं हैं। मधुबन निवासियों को खास याद करते हैं। मधुबन वालों को क्यों याद करते हैं? क्योंकि मधुबन वाले बाप के प्यार में मैजारिटी पास हैं। मैजारिटी, बाप से प्यार अटूट है। कम नहीं हैं मधुबन वाले, बहुत अच्छे हैं।

इन्दौर ज़ोन के सेवाधारी आये हैं - इन्दौर ज़ोन वाले हाथ उठाओ। बहुत

हैं, अच्छा है। सेवा करना अर्थात् समीप आने का फल खाना। सेवा का चांस लेना अर्थात् पुण्य जमा करना। दुआयें जमा करना। तो सभी सेवाधारियों ने अपना पुण्य का खाता जमा किया। यह दुआयें वा पुण्य एकस्ट्रा लिफ्ट का काम करती हैं।

अच्छा - देश वा विदेश जो दूर बैठे भी समीप हैं, सभी बच्चों को बापदादा स्नेह के दिवस के रिटर्न में पदमगुणा स्नेह का याद-प्यार दे रहे हैं। बापदादा देखते हैं कि कहाँ क्या बजता है, कहाँ क्या टाइम होता है लेकिन जागती ज्योति अथक बन सुन रहे हैं और खुश हो रहे हैं। बापदादा बच्चों की खुशी देख रहे हैं। बोलो, सभी खुशी में नाच रहे हो ना? सभी कांध हिला रहे हैं, हाँ बाबा। जनक बच्ची भी बहुत मीठा-मीठा मुस्करा रही है। वैसे तो सब बाप को याद हैं लेकिन कितनों का नाम लें। अनेक बच्चे हैं इसलिए बापदादा कहते हैं हर एक बच्चा अपने नाम से पर्सनल याद-प्यार स्वीकार कर रहे हैं और करते रहना। अच्छा - अभी एक सेकण्ड में निराकारी स्थिति में स्थित हो जाओ। (बापदादा ने ड्रिल कराई)

लिविंग वैल्यूज़ की ट्रेनिंग चल रही है:- अच्छा सेवा का साधन है। लिविंग वैल्यू कराते-कराते अपनी लवली लिविंग का अभ्यास बढ़ाते रहना।

अच्छा - बापदादा आज एक बात गुल्ज़ार बच्ची को कह रहे थे, विशेष मुबारक दे रहे थे कि ब्रह्मा तन की सेवा जैसा इस रथ ने भी ८८ वर्ष पूरे किये। यह भी ड्रामा में पार्ट है। बाप की मदद और बच्ची की हिम्मत, दोनों मिलकर पार्ट बजाते हैं।

अच्छा - सर्व सदा स्नेह के सागर में समाये हुए, सदा लव में लीन रहने वाले, सदा करावनहार आत्मा स्वरूप में स्थित रहने वाले, सदा तीन शब्दों के ''शिव-मंत्र'' को प्रत्यक्ष जीवन में लाने वाले, सदा बाप के समान मास्टर मुक्तिदाता बन विश्व की आत्माओं को मुक्ति दिलाने वाले ऐसे सर्व श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दादी जी से

आज के दिन बाप ने बच्चों को विशेष विश्व के सामने प्रत्यक्ष किया। बाप करावनहार बने और बच्चों को करनहार बनाया। अच्छा है, यह स्नेह की लहर सभी को समा देती है। अच्छा - शरीर को चलाने की विधि आ गई है ना! चलाते-चलाते बाप समान अव्यक्त बन जायेंगी। सहज पुरुषार्थ है - दुआयें। सारे दिन में कोई भी नाराज़ नहीं हो, दुआयें मिलें - यह है फर्स्ट क्लास पुरुषार्थ। सहज भी है, फर्स्ट भी है। ठीक है ना! शरीर कैसे भी हो लेकिन आत्मा तो शक्तिशाली है ना! तो जो आप सभी बच्चों ने [illegible] वर्ष तपस्या की, वह तपस्या का बल सेवा करा रहा है। अभी तो आपके बहुत साथी बन गये हैं। अच्छे-अच्छे सेवा के साथी हैं। बस आपको देखकर खुश होते हैं, यही बहुत है। ठीक है।

(वरिष्ठ बड़े भाइयों से) – ड्रामानुसार जो सेवा के प्लैन बनते हैं, वह अच्छे बन रहे हैं और हर एक सदा संगठन में स्नेह वा दुआयें लेने के लिए बालक सो मालिक का पाठ पक्का कर एक दो को आगे बढ़ाते हुए, एक दो के विचारों को भी सम्मान देते हुए आगे बढ़ते हैं तो सफलता ही सफलता है। सफलता तो होनी ही है। लेकिन अभी जो निमित्त आत्मायें हैं उन्हों को विशेष स्नेह के सम्बन्ध में लाना; यह सबके पुरुषार्थ को तीव्र बनाना है। स्नेह, नि:स्वार्थ स्नेह, जहाँ नि:स्वार्थ स्नेह है वह सम्मान देंगे भी और लेंगे भी। वर्तमान समय स्नेह की माला में सबको पिरोना, यही विशेष आत्माओं का कार्य है और इससे ही, स्नेह संस्कारों को परिवर्तन भी करा सकता है। ज्ञान हर एक के पास है लेकिन स्नेह कैसे भी संस्कार वाले को समीप ला सकता है। सिर्फ स्नेह के दो शब्द सदा के लिए उनके जीवन का सहारा बन सकता है। नि:स्वार्थ स्नेह जल्द से जल्द माला तैयार कर देगा। ब्रह्मा बाप ने क्या किया? स्नेह से अपना बनाया। तो आज इसकी आवश्यकता है। है ना ऐसे!

(सोनीपत के लिए मीटिंग हो रही है, वहाँ अनुभूति कराने के लिए साधनों का उपयोग कैसे करें) वह तो प्लैन बना रहे हैं, हर एक के संकल्प, विचारों को जो विशेष मैजारिटी स्वीकार करें, वह बनाओ। अनुभूति तब

करा सकेंगे जब अनुभूति स्वरूप बनेंगे। अच्छा।

03-02-2002

लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ, सर्व खज़ानों में सम्पन्न बनो

आज सर्व खज़ानों के मालिक अपने खज़ानों से सम्पन्न बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा सर्व खज़ानों से सम्पन्न है। जो सम्पन्न होता है उनकी निशानी सदा प्राप्ति स्वरूप, तृप्त आत्मा दिखाई देगी। सदा खुश नज़र आयेगी क्योंकि भरपूर है। तो हर एक अपने से पूछे कि हमारे पास कितने खजाने जमा हैं? यह अविनाशी खजाने अब भी प्राप्त हैं और भविष्य में अनेक जन्म साथ रहेंगे। यह खजाने खत्म नहीं होने वाले हैं। सबसे पहला खज़ाना है - ज्ञान का खज़ाना, जिस ज्ञान के खजाने से इस समय भी आप सभी मुक्ति और जीवनमुक्ति का अनुभव कर रहे हो। जीवन में रहते, पुरानी दुनिया में रहते, तमोगुणी वायुमण्डल में रहते ज्ञान के खजाने के आधार से इन सब वायुमण्डल, वायब्रेशन से न्यारे मुक्त हो, कमल पुष्प समान न्यारे मुक्त आत्मायें दु:ख से, चिंताओं से, अशान्ति से मुक्त हो। जीवन में रहते बुराइयों के बन्धनों से मुक्त हो। व्यर्थ संकल्पों के तूफान से मुक्त हो। हैं मुक्त? सभी हाथ हिला रहे हैं।

तो मुक्ति और जीवनमुक्ति इस ज्ञान के खजाने का फल है, प्राप्ति है। चाहे व्यर्थ संकल्प आने की कोशिश करते हैं, निगेटिव भी आते हैं लेकिन ज्ञान अर्थात् समझ है कि व्यर्थ संकल्प वा निगेटिव का काम है आना और आप ज्ञानी तू आत्माओं का काम है इनसे मुक्त, न्यारे और बाप के प्यारे रहना। तो चेक करो - ज्ञान का खज़ाना प्राप्त है? भरपूर है? सम्पन्न है या कम है? अगर कम है तो उसको जमा करो, खाली नहीं रहना।

ऐसे ही योग का खज़ाना - जिससे सर्व शक्तियों की प्राप्ति होती है। तो अपने को देखो योग के खजाने द्वारा सर्व शक्तियां जमा हैं? सर्व? एक भी शक्ति अगर कम होगी तो समय पर धोखा दे देगी। आप सबका टाइटल -

मास्टर सर्वशक्तिवान है, शक्तिवान नहीं, सर्वशक्तिवान। तो सर्व शक्तियों का खज़ाना योगबल द्वारा जमा है? भरपूर है, प्राप्ति स्वरूप है वा कमी है? क्यों? अभी अपनी कमी को भर सकते हो। अभी चांस है। फिर सम्पन्न करने का समय समाप्त हो जायेगा तो कमी रह जायेगी। चेक करो - एक-एक शक्ति को सामने लाओ और सारे दिन की दिनचर्या में चेक करो - अगर परसेन्टेज़ भी कम है तो फुल पास नहीं कहेंगे क्योंकि आप सबका लक्ष्य है, किसी भी बच्चे से पूछते हैं कि फुल पास होना है या हाफ पास? तो सभी कहते हैं कि हम तो सूर्यवंशी बनेंगे, चन्द्रवंशी नहीं बनेंगे। चन्द्रवंशी बनेंगे? बापदादा बहुत अच्छा तख्त देंगे, बनेंगे चन्द्रवंशी? इण्डिया वाले सूर्यवंशी बन जाएं, फारेन वाले चन्द्रवंशी बन जाएं, बनेंगे? नहीं बनेंगे? सूर्यवंशी बनना है? बनना ही है। यह तो बापदादा चिटचैट कर रहे हैं। जब सूर्यवंशी बनना ही है, दृढ़ निश्चय है, बाप से और स्वयं से प्रतिज्ञा कर ली है तो अब से किसी भी शक्ति की परसेन्टेज़ कम नहीं हो। अगर कहेंगे सरकमस्टांश अनुसार, समस्याओं अनुसार परसेन्टेज़ कम रह गई तो ८४ कला बन जायेंगे। इसलिए आजकल बापदादा चारों ओर के सभी बच्चों का पोतामेल, रजिस्टर चेक कर रहा है। बापदादा के पास भी हर एक का रजिस्टर है क्योंकि समय के अनुसार पहले ही बापदादा बच्चों को सुना रहे हैं कि समय की रफ्तार अनुसार अभी कब नहीं कहो, अब। कब हो जायेगा, कर लेंगे....होना तो है ही.. यह नहीं सोचो। होना तो है नहीं, अभी-अभी करना ही है। समय की रफ्तार तीव्र हो रही है इसलिए जो लक्ष्य रखा है बाप समान बनने का, फुल पास होने का, १०८ कला सम्पन्न बनने का, तो बापदादा भी यही चाहते हैं कि लक्ष्य और प्रैक्टिकल में लक्षण समान हों। जब लक्ष्य और लक्षण दोनों समान होंगे तब ही बाप समान सहज बन जायेंगे। तो चेक करो - हो जायेगा, बन ही जायेंगे...यह अलबेलापन है। जो करना है, जो बनना है, जो लक्ष्य है, वह अभी से ही करना है, बनना है। कभी शब्द नहीं लगाओ, अभी-अभी।

तो ज्ञान का खज़ाना, योग का खज़ाना और भी धारणाओं का खज़ाना है। जिससे (धारणाओं से) गुणों का खज़ाना जमा हो जाता है। गुणों में भी जैसे सर्व शक्तियां हैं, ऐसे ही सर्वगुण हैं, सिर्फ गुण नहीं हैं, सर्वगुण हैं। तो सर्व गुण हैं या सोचते हो एक दो गुण कम हुआ, तो क्या हुआ, चलेगा? नहीं चलेगा। तो सर्व गुणों का खज़ाना जमा है? कौन से गुण की कमी है उसको चेक करके भरपूर हो जाओ।

चौथी बात है - सेवा। सेवा द्वारा सभी को अनुभव है, जब भी मनसा सेवा या वाणी द्वारा वा कर्म द्वारा भी सेवा करते हो तो उसकी प्राप्ति आत्मिक खुशी मिलती है। तो चेक करो सेवा द्वारा खुशी की अनुभूति कहाँ तक की है? अगर सेवा की और खुशी नहीं हुई, तो वह सेवा यथार्थ सेवा नहीं है। सेवा में कोई न कोई कमी है, इसलिए खुशी नहीं मिलती। सेवा का अर्थ है आत्मा अपने को खुशनुमः, खिला हुआ रूहानी गुलाब, खुशी के झूले में झूलने वाला अनुभव करेगी। तो चेक करो - सारा दिन सेवा की लेकिन सारे दिन की सेवा की तुलना में इतनी खुशी हुई या सोच-विचार ही चलते रहे, यह नहीं ये, यह नहीं ये... ? और आपकी खुशी का प्रभाव एक तो सेवा स्थान पर, दूसरा सेवा साथियों पर, तीसरा जिन आत्माओं की सेवा की उन आत्माओं पर पड़े, वायुमण्डल भी खुश हो जाए। यह है सेवा का खज़ाना खुशी।

और बात - चार सबजेक्ट तो आ ही गई। और है सम्बन्ध-सम्पर्क, वह भी बहुत ज़रूरी है, क्यों? कई बच्चे समझते हैं बापदादा से तो सम्बन्ध है ही। परिवार में हुआ नहीं हुआ, क्या बात है, (क्या हर्जा है) बीज से तो है ही। लेकिन आपको विश्व का राज्य करना है ना! तो राज्य में सम्बन्ध में आना ही होगा। इसलिए सम्बन्ध-सम्पर्क में आना ही है लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में यथार्थ खज़ाना मिलता है दुआयें। बिना सम्बन्ध-सम्पर्क के आपके पास दुआओं का खज़ाना जमा नहीं होगा। माँ बाप की दुआयें तो हैं, लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में भी दुआयें लेनी हैं। अगर दुआयें नहीं मिलती, फीलिंग

नहीं आती तो समझो सम्बन्ध-सम्पर्क में कोई कमी है। यथार्थ रीत अगर सम्बन्ध-सम्पर्क है तो दुआओं की अनुभूति होनी चाहिए। और दुआओं की अनुभूति क्या होगी? अनुभवी तो हो ना! अगर सेवा से दुआयें मिलती हैं तो दुआयें मिलने का अनुभव यही होगा जो स्वयं भी सम्बन्ध में आते, कार्य करते डबल लाइट (हल्का) होगा, बोझ नहीं महसूस करेगा और जिनकी सेवा की, सम्बन्ध-सम्पर्क में आये वह भी डबल लाइट फील करेगा। अनुभव करेगा कि यह सम्बन्ध में सदा हल्का अर्थात् इज़ी है, भारी नहीं रहेगा। सम्बन्ध में आऊं, नहीं आऊं... लेकिन दुआयें मिलने के कारण दोनों तरफ नियम प्रमाण, ऐसा इज़ी भी नहीं - जैसे कहावत है, ज्यादा मीठे पर चींटियाँ बहुत आती हैं। तो इतना इज़ी भी नहीं, लेकिन डबल लाइट रहेगा। तो बापदादा कहते हैं - अपने खजाने चेक करो। समय दे रहे हैं। अभी समाप्ति का बोर्ड नहीं लगा है। इसलिए चेक करो और बढ़ते चलो।

बापदादा का बच्चों से प्यार है ना! तो बापदादा समझते हैं कोई भी बच्चा पीछे नहीं रह जाए। हर एक बच्चा आगे से आगे जाए। चलते-चलते देह-अभिमान आ जाता है। स्वमान और देह-अभिमान। देह-अभिमान का कारण है स्वमान में कमी हो जाती है। तो देह-अभिमान को मिटाने का बहुत सहज साधन है - देह-अभिमान आने का एक ही अक्षर है, एक ही शब्द है, वह जानते भी हो। देह-अभिमान का एक शब्द कौन-सा है? (मैं) अच्छा तो कितना बारी मैं-मैं कहते हो? सारे दिन में कितने बारी ''मैं'' बोलते हो, कभी नोट किया है? अच्छा एक दिन नोट करना। बार-बार मैं शब्द तो आता ही है। लेकिन मैं कौन? पहला पाठ है, मैं कौन? जब देह-अभिमान में मैं कहते हो, लेकिन वास्तव में मैं हूँ कौन? आत्मा या देह? आत्मा ने देह धारण की, या देह ने आत्मा धारण की? क्या हुआ? आत्मा ने देह धारण की। ठीक है ना? तो आत्मा ने देह धारण की, तो मैं कौन? आत्मा ना! तो सहज साधन है, जब भी मैं शब्द बोलो, तो यह याद करो कि मैं कौन-सी आत्मा हूँ? आत्मा निराकार है, देह साकार है। निराकार आत्मा ने साकार देह धारण की,

तो जितना बारी भी मैं-मैं शब्द बोलते हो, उतना समय यह याद करो कि मैं निराकार आत्मा साकार में प्रवेश किया है। जब निराकार स्थिति याद होगी तो निरंहकारी स्वत: हो जायेंगे। देह-भान खत्म हो जायेगा। वही पहला पाठ मैं कौन? यह स्मृति में रख करके मैं कौन-सी आत्मा हूँ, आत्मा याद आने से निराकारी स्थिति पक्की हो जायेगी। जहाँ निराकारी स्थिति होगी वहाँ निरहंकारी, निर्विकारी हो ही जायेंगे। तो कल से नोट करना - जब मैं शब्द कहते हो तो क्या याद आता है? और जितना बारी मैं शब्द यूज़ करो उतना बारी निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्वत: हो जायेंगे। अच्छा -

आज यूथ ग्रुप आया है। यूथ बहुत हैं। बापदादा यूथ ग्रुप को वरदान देते हैं कि सदा आबाद रहना। एक भी खज़ाना बरबाद नहीं करना, आबाद रहना, आबाद करना। लौकिक गुरु लोग आशीर्वाद देते हैं आयुश्वान भव और बापदादा कहते हैं शरीर की आयु तो जितनी है उतनी रहेगी इसीलिए शरीर की आयु के हिसाब से आयुश्वान भव का वरदान नहीं देते हैं लेकिन इस ब्राह्मण जीवन में सदा आयुश्वान भव। क्यों? ब्राह्मण सो देवता बनेंगे। तो आयुश्वान तो होंगे ना! यूथ की एक विशेषता होती है। आप यूथ अपनी विशेषता को जानते हो? क्या विशेषता होती है, जानते हो? क्या विशेषता है आपमें? (जो चाहे वह कर सकते हैं) अच्छा - कर सकते हो? अच्छी बात है, दुनिया के हिसाब से कहते हैं, यूथ जिद्दी बहुत होते हैं, जो सोचेंगे वह करके दिखायेंगे। वह लोग उल्टा कहते हैं लेकिन यहाँ ब्राह्मण यूथ जिद्दी नहीं हैं लेकिन अपनी प्रतिज्ञा पर पक्के रहने वाले हैं। हटने वाले नहीं हैं। ऐसे हो यूथ? हाथ उठाना तो बहुत सहज है। बापदादा खुश है हाथ उठाना, यह भी हिम्मत है ना। लेकिन रोज़ अमृतवेले बाप से की हुई प्रतिज्ञा कि हम इस ब्राह्मण जीवन की प्राप्ति से, सेवा से कभी भी संकल्प में भी हटेंगे नहीं। इस हिम्मत को, प्रतिज्ञा को रोज़ दोहराओ और बार-बार चेक करो कि हिम्मत जो रखी, संकल्प किया वह प्रैक्टिकल में हो रहा है?

गवर्मेन्ट तो कहती है, बस दो चार लाख बन जाएं तो भी ठीक है।

बापदादा कहते हैं - यह ब्राह्मण यूथ एक-एक लाख के समान हैं। इतने मजबूत हैं। हैं? देखो, ऐसे नहीं घर जाकर फिर लिख दो बाबा माया आ गई, संस्कार आ गया, समस्या आ गई। समस्याओं के समाधान स्वरूप बनो। समस्यायें तो आयेंगी लेकिन अपने से पूछो मैं कौन? समाधान स्वरूप हूँ या समस्या से हार खाने वाला हूँ? आप सबका टाइटल क्या है - विजयी रत्न या हार खाने वाले रत्न? विजयी रत्न हैं। ब्राह्मण जन्म होते ही बापदादा ने हर ब्राह्मण के मस्तक में विजय का तिलक अमर लगा दिया। तो अमरभव के वरदानी हो। अभी यह अपने से वायदा करो, ऐसे तो वायदा कहलायेंगे तो सब कर लेंगे लेकिन अपने मन में अपने से वायदा करो - कभी भी संस्कार के वश नहीं होंगे जो बाप के संस्कार वह मुझ ब्राह्मण आत्मा के संस्कार। जो द्वापर, कलियुग के संस्कार हैं वह मेरे संस्कार नहीं क्योंकि बाप के संस्कार नहीं हैं। यह तमोगुणी संस्कार ब्राह्मणों के संस्कार हैं? नहीं है ना! तो आप कौन हो? ब्राह्मण हो ना!

बापदादा को भी यूथ ग्रुप पर नाज़ है। देखो, दादियों को भी यूथ पर नाज़ है। दादी को प्यार है ना यूथ से। एकस्ट्रा प्यार है। कुमार हैं सुकुमार। कुमार नहीं, सुकुमार हैं। एक-एक कुमार विश्व के कुमारों का परिवर्तन कर दिखाने वाले। अच्छा, कुमारों को काम दें? हिम्मत है? करना पड़ेगा। कुमारियां करेंगी?

तो काम दे रहे हैं ध्यान से सुनना। तो जो अगली सीज़न होगी, अगली सीजन में कुमारों का ऐसे ही स्पेशल प्रोग्राम रखेंगे लेकिन.... लेकिन भी है। ज्यादा काम नहीं देते हैं एक-एक कुमार DD-DD कुमारों का, छोटा-सा हाथ का कंगन तैयार करके लाना। हाथ में कंगन पड़ता है ना। ब्रह्मा बाप को सदैव हाथ में फूलों का कंगन डालते हैं। तो एक-एक कुमार, कच्चे-कच्चे नहीं लाना, पक्के-पक्के लाना। तो मधुबन में तो आयें फिर घर जायें तो बदल जाएं! नहीं। ऐसे पक्के बनाकर लाना जो बापदादा देख-देख कहे वाह कुमार वाह! ऐसे तैयार हैं? करेंगे, ऐसे? थोड़ा सोचो। ऐसे ही हाथ नहीं उठा लो। करना पड़ेगा। बनाना पड़ेगा। डबल फारेनर्स भी करेंगे? डबल फारेनर्स में कुमार हाथ उठाओ। तो आप भी DD लायेंगे ना? फारेनर्स भी लायेंगे,

इण्डिया वाले भी लायेंगे। फिर जो फर्स्टक्लास क्वालिटी लायेंगे उसको इनाम देंगे। इनाम बढ़िया देंगे, घटिया नहीं देंगे। प्यार है ना कुमारों से। अगर गवर्मेन्ट को ज्यादा में ज्यादा कुमार पॉजिटिव कर्म करने वाले मिल जाएं तो गवर्मेन्ट कितना खुश होगी। अगर आप ८८-८८ कुमार लायेंगे तो सारा हाल कुमारों से भरेंगे फिर गवर्मेन्ट को बुलायेंगे, देखो यह कुमार। लेकिन लाने पड़ेंगे, बनाने पड़ेंगे। अगर अपनी स्थिति, लक्ष्य और लक्षण को समान रखेंगे तो सेवा में सफलता होगी या नहीं होगी - यह संकल्प भी नहीं उठ सकता। हुई पड़ी है। सिर्फ आपको निमित्त बनना पड़ेगा। यह प्रतिज्ञा सदा रिवाइज करते रहना। कमाल तो करनी ही है। अच्छा।

डबल विदेशी भी आये हैं। बापदादा कहते हैं कि डबल विदेशियों ने बापदादा का एक टाइटल प्रैक्टिकल में प्रत्यक्ष किया है, वह कौन-सा? (विश्व-कल्याणकारी) पहले जब स्थापना हुई तो भारत कल्याणकारी बने लेकिन जब से डबल फारेनर्स ब्राह्मण आत्मायें बने तो बाप का विश्व-कल्याणकारी टाइटल प्रैक्टिकल में प्रत्यक्ष हुआ। इसलिए बापदादा को डबल फारेनर्स के ऊपर भी विशेष नाज़ है। बापदादा ने देखा है कि डबल फारेनर्स को एक सेवा की धुन लगी हुई है, कोई भी कोना रह नहीं जाए।

(मुरली के बीच अचानक बापदादा के सामने दो कुमार स्टेज पर आ गये, जिन्हें हटाया गया)

अच्छा। अभी खेल में खेल देखा। अभी बापदादा कहते हैं साक्षी होकर खेल देखा, इन्जाय किया, अभी एक सेकण्ड में एकदम देह से न्यारे पावरफुल आत्मिक रूप में स्थित हो सकते हो? फुलस्टाप।

(बापदादा ने बहुत पावरफुल ड्रिल कराई)

अच्छा - यही अभ्यास हर समय बीच-बीच में करना चाहिए। अभी-अभी कार्य में आये, अभी-अभी कार्य से न्यारे, साकारी सो निराकारी स्थिति में स्थित हो जाएं। ऐसे ही यह भी एक अनुभव देखा, कोई समस्या भी आती है तो ऐसे ही एक सेकण्ड में साक्षी दृष्टा बन, समस्या को एक साइडसीन

समझ, तूफान को एक तोहफा समझ उसको पार करो। अभ्यास है ना? आगे चलकर तो ऐसे अभ्यास की बहुत आवश्यकता पड़ेगी। फुलस्टाप। क्वेश्चन मार्क नहीं, यह क्यों हुआ, यह कैसे हुआ? हो गया। फुलस्टाप और अपने फुल शक्तिशाली स्टेज पर स्थित हो जाओ। समस्या नीचे रह जायेगी, आप ऊंची स्टेज से समस्या को साइडसीन देखते रहेंगे। अच्छा।

जो दूर से दूर बैठे देख रहे हैं, चाहे भारत में चाहे फारेन में सुन भी रहे हैं, देख भी रहे हैं, उन सभी दूर बैठे दिल के समीप बच्चों को बापदादा पहले याद-प्यार दे रहे हैं क्योंकि बापदादा जानते हैं कोई का क्या टाइम होता है, कोई का क्या टाइम होता है, फिर भी रात को दिन बनाके, दिन को रात बनाकर बैठ रहे हैं। यह है बच्चों और बाप का प्यार और बीच में बापदादा विज्ञानी बच्चों को भी मुबारक देते हैं कि आप बच्चों के लिए यह साइंस के साधन निकाले हैं। इसीलिए उन बच्चों को भी बापदादा मुबारक दे रहे हैं। आपके लिए ही यह साधन ८०० वर्ष के अन्दर-अन्दर निकले हैं। तो कमाल है ना साइंस वालों की, थैंक्स है ना! अच्छा।

चारों ओर के सर्व खज़ानों से सम्पन्न आत्माओं को, सदा हर समय प्राप्तियों से भरपूर, मुस्कराते हुए हर्षित रहने वाली आत्माओं को, सदा बाप से की हुई प्रतिज्ञा को जीवन में प्रत्यक्ष करने वाले ज्ञानी तू आत्मायें, योगी तू आत्मायें बच्चों को, सदा लक्ष्य और लक्षण को समान करने वाले बाप समान आत्माओं को, सदा हर समय सर्व खज़ानों का स्टॉक और स्टॉप लगाने वाले तीव्र पुरुषार्थी श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार, दिलाराम का दिल से याद-प्यार और नमस्ते।

ईस्टर्न, तामिलनाडु के सेवाधारी आये हैं – अच्छा जो सेवाधारी आये हैं वह हाथ उठाओ। बंगाल, बिहार, नेपाल, आसाम, उड़ीसा, तामिलनाडु....तामिलनाडु की (रोज़ी बहन) आ गई है (रोज़ी बहन की तबियत काफी समय से ठीक नहीं थी) देखो नया जीवन मिल गया है। मुबारक हो नये जीवन की। एक हाथ की ताली बजाओ।

तो सभी ने जो भी पाण्डव वा शक्तियां आई हैं, सेवा के निमित्त बनी हैं, उनको सेवा का प्रत्यक्ष फल खुशी तो मिल ही गई है। बापदादा कहते हैं यह बच्चों की होशियारी है, सहज पुरुषार्थ में दुआयें लेने के लिए पुण्य का खाता जमा करने का यह चांस बहुत अच्छा ले लेते हैं और जो जितना अथक सेवा करते हैं, उस अथक सेवाधारी का मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों खाते में जमा होता है। इसलिए जमा करने की सभी सेवाधारियों को मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा। सभी पहुँच जाते हैं।

दादी जी, दादी जानकी से

एक टर्न मिस किया। सेवा की तो मिस नहीं किया। बापदादा आप दोनों के जिम्मेवारी के ताज में सदा ही अमूल्य रत्न लगाते रहते हैं। जितना-जितना जिम्मेवारियां साकार रूप में बढ़ती जाती हैं, उतनी आप डबल लाइट बन पार्ट बजाती हो। बापदादा को विशेष खुशी है कि शक्तियों ने विजय का झण्डा अच्छा बुलन्द किया है। बाप तो गुप्त रहे, लेकिन बच्चों ने प्रत्यक्ष रूप में झण्डा लहराया है। (दादी जानकी कह रही हैं बाबा एक आश है, शान्तिधाम जाने के पहले सब भारत में इकट्ठे हों) हो जायेगा, वह भी कहाँ जायेंगे, होना ही है। अच्छा।

डा.अब्दुल कलाम, डा.पिल्लई, डा.सेल्वामूर्ति भारत के साइंटिस्टों से

बापदादा आप सबका भाग्य देख हर्षित हो रहे हैं। आप आत्माओं द्वारा भी विशेष सेवा होनी है। कौन-सी सेवा करेंगे? (३D परसेन्ट लोग गरीब हैं, उसको दूर करने का संकल्प आ रहा है) हो जायेगी। आपका जो संकल्प है वह अभी समय आने वाला ही है, यह गरीबी रहनी ही नहीं है। जैसे भारत सबसे साहूकार था, वैसे ही अभी बनना ही है। तो आपका यह संकल्प पूरा होना है। अच्छा संकल्प है। कोई आत्मा सम्पर्क में आये तो आप सिर्फ मैसेन्जर बन यही मैसेज दो कि साइलेन्स और साइंस दोनों का बैलेन्स कैसे

रहे, यह परमात्मा की ब्लैसिंग दिला देंगे। अभी यही मैसेज देना है। बापदादा को खुशी है, तो आप चाहते हो कि बच्चों में उन्नति हो, बच्चे योग्य बनें, उसका प्लैन भी यहाँ बना रहे हैं। एज्युकेशन डिपार्टमेंट में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं तो आप भी सहयोगी बन जायेंगे और यह सब बच्चे सहयोगी रहेंगे तो एक दिन आयेगा जो आप कहेंगे वाह भारत वाह! भारत की आध्यात्मिक नॉलेज सभी को सुख-शान्ति का वरदान देगी। (साइंस और साइलेन्स का बैलेन्स भारत को स्वर्णिम बनायेगा) फालो ब्रह्मा बाबा। आपमें एक विशेषता है, उस विशेषता को काम में ले सकते हो, आपकी विशेषता नेचुरल यह है कि जो काम करते हो, वह पूरा करते हो, अधूरा नहीं छोड़ते। इसीलिए इस विशेषता से आपका संकल्प पूरा हो जायेगा। यह दोनों साथी भी बहुत अच्छे हैं। त्रिमूर्ति हो गये ना! तो जहाँ त्रिमूर्ति है वहाँ शिव बाबा है ही है। (यह भी कुमार हैं) ब्रह्मचारी भी है, ब्रह्माचारी भी है। (भ्राता सेल्वामूर्ति जी से) अच्छा है, यह हेल्थ का कर रहे हैं। हेल्थ में भी देखो सभी का दु:ख दूर होता है ना! तो सबका दु:ख दूर करना, यह भी कितना अच्छा कार्य है। इसीलिए हेल्थ वालों को नेक्स्ट गॉड कहा जाता है। इसलिए अच्छा है। हेल्थ के साथ, ज्ञान की वेल्थ भी मिल जायेगी आत्माओं को। अच्छी - निमित्त आत्मायें हो।

(डा. पिल्लई को पदम श्री का टाइटल मिला है और डा. अब्दुल कलाम जी को भारत रत्न का मिला है)

बाप तो पदमा, पदमा, पदमापति का टाइटल देते हैं। इनको भारत रत्न का टाइटल मिला है इसलिए भारत से प्यार है। अच्छा - अभी माइक बनेंगे। रूहानी माइक बनकर सेवा करेंगे।

आशा बहन से – अच्छा चल रहा है ना। सभी की दुआयें हैं। दुआयें ऐसी चीज़ हैं जो हर कार्य सहज कर देती हैं। अच्छा है।

रोज़ी बहन से – कितना अच्छा पार्ट आपका ड्रामा में है। यह भी हिसाब पूरा हुआ। जो हिसाब रहा हुआ था, वह पूरा किया। खुशी-खुशी से पूरा किया। यह हिसाब तो होता ही है सेवा के लिए। जो सेवाधारी हैं ना वह कहाँ

भी जायेंगे सेवा के बिना तो रह नहीं सकते और वह सेवा का फल दुआयें मिलती हैं। अच्छा है। (साथ में डा. भी आये हैं) बहुत अच्छा किया। ब्राह्मण आत्माओं की सेवा करने से दुआयें हैं। खुशी-खुशी से सेवा की, इसलिए सेवा का जमा हो गया।

मद्रास की टीचर्स से – यह सेवा सम्भाल रही हैं। अच्छा है, सेवा का चांस मिलना यह भी भाग्य की निशानी है तो सब भाग्यवान हो।

विदेश की बड़ी बहनों से – बापदादा को विशेष खुशी होती है कि हर एक अपना-अपना अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। हर एक अपना-अपना पार्ट बजाते स्वयं को भी आगे बढ़ा रहे हैं और सेवा को भी आगे बढ़ा रहे हैं। ड्रामानुसार निमित्त बने। अभी आगे भी प्लैन बनायेंगे ना! क्या करना है। कोई नवीनता करेंगे ना! अच्छा। बापदादा खुश है।

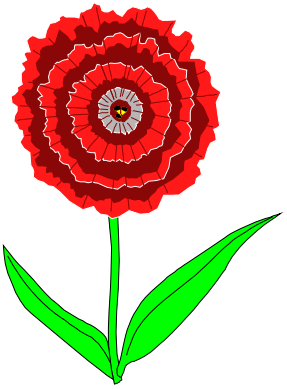

24-02-2002

बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए अपनी व दूसरों की वृत्ति को पॉजिटिव बनाओ

आज विश्व कल्याणी बापदादा अपने चारों ओर के बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। हर एक बच्चे के मन के उमंग देख भी रहे हैं और सुन भी रहे हैं। सभी के मन में लक्ष्य एक ही है कि जल्दी से जल्दी बाप समान बनें। लक्ष्य को देख, हिम्मत को देख, श्रेष्ठ संकल्प को देख बापदादा खुश हैं। साथ-साथ यह भी देख रहे हैं कि लक्ष्य सबका बहुत ऊँचे ते ऊंचा है लेकिन प्रत्यक्ष रूप में लक्षण नम्बरवार हैं। लक्ष्य और लक्षण समान होना अर्थात् बाप समान बनना। जो सेवा की स्टेज पर निमित्त बच्चे हैं, वह सदा एक ही संकल्प में रहते कि बाप को प्रत्यक्ष कैसे करें, कब होगा! ऐसे संकल्प चलता है ना? बाप फिर बच्चों से पूछते हैं, कि बच्चे आप सभी सम्पन्न, सम्पूर्ण स्वरूप में स्वयं कब प्रत्यक्ष होंगे? बाप का क्वेश्चन है बच्चों प्रति कि वह डेट भी फिक्स की है? कि वह डेट फिक्स नहीं होनी है?

डबल फारेनर्स कहते हैं कोई भी प्रोग्राम की डेट एक साल पहले फिक्स किया जाता है, ऐसे कहते हैं ना! तो बाप कहते हैं स्वयं को प्रत्यक्ष करने की डेट फिक्स की है? मीटिंग्स तो बहुत की हैं ना! करते ही रहते हैं। आज फलानी मीटिंग है, कल फलानी। अभी भी कितने मीटिंग वाले आये हैं, तीन मीटिंग वाले आज भी बैठे हैं। यह तो बहुत अच्छा, लेकिन इस मीटिंग की डेट कौन-सी है? जो सोचें वही बोल हो, वही कर्म हो। संकल्प, बोल और कर्म तीनों श्रेष्ठ लक्ष्य प्रमाण हो। बापदादा देखते हैं कि यह सर्व विश्व कल्याण के निमित्त बने हुए बच्चे, सर्व आत्माओं के कल्याणकारी प्रत्यक्ष रूप में स्टेज पर कब आयेंगे? हर एक गुप्त पुरुषार्थ में हैं, लगन में हैं, यह भी बापदादा देखते हैं। लेकिन इस विशेष संकल्प की लगन में मगन कब होंगे? लगन तो

है लेकिन निरन्तर इस संकल्प को सम्पन्न करने में मगन रहना अर्थात् निरन्तर इसी संकल्प को पूर्ण करने के प्रैक्टिकल स्वरूप में हो। अभी संकल्प और प्रत्यक्ष कर्म में अन्तर है। होना तो है ही और करना भी बच्चों को ही है। बाप तो बैकबोन है ही।

तो बापदादा देख रहे थे कि सबसे तीव्रगति की सेवा है - ''वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलाना''। वृत्ति बहुत तीव्र राकेट से भी तेज है। वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हो। जहाँ चाहो, जितनी आत्माओं के प्रति चाहो वृत्ति द्वारा यहाँ बैठे-बैठे पहुँच सकते हो। वृत्ति द्वारा दृष्टि और सृष्टि परिवर्तन कर सकते हो। लेकिन एक बात वृत्ति द्वारा सेवा करने में रुकावट डाल रही है, वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलता है। आपके जड़ चित्र अब तक, लास्ट जन्म तक वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं ना! देखा है ना! मन्दिर देखे हैं ना! डबल फारेनर्स ने मन्दिर देखे हैं? नहीं देखे हों तो देख लेना क्योंकि आपके ही मन्दिर हैं ना! कुमारियां आपके मन्दिर हैं या इन्डिया वालों के मन्दिर हैं? सभी के मन्दिर हैं, अच्छा। मुबारक हो। मन्दिर की मूर्तियां प्रत्यक्ष रूप में वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं अर्थात् आप आत्मायें मन्दिर की मूर्तियां सेवा कर रही हैं। कितने भक्त वायब्रेशन द्वारा अपनी सर्व इच्छायें पूर्ण कर रहे हैं। तो हे चैतन्य मूर्तियां, अब अपने शुभ भावना की वृत्ति, शुभ कामनाओं की वृत्ति से वायुमण्डल में वायब्रेशन फैलाओ। लेकिन, लेकिन कहना अच्छा नहीं लगता लेकिन कहना पड़ता है। पाण्डव लेकिन शब्द अच्छा लगता है? नहीं अच्छा लगता। लेकिन, लेकिन है या खत्म हो गया? इसके लिए सबसे सहज विधि है पहले हर एक अपने अन्दर चेक करो - एक सेकण्ड में चेक कर सकते हो। अभी-अभी करो। सेकण्ड देवें क्या? कि बोलने में सेकण्ड मिल गया। अभी अपने अन्दर चेक करो - मेरी वृत्ति में किसी आत्मा के प्रति भी कोई निगेटिव वायब्रेशन है? अगर विश्व का वायुमण्डल परिवर्तन करना है, लेकिन अपने मन में किसी एक आत्मा के प्रति भी अगर व्यर्थ वायब्रेशन वा सच्चा वायब्रेशन भी निगेटिव है तो वह

विश्व परिवर्तन कर नहीं सकेगा। बाधा पड़ता रहेगा, समय लग जायेगा। वायुमण्डल में पावर नहीं आयेगी। कई बच्चे कहते हैं वह है ही ऐसा ना! है ही ना! तो वायब्रेशन तो होगा ना! बाप को भी ज्ञान देते हैं, बाबा आपको पता नहीं है, वह आत्मा है ही ऐसी। लेकिन बाप पूछते हैं कि वह खराब है, रांग है, होना नहीं चाहिए लेकिन खराब को अपने वृत्ति में रखो, क्या यह बाप की छुट्टी है? जो समझते हैं यह बाप की छुट्टी नहीं है, वह एक हाथ उठाना। टी.वी. में दिखाओ। (दादी को) आप देख रही हो ना! अच्छा। याद रखना हाथ उठाया था। डबल फारेनर्स ने हाथ उठाया! बापदादा की टी.वी. में तो आ ही रहा है। जब तक हर ब्राह्मण आत्मा के स्वयं की वृत्ति में कैसी भी आत्मा के प्रति वायब्रेशन निगेटिव है तो विश्व कल्याण प्रति वृत्ति से वायुमण्डल में वायब्रेशन फैला नहीं सकेंगे। यह पक्का समझ लो। कितनी भी सेवा कर लो, रोज़ आठ-आठ भाषण कर लो, योग शिविर करा लो, कई प्रकार के कोर्स करा लो लेकिन किसी के प्रति भी अपनी वृत्ति में कोई पुराना निगेटिव वायब्रेशन नहीं रखो। अच्छा वह खराब है, बहुत गलतियां करता है, बहुतों को दु:ख देता है, तो क्या आप उसके दु:ख देने में जिम्मेवार बनने के बजाए, उसको परिवर्तन करने में मददगार नहीं बन सकते! दु:ख में मदद नहीं करना है, उसको परिवर्तन करने में आप मददगार बनो। अगर कोई ऐसी भी आत्मा है जो आप समझते हैं, बदलना नहीं है। चलो, आपकी जजमेंट में वह बदलने वाली नहीं है, लेकिन नम्बरवार तो हैं ना! तो आप क्यों सोचते हो यह तो बदलने वाली है ही नहीं। आप क्यों जजमेंट देते हो, वह तो बाप जज है ना। आप सब एक दो के जज बन गये हो। बाप भी तो देख रहा है, यह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं....। ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष में देखा कैसी भी बार-बार गलती करने वाली आत्मा रही लेकिन बापदादा (विशेष साकार रूप में ब्रह्मा बाप) ने सर्व बच्चों प्रति याद-प्यार देते, सर्व बच्चों को मीठे-मीठे कहा। दो चार कडुवे और बाकी मीठे...क्या ऐसे कहा? फिर भी ऐसी आत्माओं के प्रति भी सदा रहमदिल बने। क्षमा के सागर बने। लेकिन अच्छा आपने

अपनी वृत्ति में किसी के प्रति भी अगर निगेटिव भाव रखा, तो इससे आपको क्या फायदा है? अगर आपको इसमें फायदा है, फिर तो भले रखो, छुट्टी है। अगर फायदा नहीं है, परेशानी होती है..., वह बात सामने आयेगी। बापदादा देखते हैं, उस समय उसको आइना दिखाना चाहिए। तो जिस बात में अपना कोई फायदा नहीं है, नॉलेजफुल बनना अलग चीज़ है, नॉलेज है - यह रांग है, यह राइट है। नॉलेजफुल बनना रांग नहीं है, लेकिन वृत्ति में धारण करना यह रांग है क्योंकि अपने में ही मूड आफ, व्यर्थ संकल्प, याद की पावर कम, नुकसान होता है। जब प्रकृति को भी आप पावन बनाने वाले हो तो यह तो आत्मायें हैं। वृत्ति, वायब्रेशन और वायुमण्डल तीनों का सम्बन्ध है। वृत्ति से वायब्रेशन होते हैं, वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता है। लेकिन मूल है वृत्ति। अगर आप समझते हो कि जल्दी-जल्दी बाप की प्रत्यक्षता हो तो तीव्रगति का प्रयत्न है सब अपनी वृत्ति को अपने लिए, दूसरों के लिए पॉजिटिव धारण करो। नॉलेजफुल भले बनो लेकिन अपने मन में निगेटिव धारण नहीं करो। निगेटिव का अर्थ है किचड़ा। अभी-अभी वृत्ति पावरफुल करो, वायब्रेशन पावरफुल बनाओ, वायुमण्डल पावरफुल बनाओ क्योंकि सभी ने अनुभव कर लिया है, वाणी से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है, होता है लेकिन बहुत धीमी गति से। अगर आप फास्ट गति चाहते हो तो नॉलेजफुल बन, क्षमा स्वरूप बन, रहमदिल बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करो। देखो, प्रत्यक्ष देखा है आप सबने, मधुबन में जो भी आते हैं, सबसे ज्यादा प्रभाव किस बात का पड़ता है? वायुमण्डल का। यहाँ भी चाहे सभी नम्बरवार हैं लेकिन ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि है, बापदादा की वरदान भूमि है, वह वायुमण्डल परिवर्तन कर देता है। अनुभव है ना! तो वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाना, यह है तीव्रगति का दिल का छाप। वायुमण्डल दिल में छप जाता है। सुनी हुई बातें भूल सकती हैं लेकिन वायुमण्डल का दिल पर छाप लग जाता है, वह भूल नहीं सकता। ऐसे है? तो बापदादा सुनते रहते हैं, प्रत्यक्षता कब होगी, आपस में रूहरूहान तो अच्छी करते हो। अच्छा है। बोलो, पाण्डव अभी क्या करेंगे? वायुमण्डल पावरफुल बनाना। चाहे सेवाकेन्द्र हैं, चाहे जो भी स्थान हैं,

प्रवृत्ति में हो तो भी वायुमण्डल पावरफुल। चारों ओर का वायुमण्डल अगर सम्पूर्ण निर्विघ्न, रहमदिल, शुभ भावना, शुभ कामना वाला बन जायेगा तो प्रत्यक्षता में कोई देरी नहीं।

अभी बापदादा ने जो डेट दी, वह बापदादा को याद है। हिसाब तो पूछेंगे ना! हर एक ने अपना एकाउन्ट तो रखा है ना! तो एकाउन्ट में बापदादा यही चेक करेंगे - वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में रहमदिल, शुभ भावना और शुभ कामना वाली आत्मा कितने परसेन्ट में रही? अभी भी ८७ दिन तो होंगे ना! ज्यादा हैं। अच्छा, जिसने नहीं भी किया हो तो ८७ दिन भी कर लेना, तो भी पास कर लेंगे। बीती को बिन्दी लगाना और रहम के सिन्धु बन जाना। क्षमा के सिन्धु बन जाना।

(बापदादा ने ड्रिल कराई)

सुना सभी ने! अच्छा। तीन मीटिंग वाले जो आये हैं, स्पार्क वाले एक हाथ उठाओ। अच्छा। बहुत अच्छा। अभी इसी विषय पर रिसर्च करो, वायुमण्डल कैसे प्रैक्टिकल में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बना सकते हैं! रिसर्च कर रहे हो ना! ऐसा वायुमण्डल बनाने के लिए क्या-क्या बुद्धि में रखना है, क्या-क्या कर्म में करना है, सम्बन्ध-सम्पर्क में करना है। अच्छा है अपने आपको बिजी रखते हो, अच्छी बात है। लेकिन बापदादा यह प्रैक्टिकल अनुभव देखने चाहते हैं कि कैसे प्रैक्टिकल किया और उसका परिणाम क्या निकला? अगर बीच में कुछ भी रुकावट आई तो क्या आई? यह अनुभव प्रैक्टिकल करके देखो, सिर्फ प्वाइंट्स नहीं निकालना, यह करना है, यह करना है। नहीं। करो। अनुभव करके एक्जैम्पुल बनकर दिखाओ और वह एक्जैम्पुल औरों को भी सहयोग देगा। ठीक है ना! यह (रमेश भाई) निमित्त है ना! अच्छा है। अभी भी ८७ दिन पड़ा है, अभी लास्ट नहीं हुआ है। अभी बहुत गया, लेकिन थोड़ा रहा है तो स्पार्क वाले ऐसा प्रैक्टिकल करके देखो और औरों को दिखाओ। ठीक है? कर सकेंगे? हो सकेगा? अच्छा, ठीक है, बहुत अच्छा। अच्छा।

दूसरी मीटिंग है ट्रांसपोर्ट की – ट्रांसपोर्ट वाले तो सबको सुख देंगे। ट्रांसपोर्ट वाले हाथ उठाओ। अच्छा। बहनें, बहनों के बिना तो गति नहीं है। तो ट्रांसपोर्ट वाले क्या करेंगे? सिर्फ यात्रा करायेंगे? ट्रांसपोर्ट वाले ऐसे आपस में प्रोग्राम बनाओ जो किसी भी आत्मा को कम से कम समय में दु:ख की दुनिया से पार करके थोड़े समय के लिए भी शान्ति की यात्रा करा सको। चलो, परमधाम तक तो पहुँचना मुश्किल है लेकिन दु:ख के दुनिया की शान्ति की यात्रा तो कर सकते हैं। वह प्लैन तो बहुत बनाओ, चारों प्रकार की यात्राओं वालों को बापदादा का सन्देश तो पहुँचा रहे हो, पहुँचायेंगे ही; क्योंकि कोई भी वर्ग रह नहीं जाये ना। यह अच्छा है जो वर्गों की इन्वेन्शन निकाली है, यह अच्छी है, उलहना नहीं मिलेगा। कोई भी वर्ग रह नहीं जायेगा, हर एक अपने वर्ग को आगे बढ़ाने का उमंग तो रखते हैं ना! यह बहुत अच्छा है। लेकिन अभी जो भी वर्ग बने हैं, कितने समय से वर्ग चल रहे हैं, डेढ़ दो साल हो गये या ज्यादा हो गये? (೧೮-೧೯ साल) वर्गों की सेवा को ೧೮-೧೯ साल हो गये, अच्छा। बहुत टाइम हो गया है। वर्ग वालों के लिए बापदादा का एक संकल्प है। बापदादा ने ೨-೩ बार कहा है लेकिन हुआ नहीं है कि हर वर्ग ने जो भी जितने समय में भी सेवा की है, उस एक-एक वर्ग के विशेष सर्विसएबुल चाहे सहयोगी हैं, चाहे हाफ योगी हैं, कभी-कभी आते हैं, रेग्युलर नहीं है, ऐसे कोई हर वर्ग वाले कम से कम ೫ तो सब वर्ग के सामने आने चाहिए। मधुबन में वह सभी देखें कि वर्ग वालों ने, चाहे ೧೮-೧೯ हों लेकिन ೫ तो लाओ पक्के, अच्छे सहयोगी, सेवा के निमित्त बनने वाले ೫-೫ तो निकल सकते हैं या नहीं! निकल सकते हैं तो लाओ। (कब लायें?) वह दादियों के ऊपर हैं। (बापदादा के प्रोग्राम में लायें?) वह फिर ऐसे बापदादा से मिलने के लायक हों, ೫ तो निकल ही सकते हैं। ज्यादा नहीं कहते, ೫ बस। तो यह दादियां पास करेंगी।

तीसरी मीटिंग - इन्जीनियर्स की है, बहुत अच्छा। इन्जीनियर्स का तो काम ही है प्लैन बनाना। तो तीव्र पुरुषार्थ का कोई प्लैन बनाया कि सिर्फ

सेवा का बनाया? इन्जीनियर्स को हर मास तीव्र पुरुषार्थ का कोई नया-नया प्लैन बनाना चाहिए। राय देनी चाहिए फिर फाइनल तो दादियां करेंगी। दादियां आपके साथी हैं, लेकिन इन्जीनियर्स और साइंस, विज्ञान वालों को ऐसा कोई प्लैन बनाना चाहिए जो जल्दी-जल्दी नई दुनिया आ जाए। बस यही मीटिंग करते रहेंगे, प्लैन बनाते रहेंगे, कब तक? कोई तीव्रगति के प्लैन बनाओ क्योंकि लक्ष्य तो आपके वर्ग का यही है कि ऐसे प्लैन बनें जो अपना राज्य जल्दी से जल्दी आये। तो ऐसा भी प्लैन बनाओ और सेवा में भी थोड़े समय में ज्यादा सफलता प्रत्यक्ष दिखाई दे, ऐसे प्लैन बनाओ। ऐसे प्लैन बनायेंगे ना! लास्ट टर्न में सब रिपोर्ट सुनेंगे कि हर एक वर्ग ने सफलता को तीव्र बनाने का क्या प्लैन बनाया! सिर्फ बनाना नहीं है, [illegible] दिन उसका अभ्यास करना है, प्रैक्टिकल में लाना है। ठीक है ना। अभी प्रैक्टिकल होना है ना! एक दो में सभी कहते हैं, बापदादा तो सबकी रूहरूहान सुनते रहते हैं। सभी कहते हैं प्रत्यक्ष हो, प्रत्यक्ष हो। लेकिन पहले प्रत्यक्ष आप तो हो जाओ। बाप भी आप द्वारा प्रत्यक्ष होगा ना! अच्छा।

अभी कुमारियों की सेरीमनी है। बहुत अच्छा लग रहा है। उठ जाओ। गुलदस्ता हिलाओ। बैठ जाओ। सभी ने देख लिया। कुमारियों के ऊपर तो बापदादा को सबसे ज्यादा नाज़ है। कुमारियां और डबल फारेनर्स कुमारियां [illegible] निकलें, यह बापदादा को बहुत अच्छा लग रहा है। पदम-पदम-पदम गुणा मुबारक है, कुमारियों को। अच्छा। कुमारियों से बापदादा का वैसे पर्सनल विशेष प्यार है। क्यों? कारण? कारण बापदादा समझते हैं कि विदेश में रहते कुमारी सुकुमारी बन गई, बच गई, कितनी बातों से बच गई। तो कुमारियों का बचना, बापदादा को बहुत अच्छा लगता है और देखो कुमारियों से विशेष प्यार है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि कुमारी को पहले-पहले सबसे जल्दी दहेज मिलता है सेन्टर। इसमें देखो कितनी टीचर्स हैं सेन्टर्स सम्भालने वाली, इसमें जो कुमारियां सेन्टर सम्भालने वाली हैं, वह उठो। आपको तो वर, घर, दहेज सब मिल गया। तो विशेषता है ना कुमारियों

की! बापदादा को खुशी होती है, एक-एक कुमारी को क्लास में अपना परिचय देना है, मैं कौन! और पक्की स्टैम्प लग जायेगी ना! तो बापदादा को कुमारियों का संगठन बहुत प्यारा है। एक-एक कुमारी कितने परिवारों का कल्याण करेगी। इन्डिया में कहते हैं कुमारी वह जो ೨೧ कुल का कल्याण करे। बापदादा कहते हैं कुमारी, ब्रह्माकुमारी वह जो आत्माओं के ೨೧ जन्मों का कल्याण करे। बहुत अच्छा किया। इनकी टीचर्स कौन हैं? कुमारियों की टीचर कौन? डबल फारनेर्स जो भी हैं, उन्हों ने सेवा कराई। बहुत अच्छा किया और बापदादा ने रिज़ल्ट देखी है, अच्छे उमंग-उत्साह से किया है और कराने वालों ने भी कराया है। इसीलिए पास हो, मुबारक हो। अच्छा।

डबल फारेनर्स में जो विशेष पाण्डव सेन्टर सम्भालने के निमित्त हैं, वह उठो। पाण्डवों को भी बहुत-बहुत मुबारक हो। ऐसे नहीं कि बापदादा को पाण्डव प्यारे नहीं हैं, पाण्डव तो पाण्डवपति के साथी हैं। यह तो यादगार भी बताता है। पाण्डवों का यादगार सदा ही पाण्डवपति बापदादा के साथ रहा है। लेकिन बापदादा को खुशी है कि बहुत अच्छे एक्जैम्पुल बन, सेवाधारी बन सेवा कर रहे हैं और सदा करते रहेंगे। इसलिए बाप दिलाराम दिल से धन्यवाद दे रहे हैं। अच्छा। डबल फारेनर्स की कमाल यह है कि जॉब भी करते, सेन्टर भी सम्भालते, डबल कार्य करते हैं। चाहे बहिनें हैं चाहे भाई हैं। जैसा नाम है डबल फारेनर्स वैसे काम भी डबल है। इसलिए बापदादा सभी डबल फारेनर्स को बहुत-बहुत-बहुत-बहुत याद दे रहे हैं। सुना।

गुजरात के सेवाधारी – कहावत है जो समीप है वह सदा याद रहते हैं। तो सबसे समीप मुख्य स्थान गुजरात का है। अच्छा गुजरात वाले उठो। बहुत सेवाधारी हैं। गुजरात की विशेषता है - जब भी बुलाओ तो पहुँच जाते हैं। ऐसे है ना! जब भी सेवा के लिए बुलाओ आ जाते हैं। नजदीक का फायदा है। नजदीक का फायदा यह भी है कि सब मुरलियों में पहुँच जाते हैं। अच्छा।

गुजरात सेवा में तो अच्छा सदा ही रहा है और सदा ही रहने वाले हैं।

संख्या भी ज़्यादा है। बापदादा ने सुना कि अभी तक गुजरात में एक लाख नहीं बनाये हैं, तो यह थोड़ा सा रहा हुआ है। ६ लाख में से जो भी बड़े-बड़े ज़ोन हैं वह एक-एक लाख बनावें तो ६ लाख हो जाएं। डबल फारेनर्स भी कितने हैं, ४D हज़ार तक हैं? कितने हैं? (२D हज़ार) अभी ४D तक तो आओ। चलो इन्डिया को लाख तो फारेन वालों को ४D तो लाना चाहिए। (विदेश में भी गुजराती बहुत हैं) लेकिन हैं तो फारेनर्स ना! यह ज़रूर है कि फारेन में भी जहाँ-जहाँ गुजराती हैं या इन्डियन हैं वहाँ-वहाँ भण्डारी और भण्डारा भरपूर है। अभी-अभी बापदादा खुशखबरी डबल फारेनर्स की भी सुनते हैं कि डबल फारेनर्स को भी रहा हुआ वर्सा मिलता रहता है। तो डबल फारेनर्स को यह भी एक भविष्य बनाने का चांस अच्छा मिल रहा है। अच्छा है। समाचार तो बापदादा सब सुनते हैं। अच्छा है, हर एक की भारतवासी की, चाहे डबल फारेनर्स की विशेषतायें तो बहुत हैं लेकिन कहाँ तक सुनायें। इसलिए हर एक स्थान की कोई न कोई विशेषता है, ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ कोई विशेषता नहीं हो। विशेष आत्मायें हो और विशेषता है।

आज फारेन में सुन वा देख रहे हैं या नहीं? (देख रहे हैं) अच्छा है। आपके यज्ञ की स्थापना के बाद ही साइंस ने वृद्धि को प्राप्त किया है तो उसका फायदा तो कुछ लेंगे ना! लेकिन विधिपूर्वक फायदा लेना है। तो जो साइंस के साधनों द्वारा देख रहे हैं, सुन रहे हैं उन सभी बच्चों को सबसे पहले बापदादा सदा याद करते हैं। जितना-जितना याद का बल शक्तिशाली होगा उतना ऐसे ही महसूस करेंगे या कर रहे हैं जैसे बापदादा हमसे ही बात कर रहे हैं। लेकिन फिर भी मधुबन-मधुबन है।

अच्छा - अभी-अभी अपनी वृत्ति को एकाग्र कर सकते हो? कहाँ भी वृत्ति हलचल में नहीं आये। अचल, एकाग्र, शक्तिशाली रहे। (बापदादा ने ड्रिल कराई) अच्छा -

चारों ओर के सर्व सर्विसएबुल बच्चों को, सदा अपने श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा सेवा करने वाले तीव्रगति का पुरुषार्थ करने वाले बच्चों को सदा क्षमा

के मास्टर सागर, सदा शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा बहुत कमजोर आत्माओं को भी शक्तिशाली बनाने वाले ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों को बापदादा का बहुत-बहुत याद-प्यार और नमस्ते।

दादी जी, दादी जानकी जी से

आप बताओ सबसे ज्यादा खुश कौन होता है? बाप खुश होते हैं या आप खुश होती हैं? (एक दो से ज्यादा) अच्छा है, बापदादा जब आप निमित्त आत्माओं की सेवा को देखते हैं तो सेवा पर बलिहार जाते हैं। सम्भालने की विधि अच्छी है। बापदादा आप दोनों का सारे विश्व के आगे स्नेह, सहयोग और एक दो में सहानुभूति देख हर्षित होते हैं। (गुलजार दादी भी है, त्रिमूर्ति हैं) वह तो निमित्त हो गई। आपको देख करके, एक दो में कहा और माना। यह मानना ही माननीय बनाता है। हाँ जी, हाँ जी करके हजूर को भी अपना बना लेते हैं। (बाबा ने कूट-कूट कर भर दिया है) ८४ वर्ष की पालना में सब कूट-कूट कर डाल दिया है। (अभी भी छोड़ता नहीं है) आप छोड़ सकती हो तो बाप क्यों छोड़ेगा! बहुत अच्छा। यह साथी भी आपके अच्छे हैं। सबका साथ है तभी आगे बढ़ रहे हैं। एक छोटी का भी साथ नहीं हो तो हलचल हो जाए। सबका चाहिए ना! चाहे पाण्डव, चाहे शक्तियाँ, एक-एक का सहयोग, सफलता को प्राप्त करा रहा है। आप यह नहीं समझना हम तो सिर्फ देखने वाले हैं, नहीं। करने वाले हैं। सर्व के सहयोग से बेहद का कार्य चल रहा है। ब्रह्मा बाप ने फाउण्डेशन क्या डाला? सहयोग का फाउण्डेशन डाला, क्या अकेला बापदादा कर नहीं सकता क्या? लेकिन फाउण्डेशन सहयोग का डाला। तो सहयोग से ही संसार बदल रहा है। अच्छा। सबका सहयोग है, एक-एक रतन विशेष है। अच्छा - ओम् शान्ति।

11-03-2002

विशेषतायें परमात्म-देन हैं - इन्हें विश्व सेवा में अर्पण करो

आज ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर ब्रह्मा बाप और शिव बाप अपने विश्व के चारों ओर के श्रेष्ठ भाग्यवान ब्राह्मण कुल को बहुत-बहुत अरब-खरब बार दिव्य अलौकिक जन्म की मुबारक दे रहे हैं। साथ-साथ अति स्नेह के, दिल के प्यार के रूहानी पुष्पों से जन्म की बधाई दे रहे हैं। हर एक ब्राह्मण आत्मा की विशेषता देख-देख हर्षित हो रहे हैं। दिल ही दिल में गीत गा रहे हैं - वाह बच्चे वाह! आज के दिन अमृतवेले से सभी के दिल में यही खुशी की लहरें दिखाई दे रही हैं - वाह बाप का और हमारा अलौकिक जन्म! बाप भी सभी बच्चों की अमृतवेले से बधाइयों की मालायें देख-देख खुश हो रहे हैं। यह बर्थ डे सारे कल्प में इस संगमयुग में ही मनाते हैं। सतयुग में भी ऐसा अलौकिक जन्म दिन नहीं मनायेंगे। वहाँ भी ऐसा विचित्र जन्म दिन नहीं होगा, जो बाप और बच्चों का एक ही साथ जन्म हो। अब तक सुना है क्या कि बाप और बच्चे का जन्म एक दिन हुआ? लेकिन आज का दिन आप बच्चों का और बापदादा का जन्म एक दिन मना रहे हो। तो वाह-वाह! के गीत गा रहे हो ना!

आज बापदादा अमृतवेले एक माला बना रहे थे। कौन-सी माला? DDES की फाइनल माला नहीं बना रहे थे जो आप सोचो हमारा नाम था, हमारा नाम था... लेकिन आज आदि से, स्थापना के समय से अब विनाश के समीप समय तक कौन-से, कौन-से बच्चे अमर भव के वरदानी रहे हैं! उन्हों की माला बना रहे थे। यह भी ड्रामा अनुसार उन आत्माओं को ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन के साथ सर्व चरित्र देखने, सुनने का श्रेष्ठ पार्ट है लेकिन वह कितने थोड़े हैं! आप सबका भी पार्ट है, क्यों? बापदादा ब्राह्मण वंशावली बना रहे हैं। इसलिए विश्व के हिसाब से जो भी ब्राह्मण आत्मायें हैं वह बहुत-

बहुत-बहुत भाग्यवान हैं, क्यों? कोटों में कोई की लाइन में और कोई में भी कोई, एक तरफ विश्व की कोटों आत्मायें, दूसरे तरफ आप हर एक ब्राह्मण एक हो। तो जन्म दिन पर बापदादा हर एक बच्चे को, कोई-कोई को नहीं सभी बच्चों की जन्मपत्री देख हर एक के विशेषताओं की मालायें गले में डाल रहे थे। आप सभी चाहे नये हैं, चाहे आदि के हैं, चाहे मध्य के हैं लेकिन विशेष हैं और विशेष रहेंगे ही। सारा कल्प विशेष रहेंगे। सारा कल्प विश्व की सर्व आत्माओं की आप श्रेष्ठ आत्माओं के ऊपर महानता की नज़र रहती है। तो आप हर एक अपनी विशेषताओं को जानते हो? अगर हाँ तो एक हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। उस विशेषताओं को क्या करते हो? जानते हो बहुत अच्छा, मानते हो बहुत अच्छा लेकिन उन विशेषताओं को क्या करते हो? (सेवा में लगाते हैं) और रीति से यूज़ तो नहीं करते ना? यह विशेषतायें परमात्म-देन हैं। परमात्म-देन सदा विश्व सेवा में अर्पण करनी है। विशेषतायें अगर निगेटिव रूप में यूज़ किया तो अभिमान का रूप बन जाता है क्योंकि ज्ञान में आने के बाद, ब्राह्मण जीवन में आने के बाद बाप द्वारा विशेषतायें बहुत प्राप्त होती हैं क्योंकि बाप का बनने से विशेषताओं के खजाने के अधिकारी बन जाते हो। एक दो विशेषतायें नहीं हैं, बहुत विशेषतायें हैं। जो यादगार में भी आपकी विशेषताओं का वर्णन है - ८ कला सम्पन्न, तो सिर्फ ८ नहीं हैं, ८ माना सम्पूर्ण। सर्व गुण सम्पन्न। सम्पूर्ण निर्विकारिता का डिटेल है। कहने में आता है सम्पूर्ण निर्विकारी लेकिन सम्पूर्ण में कई डिटेल हैं। तो विशेषतायें तो बाप द्वारा हर ब्राह्मण को वर्से में प्राप्त होती ही हैं। लेकिन उन विशेषताओं को धारण करना और फिर सेवा में लगाना। मेरी यह विशेषता है, नहीं, परमात्म-देन है। परमात्म-देन समझने से विशेषता में परमात्म शक्तियाँ भर जाती हैं। मेरी कहने से अभिमान और अपमान दोनों का सामना करना पड़ता है। किसी भी प्रकार का अभिमान, चाहे ज्ञान का, चाहे योग का, चाहे सेवा का, चाहे बुद्धि का, चाहे कोई गुण का, जिसमें भी अभिमान होगा उसकी निशानी है - उसको अपमान बहुत जल्दी फील होगा।

तो विशेष आत्मायें हो अर्थात् परमात्म-देन के अधिकारी हो।

तो आज आप सभी बापदादा का बर्थ डे मनाने आये हो ना! और बापदादा आप सबका बर्थ डे मनाने आये हैं। आप तो सिर्फ बापदादा का बर्थ डे मनायेंगे लेकिन बापदादा सारे ब्राह्मण कुल का बर्थ डे मनाने आये हैं। चाहे देश में दूर बैठे हैं, चाहे विदेश के कोने में दूर में बैठे हैं लेकिन जो भी ब्राह्मण आत्मा, ब्राह्मण कुल की बन गई, उन सबका बर्थ डे बापदादा भी मना रहे हैं, आप भी मना रहे हैं। सबका मना रहे हो या सिर्फ यहाँ बैठने वालों का मना रहे हो? सभी याद हैं ना! सभी देख रहे हैं कि हमारा भी मना रहे हैं या नहीं? तो सबका मना रहे हैं। सबको मुबारक, मुबारक, मुबारक हो। मनाना अर्थात् उमंग-उत्साह में आना। तो दिल में उत्साह है ना, वाह! हमारा अलौकिक जन्म दिन!

तो आज अमृतवेले से जन्म दिन का उत्साह-उमंग सभी में बहुत-बहुत रहा ना! बापदादा ने कार्ड भी देखे, आप इन आंखों से देखते हो, बापदादा तो सूक्ष्म में ही आपसे पहले ही देख लेते हैं। लेकिन बापदादा ने देखा सभी अपने दिल का उमंग दिखाने के लिए कितना उमंग-उत्साह रखते हैं। आजकल तो ई-मेल बहुत सस्ता है ना! तो ई-मेल भी सभी बहुत करते हैं। बापदादा के पास सब पहुँचता है। चाहे ई-मेल हो, चाहे कार्ड हो, चाहे पत्र हो, चाहे दिल के संकल्प हों। अमृतवेले से वतन में अगर चारों ओर के कार्ड, पत्र, ई-मेल, संकल्प सब इकट्ठे करो तो देख-देखकर बड़ा मजा आयेगा। यह एग्जीविशन विचित्र होती है। तो बर्थ डे पर भविष्य के लिए संकल्प किया जाता है। जैसे बर्थ का नम्बर आगे बढ़ता है, ५३ से ५५ पर गया ना! तो जैसे वर्ष आगे बढ़ता है ऐसे ही पुरुषार्थ में वा अपने अमूल्य जीवन में, मन में अर्थात् संकल्प में, बुद्धि के निर्णय शक्ति में, वाणी में, सेकण्ड में सफलता मूर्त बनाने की शक्ति में, सम्बन्ध-सम्पर्क में हर समय सम्पर्क-सम्बन्ध वाले को कोई-न-कोई प्राप्ति की अनुभूति हो, ऐसा अपने भविष्य वर्ष के लिए दृढ़ संकल्प का व्रत लिया? क्योंकि विशेष शिव जयन्ती के दिन दो लक्ष्य

ब्राह्मण आत्माओं के रहते हैं - एक स्वयं से प्रतिज्ञा का और दूसरा बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने का, यह दो विशेष लक्ष्य इस दिन हर एक के अन्दर रहता है। तो बापदादा ने आप सबकी की हुई प्रतिज्ञाओं का (जो बीते हुए समय में की हैं) पोतामेल देखा। हर साल हर एक ने विधिपूर्वक संकल्प से, वाणी से प्रतिज्ञा की है। बहुत अच्छा किया है। लेकिन अभी आज के बाद अर्थात् जन्म दिन मनाने के बाद एक शब्द को विशेष अण्डरलाइन करना। कामन शब्द है, नया नहीं है। वह शब्द है -निरन्तर दृढ़ता। कभी दृढ़ता और कभी दृढ़ता में भी अलबेलापन, नहीं। अगर निरन्तर दृढ़ता है तो उसकी निशानी है - निरन्तर हर संकल्प, बोल, कर्म द्वारा स्व में, सेवा में और सम्बन्ध में ८DD परसेन्ट सफलता। जब तक इन सभी बातों में ब्राह्मणों में सदा सफलता कम है तब तक प्रत्यक्षता ड्रामा अनुसार रुकी हुई है। सफलता प्रत्यक्षता का आधार है। हर बोल सफलता पूर्वक हो, हर संकल्प सफलतापूर्वक हो। इसलिए आजकल के यादगार में भी गुरु कहलाने वालों को सत वचन महाराज कहा जाता है। चाहे झूठ भी बोल रहे हों लेकिन भक्त कहते हैं सत वचन। तो यह आपके वचन का गायन है। महाराज, महान तो आप ही बनते हो ना! इसीलिए सत वचन महाराज माना महान आत्मायें। ऐसे कभी नहीं सोचो कि मेरा भाव नहीं था लेकिन बोल दिया, निकल गया, बिना भाव के, भावना के बोल नहीं निकलते हैं, यह तो चलाने की बात है। कभी कहते हैं निकल गया, क्यों निकल गया? क्यों, कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है क्या जो निकल गया? हो गया, तो राजा नहीं हैं? कोई-कोई कर्मेन्द्रियों के वशीभूत हो गये ना - जो निकल गया, हो गया!

तो इस वर्ष में मुबारक के साथ निरन्तर हर बात में दृढ़ता को अण्डरलाइन करना। आज बर्थ डे है इसलिए बापदादा आज नहीं सुनाते हैं लेकिन सभी के चार्ट से बापदादा ने एक बात नोट की, लेकिन लास्ट बारी में सुनायेंगे। आज तो मनाना है, सुनाना नहीं है। ८३ दिन के बाद सुनायेंगे। (बापदादा सुनाये तो ८३ दिन में सब ठीक हो जायेंगे) अच्छा पहले कहो ८३ दिन में करेक्शन हो जायेगी फिर तो सुनाना ठीक है। अगर ८३ दिन में परिवर्तन हो जाए तो बापदादा तो पता नहीं क्या कर देंगे! तो सुनायें क्या? तो ८३ दिन में

परिवर्तन हो जायेगा? संकल्प करेंगे? अच्छा, पाण्डव करेंगे सुनायें? सुनना तो सहज है, करेंगे? करना पड़ेगा। (बापदादा ने पीछे वालों से, माताओं से, टीचर्स से, डबल फारेनर्स सबसे पूछा, सभी ने हाथ हिलाया) हाथ तो सब बहुत अच्छा उठा लेते हैं।

डबल फारेनर्स के तीन ग्रुप हैं ना?
(अन्तर्मुखी, मस्ताना, शक्ति ग्रुप)

अच्छा, अन्तर्मुखी ग्रुप हाथ उठाओ। अन्तर्मुखी में थोड़े हैं। दूसरा ग्रुप है मस्ताना, अच्छा मस्ताना ग्रुप वाले खड़े हो जाओ। सदा मस्त रहने वाले ना! मस्ताना का अर्थ क्या हुआ? सदा मस्त रहने वाले ना! तीसरा ग्रुप - शक्ति। शक्ति ग्रुप शक्तिशाली है ना! नाम तो बहुत अच्छे रखे हैं। देखो शुरू-शुरू में जब भट्ठी थी तो आपके ग्रुप्स के नाम क्या थे? (डिवाइन युनिटी, मनोहर पार्टी, सुप्रीम पार्टी) नाम तो सुन्दर हैं ना? तो यह भी ग्रुप अच्छे बने हैं। नाम याद रहेगा तो नाम के साथ कर्त्तव्य भी याद रहेगा। अच्छा डबल फारेनर्स कुमार उठो। अच्छा, यह कुमारों का ग्रुप है। अच्छा किया है, बापदादा ने डबल फारेनर्स के रिफ्रेशमेंट का समाचार बहुत अच्छा सुना है। बापदादा दिल से मुबारक भी दे रहे हैं लेकिन सभी ग्रुप्स को जो आज अण्डरलाइन किया है, वह याद भी दिला रहे हैं।

डबल फारेन की टीचर्स बहुत हैं। टीचर बनना बहुत-बहुत श्रेष्ठ भाग्य की निशानी है क्योंकि बापदादा टीचर्स को गुरु-भाई के रूप में देखते हैं, इतना समान रूप में देखते हैं क्योंकि बाप के आसन पर बैठते हैं, टीचर्स को यह हक मिलता है। जैसे गुरु की गद्दी होती है ना तो यह मुरली का तख्त, मुरली धारण कराना और मुरली सुनाना। सुनाना सिर्फ नहीं लेकिन मुरली धारण कराना, यह टीचर्स को बापदादा ने गुरुभाई का तख्त दिया है और फारेन में तो देखा जाता है कि बहुत जल्दी से जल्दी तख्तनशीन हो जाते हैं। बापदादा खुश होते हैं, जिम्मेवारी का ताज धारण कर लेना, हिम्मत रखना, यह भी

कोई कम बात नहीं है लेकिन गुरुभाई अर्थात् बाप समान। वैसे तो सभी को बाप समान बनना ही है लेकिन फिर भी टीचर्स को विशेष जिम्मेवारी का ताज है। बापदादा को भी टीचर्स का संगठन बहुत अच्छा लगता है। लेकिन आज का विशेष शब्द ''निरन्तर अटेन्शन''।

अच्छा - भारत की टीचर्स उठो, भारत की टीचर्स भी कम नहीं हैं। तो सुना, टीचर्स को बाबा किस नज़र से देखते हैं। यह क्लास की, मुरली सुनाने की सीट... बहुत भाग्यवान हैं। बहुत-बहुत-बहुत लक्की हो क्योंकि साकार रूप में निमित्त कौन हैं? अच्छा दादियां तो एक फारेन रहती है एक मधुबन रहती है लेकिन हर स्थान पर साकार रूप में निमित्त टीचर्स हैं या निमित्त पाण्डव भी हैं। ऐसे नहीं सिर्फ टीचर्स (बहनें) हैं, पाण्डव भी हैं, जिसको बड़े भाई कहते हो ना। पाण्डव तो ज़रूरी हैं ही। शक्तियां और पाण्डव दोनों के साथ से ही आदि से कार्य चला है, चाहे थोड़े पाण्डव थे लेकिन विश्वकिशोर तो थे ना। आनंदकिशोर, विश्वकिशोर शुरू के हैं। तो पाण्डवों का साथ तो है ना। लेकिन मैजारिटी टीचर्स ज़्यादा हैं जो निमित्त बन जाती हैं। आप बैकबोन हो, टीचर्स के भी बैकबोन हो। हर एक का पार्ट है। लेकिन विदेश में यह विशेषता है कि पाण्डव भी टीचर बनते हैं, भारत में कम बनते हैं। तो टीचर्स को सदा बापदादा कहते हैं टीचर अर्थात् अपने फीचर्स द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाली। फीचर्स द्वारा फ्यूचर स्पष्ट दिखाने वाली। तो ऐसी टीचर्स हो ना? जो आपको देख बापदादा के पालना की अनुभूति हो। परमात्म-गुण, परमात्म-शक्तियां आपके चेहरे से दिखाई दें, बोल से दिखाई दें। ऐसे नहीं फलानी टीचर ने बोला, नहीं। बापदादा ने टीचर्स के फीचर्स द्वारा अनुभव कराया। बाप से हर एक का कनेक्शन जोड़ना - यही है टीचर्स का कर्त्तव्य। हर एक के दिल से हर समय बाबा निकले।

यह ग्रुप्स भी अच्छे बनाये हैं क्योंकि पर्सनल रिफ्रेशमेंट मिलने से अनुभूति अच्छी करते हैं। ग्रुप्स में रिज़ल्ट अच्छी निकली ना! अच्छा है।

सेवा का चांस यू.पी. का है:- अच्छा, गोल्डन चांसलर उठो। पाण्डव

भी हैं, शक्तियां भी हैं, तो आप सबको इस सेवा का टाइटल मिला है, गोल्डन चांसलर। तो अभी यू.पी. कमाल करके दिखायेगी ना! धूम मचाओ यू.पी. में। यू.पी. में पुराने-पुराने भी अच्छे हैं, नये भी काफी आये हैं। अभी ऐसा कोई प्रोग्राम बनाओ जो देश-विदेश के ब्राह्मणों की नज़र यू.पी. की तरफ हो जाये। यू.पी. में निशानी है - जो ब्रह्मा बाप ने भी देखी। ब्रह्मा ने बीज डाला था, उस स्थान में साकार रूप में कोशिश की थी, जमीन लेके कुछ बनाने की, लेकिन अभी तक बना नहीं है। कमाल करो, बन जायेगा। (बनारस वाले म्यूजियम बना रहे हैं, आगरा वाले भी बना रहे हैं।) देखेंगे, कितने वारिस निकलते हैं और कितने सहयोगी निकलते हैं, कितने रेग्युलर स्टूडेन्ट निकलते हैं! रिज़ल्ट देखेंगे। बाकी अच्छा है, हिम्मत अच्छी रखी है, मदद मिलती रहेगी। तो यू.पी. वाले क्या कमाल करेंगे? कमाल करना है या नहीं? करना है ना, तो देखेंगे यू.पी. वाले क्या कमाल करते हैं। सब कहेंगे यू.पी. में चलो, यू.पी. में चलो। वह विनाशकारी विनाश करें, स्थापना वाले स्थापना। तो देखेंगे, प्लैन बनाना। ठीक है ना! प्लैन बनेगा ना।

मीडिया वालों की मीटिंग है – मीडिया वाले क्या कर रहे हैं? मीडिया का अर्थ ही है हर बात को प्रत्यक्ष करने वाले। तो मीडिया वालों ने क्या प्रत्यक्षता का प्लैन बनाया? इस साल प्रत्यक्षता हो जायेगी? मीडिया वाले चैनल बनाओ या कुछ भी बनाओ लेकिन यह आना चाहिए कि यही है, यही है, यही है...। अभी तक तो यह भी है, यही है, नहीं आया है। यह भी अच्छे हैं..., अच्छे-ते-अच्छे यही हैं, वह अखबार में निकले। चैनल में आवे तब बाप कहेंगे मीडिया है। फिर भी बढ़ तो रहा है, जितना भी किया है, वृद्धि तो हुई है लेकिन लक्ष्य तो वह है ना? मेहनत अच्छी कर रहे हैं, नाम तो हो गया है लेकिन अभी काम नहीं हुआ है। हो जायेगा, ज़रूर। अच्छा।

सिन्धी ग्रुप बहुत बड़ा आया है – बहुत अच्छा किया। अपने घर में आये हो ना? समझते हो अपने घर में आये हैं कि ब्रह्माकुमारियों के पास आये हैं? अपना घर है क्योंकि सिन्ध से स्थापना हुई, तो स्थापना के निमित्त बने हुए

स्थान से आपका सम्बन्ध है। इसलिए आये हैं तो बहुत अच्छा, आये हैं और आते रहना। अपने सम्बन्ध-सम्पर्क वालों को जगाते रहना। बापदादा ने देखा है सेवा अच्छी करते हैं, अब तक की भी है। एक दो को परिचय देते रहते हो लेकिन और सेवा को बढ़ाओ। अभी इतने आये हैं ना, फिर दूसरी बारी और ज्यादा आना। सिन्धी लोगों को देख करके सबको खुशी होती है - यह सिन्ध वाले हैं जहाँ स्थापना हुई थी, आपको देखकर खुश होते हैं। तो अच्छा किया है। वृद्धि हो रही है ना? अच्छी वृद्धि है। बहुत अच्छा किया।

अच्छा, डबल फारेनर्स को मुबारक तो मिली। ([illegible] देशों से [illegible] डबल विदेशी आये हैं) डबल विदेशियों ने विश्व कल्याण करने की जो हिम्मत रखी है, उसकी बापदादा विशेष डबल विदेशी बच्चों को बधाई देते हैं। कोई भी कोना छोड़ने वाले नहीं हैं। हिम्मत रख सेवा में बढ़ते ही रहते हैं। बापदादा ने देखा सेवा की रिज़ल्ट में जो काल आफ टाइम, लिविंग वैल्यू, पीस आफ माइन्ड... जो भी करते हो वह अच्छा कर रहे हैं। अच्छा है। रिज़ल्ट भी अच्छी है और आगे बढ़ भी रहे हैं। भारत को तो वरदान है गांव-गांव में झण्डा लहराना। भारत में मुश्किल नहीं है लेकिन डबल फारेनर्स हर देश में साथ-वात (परिस्थितियां) न देख करके भी स्थापना करने का तरीका बहुत अच्छा है। भारत तो है ही बाप का, इसलिए उसको तो वरदान है ही।

टर्की से बहुत अच्छा ग्रुप आया है – अच्छा, टर्की वाले उठो - देखो, आपके लिए बाप को बहुत-बहुत प्यार है, तब तो टर्की में पहुँच गया ना! अच्छे मस्त हैं। गुप्त और मस्त। गुप्त भी रहना है और अपनी मस्ती में भी रहना है। तो अच्छा पार्ट बजा रहे हो। अच्छा। डबल विदेश की टीचर्स ने मेहनत अच्छी की है। आर.सी.ओ. ग्रुप उठो। डबल फारेन में आर.सी.ओ. कौन हैं, आप सबको पता तो होना चाहिए। टाइम भी दिया है और मेहनत भी अच्छी की है, मुबारक हो। बहुत अच्छा किया है। बैकबोन तो है। (दादी जानकी) आप भी उठो, देखो आपके लिए सबका प्यार है ना, इसलिए तालियां बजाई। अच्छा है। (एन.सी.ओ. भी है) अच्छा है जो भी हैं वह सब

अच्छे हो। एन.सी.ओ, आर.सी.ओ जो भी हैं। समय दिया है। समय देने से सफलता होती है। अच्छा।

गुजरात का क्या हाल है? अच्छी हिम्मत है ना? डर तो नहीं है ना? शक्तियों को क्या डर है। यह तो होना ही है। लेकिन रीयल रुका हुआ है, यह तो रिहर्सल है। घबराते तो नहीं हो ना! कोई घबराता है? नहीं। आराम से ड्रामा की हर सीन देखते चलो। सिर्फ साक्षीपन की सीट से नीचे आकर नहीं देखो। सीट पर अच्छी रीति से सेट होकर बैठो।

मधुबन वालों से:- अच्छा, मधुबन वाले ठीक हैं? बहुत सेवा की सीजन चल रही है। मधुबन वाले उठो। मधुबन वाले सबसे प्यार-ते-प्यारे हैं क्योंकि जो चुल पर होता है वह दिल पर होता है। बापदादा मधुबन निवासी बच्चों को सदा ही इमर्ज कर याद-प्यार देते हैं क्योंकि इतनी आत्माओं को बाप से मिलने का सुख देते हैं। सेवा करना अर्थात् बाप समान सुखदाई बन सुख देना। मधुबन को सेवा करने का बहुत-बहुत-बहुत परमात्म चांस है। मधुबन वालों के ऊपर परमात्मा की मेहर है, गुरुकृपा है। तो सदा चाहे ऊपर सुन रहे हैं, चाहे सम्मुख हैं लेकिन बापदादा सभी मधुबन निवासी सेवाधारी सो बाप के दिल पर, तख्त पर बैठने वाले बच्चों को बहुत-बहुत सेवा के रिटर्न में वरदान दे रहे हैं - अथक भव। सदा अथक भव का अपना चित्र सबको दिखाने वाले। ऐसे हो ना! सुखदाई हो ना? कितनी दुआयें मिलती हैं। जो सच्ची दिल वाला है उसको दुआयें स्वत: ही मिलती हैं। मधुबन वालों को दुआयें जमा करने का चांस बहुत अच्छा है। जितनी चाहे उतनी करो। तो दुआओं का स्टाक इक्ट्ठा हो रहा है ना? मधुबन निवासियों से बापदादा का स्पेशल प्यार है। अलग मिलते नहीं हैं लेकिन दिल से सदा मिलते रहते हैं। बहुत अच्छा। बहनें भी हैं। अच्छा।

ग्लोबल हॉस्पिटल के ट्रस्टी भी आये हैं – ग्लोबल हॉस्पिटल से सबसे ज्यादा फायदा, बापदादा ने देखा ब्राह्मणों को बहुत है। ब्राह्मणों के लिए सहज साधन बन गया। इसलिए बापदादा हॉस्पिटल वालों को भी खास याद दे रहे

हैं। अच्छा - ट्रस्टी उठो। अच्छा है बापदादा एक हंसी की बात सुनाते हैं। कामन बात है लेकिन हंसने की है, सभी से ज्यादा हॉस्पिटल का फायदा बापदादा ने देखा मधुबन वालों को है, क्यों? कोई भी शरीर छोड़ता है ना, तो मधुबन वालों का नाश्ता बंद नहीं होता है और यहाँ तो हर सीजन में दो-चार तो होते ही हैं। फायदा है ना मधुबन वालों को, खाना तो बंद नहीं होता है ना! और बच्चों को भी फायदा है। लेकिन सोशल वर्क के हिसाब से भी आबू निवासियों की वृत्ति चेंज होना, इसके निमित्त हॉस्पिटल है। हॉस्पिटल के सेवाधारी आये हैं, उठो। बहुत-बहुत सेवा की मुबारक हो। अच्छी सेवा करते हैं और दिनप्रतिदिन अनुभवी भी बनते जाते हैं। फिर भी हिम्मत तो रखी है ना? अच्छा, अभी तो बाम्बे में भी हॉस्पिटल खुल रही है। अच्छा है देखो ग्लोबल हॉस्पिटल को अच्छा-सा वारिस मिल गया है। (भुवनेश्वर में भी एक हॉस्पिटल खुली है) सभी को अच्छा लगता है? हाथ तो हिलाओ। टीचर्स को चेक कराना सहज हो गया है ना! अच्छा है। देश-विदेश में यह नाम भी बहुत सेवा करता है। विदेश में जानकी फाउण्डेशन है, अच्छा है, यह भी सेवा का साधन है और एक-दो में कनेक्शन जो रखा है वह भी अच्छा है। ट्रस्टी भी अच्छे-अच्छे हैं। अच्छा।

चारों ओर के जन्म उत्सव मनाने वाले श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं को, सदा अलौकिक जन्म के अलौकिक दिव्य कर्त्तव्य करने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे एकनामी और सर्व खज़ानों के एकानामी के अवतार बच्चों को सदा हर वरदान और वर्से को जीवन द्वारा प्रत्यक्ष करने वाले उमंग-उत्साह में रहने वाले बच्चों को, बापदादा का अलौकिक जन्म के मुबारक सहित याद-प्यार और नमस्ते।

दादियों से

दादी जी ने बापदादा को बर्थ डे की बहुत-बहुत बधाई दी।

आज माला में आप सब आये। माला याद की ना! आदि की स्थापना

के रत्न, तो उसमें आप माला के मणके थे। अच्छा है स्थापना में भी निमित्त बने, पालना में भी निमित्त बने, अभी बाप के साथ चलने में भी निमित्त बनेंगे। क्या दरवाजा बापदादा अकेला खोलेगा? (नहीं) आपके लिए रुके हुए हैं। आओ तो दरवाजा खोलें। लेकिन सेवा पूरी करनी पड़ेगी ना क्योंकि साकार में आप लोगों को निमित्त बनाया है। तो साकार का कार्य तो पूरा करना पड़ेगा ना। आजकल सब किसको देखते हैं? सबकी नजर कहाँ जाती है? आप लोगों के ऊपर ही तो जाती है। जो निमित्त बने हुए हैं, उन्हों के ऊपर ही सबकी नज़र जाती है। नज़रों में तो सभी को बिठाया क्योंकि बाप की नज़र कोई छोटी तो है ही नहीं, बेहद की नज़र है। तो सभी नज़र में हैं। सभी नूरे रत्न हैं। बहुत अच्छा। हर एक अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं और बजाना ही है। ड्रामा में बंधे हुए हो। मजा आता है ना! बहुत अच्छा है!

बापदादा ने अपने हस्तों से शिव ध्वज फहराया, केक काटी और सब बच्चों को बधाइयाँ दी

सभी बच्चों के दिल में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा रहा है और आप सब बच्चों के दिल में लहराया हुआ झण्डा दुनिया में लहराया जायेगा। सभी के मुख से यही निकलेगा - वाह शिव-शक्ति पाण्डव सेना वाह! बापदादा को सभी के खुशनुमा: चेहरे देख बहुत-बहुत खुशी है। खुशनसीब हो और सदा खुशनुम: चेहरा है और औरों को भी सदा दिलखुश मिठाई खिलाते रहना। अमृतवेले यह मिठाई सभी याद से खा लो। तो सारा दिन इस मिठाई की शक्ति रहेगी, खुशी रहेगी। अच्छा। सबको मुबारक हो। (सबके तरफ से बाबा को मुबारक हो, मुबारक हो) ओम् शान्ति।

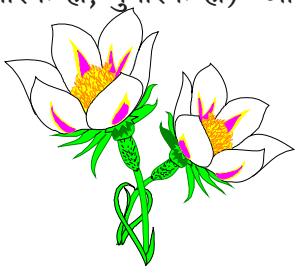

28-03-2002

इस वर्ष को निर्माण, निर्मल वर्ष और व्यर्थ से मुक्त होने का मुक्ति वर्ष मनाओ

आज बापदादा अपने चारों ओर के बच्चों के मस्तक में चमकती हुई तीन लकीरें देख रहे हैं। एक लकीर है प्रभु पालना की, दूसरी लकीर है श्रेष्ठ पढ़ाई की और तीसरी लकीर है श्रेष्ठ मत की। तीनों ही लकीर चमक रही हैं। यह तीनों लकीर सर्व के भाग्य की लकीरे हैं। आप सभी भी अपनी तीनों लकीरें देख रहे हो ना! प्रभु पालना का भाग्य सिवाए आप ब्राह्मण आत्माओं के और किसी को भी प्राप्त नहीं होता है। परमात्म पालना जिस पालना से कितने श्रेष्ठ पूज्यनीय बन जाते हो। कभी स्वप्न में भी ऐसा सोचा था कि मुझ आत्मा को परमात्म पढ़ाई का अधिकार प्राप्त होना है। लेकिन अभी साकार में अनुभव कर रहे हो। स्वयं सतगुरु अमृतवेले से रात तक हर कर्म की श्रेष्ठ मत दे कर्म बन्धन के परिवर्तन में, कर्म सम्बन्ध में आने की श्रीमत देने के निमित्त बनायेंगे - यह भी स्वप्न में नहीं था। लेकिन अभी अनुभव से कहते हो हमारा हर कर्म श्रीमत पर चल रहा है। ऐसा अनुभव है? ऐसा श्रेष्ठ भाग्य हर बच्चों का बापदादा भी देख-देख हर्षित होते हैं। वाह मेरे श्रेष्ठ भाग्यवान वाह! बच्चे कहते वाह बाबा वाह! और बाप कहते वाह बच्चे वाह!

आज अमृतवेले से बच्चों के दो संकल्पों से याद बापदादा के पास पहुँची। एक तो कई बच्चों को अपना एकाउन्ट देने की याद थी। दूसरी - बाप के संग के रंग की होली याद थी। तो सभी होली मनाने आये हो ना! ब्राह्मणों की भाषा में मनाना अर्थात् बनना। होली मनाते हैं अर्थात् होली बनते हैं। बापदादा देख रहे थे ब्राह्मण बच्चों का होलीएस्ट बनना कितना सर्व से न्यारा और प्यारा है। वैसे द्वापर के आदि की महान आत्मायें और समय प्रति समय आये हुए धर्म पितायें भी पवित्र, होली बने हैं। लेकिन आपकी पवित्रता सबसे श्रेष्ठ भी है, न्यारी भी है। कोई भी सारे कल्प में चाहे महात्मा है, चाहे

धर्म आत्मा है, धर्म पिता है लेकिन आप की आत्मा भी पवित्र, शरीर भी पवित्र, प्रकृति भी सतोप्रधान पवित्र, ऐसा होलीएस्ट कोई न बना है, न बन सकता है। अपना भविष्य स्वरूप सामने लाओ। सबके सामने अपना भविष्य रूप आया? या पता ही नहीं है कि बनूंगा या नहीं बनूंगा! क्या बनूंगा! कुछ भी बनेंगे लेकिन होंगे तो पवित्र ना! शरीर भी पवित्र, आत्मा भी पवित्र और प्रकृति भी पवित्र पावन, सुखदाई.... निश्चय की कलम से अपना भविष्य चित्र सामने ला सकते हैं। निश्चय है ना! टीचर्स को निश्चय है? अच्छा एक सेकण्ड में अपना भविष्य चित्र सामने ला सकते हो? चलो कृष्ण नहीं बनेंगे, लेकिन साथी तो बनेंगे ना! कितना प्यारा लगता है। आर्टिस्ट बनना आता है या नहीं आता है? बस सामने देखो। अभी साधारण हूँ, कल (ड्रामा का कल, यह कल नहीं जो कल आयेगा) तो कल यह पवित्र शरीरधारी बनना ही है। पाण्डव क्या समझते हो? पक्का है ना, शक्य तो नहीं है - पता नहीं बनेंगे या नहीं बनेंगे? शक्य है? नहीं है ना! पक्का है। जब राजयोगी हैं तो राज्य अधिकारी बनना ही है। बापदादा कई बार याद दिलाते हैं कि बाप आपके लिए सौगात लाये हैं तो सौगात क्या लाये हैं? सुनहरी दुनिया, सतोप्रधान दुनिया की सौगात लाये हैं। तो निश्चय है, निश्चय की निशानी है रूहानी नशा। जितना अपने राज्य के समीप आ रहे हो, घर के भी समीप आ रहे हो और अपने राज्य के भी समीप आ रहे हो, तो बार-बार अपने स्वीट होम और अपने स्वीट राज्य की स्मृति स्पष्ट आनी ही चाहिए। यह समीप आने की निशानी है। अपना घर, अपना राज्य ऐसा ही स्पष्ट स्मृति में आये, तीसरे नेत्र द्वारा स्पष्ट दिखाई दे। अनुभव हो आज यह, कल यह। कितने बार पार्ट पूरा कर अपने घर और अपने राज्य में गये हो, याद आता है ना! और अब फिर से जाना है। डबल फारेनर्स स्पष्ट याद आता है कि खींचना पड़ता है, पता नहीं क्या बनेगा, कैसा होगा! खींचना पड़ता है या स्पष्ट है? याद है? स्पष्ट है? पीछे वालों को याद है? गैलरी में बैठने वालों को याद है? (आज की सभा १६-१७ हज़ार की है) बापदादा देख रहे हैं, बाहर भी बैठे हैं और विश्व के

कोने-कोने में भी बैठे हैं। तो होली मना ली ना? हो ही होली, तो होली क्या मनायेंगे! यह तो संगमयुग के सुहेज हैं।

तो बापदादा आज सबका एकाउन्ट देखेंगे ना! भूला नहीं है। सबने अपना एकाउन्ट रखा, जिन्होंने एक्यूरेट अपना एकाउन्ट रखा है, नियम प्रमाण, काम चलाऊ नहीं, यथार्थ रूप से जैसा भी है लेकिन एकाउन्ट अपना पूरा रखा है, सच्चा-सच्चा एकाउन्ट, चलाऊ नहीं, वह बड़ा हाथ उठाओ। जिन्होंने रखा है, लिखा है नहीं, रखा है। थोड़ों ने रखा है। अच्छा पीछे वाले जिन्होंने रखा है, खड़े हो जाओ। अच्छा। डबल फारेनर्स जिन्होंने रखा है वह उठो। अच्छा मुबारक हो। अच्छा - जिन्होंने नहीं रखा है उन्हों से हाथ नहीं उठवाते हैं। उठाना अच्छा नहीं लगेगा ना। लेकिन जिन्होंने सच्चा-सच्चा एकाउन्ट रखा है, बापदादा के पास तो स्पष्ट हो ही जाता है। कइयों ने थोड़ा हिसाब से नहीं, जैसे एवरेज निकाला जाता है ना, ऐसे भी रखा है। एक्यूरेट बहुत थोड़ों ने लिखा है या रखा है। फिर भी बाप के डायरेक्शन को माना इसलिए बापदादा ने दो प्रकार की एक्स्ट्रा मार्क्स उन्हों की बढ़ाई, क्योंकि श्रीमत पर चलना यह भी एक सब्जेक्ट है। तो श्रीमत पर चलने की सब्जेक्ट में पास हुए इसलिए फर्स्ट नम्बर वालों को बापदादा ने अपने तरफ से ७७ मार्क्स बढ़ाई, जो पहला नम्बर हैं और जो दूसरा नम्बर हैं उसको ८७ मार्क्स बढ़ाई। यह एक्स्ट्रा लिफ्ट बापदादा ने अपने तरफ से दी। तो फाइनल पेपर में आपकी यह मार्क्स जो हैं वह जमा होंगी। पास विद आनर होने में मदद मिलेगी। लेकिन जिन्होंने नहीं रखा है, कोई भी कारण है, है तो अलबेलापन और तो कुछ नहीं है लेकिन फिर भी कोई भी कारण से अगर नहीं रखा है तो बापदादा कहते हैं कि फिर भी एक मास अपना एकाउन्ट अभी से रखो और अगर अभी भी एक मास एक्यूरेट, नम्बरवन वाला एकाउन्ट रखेंगे, तो बापदादा उसकी मार्क्स कट नहीं करेंगे, जो श्रीमत प्रमाण नहीं कर सके हैं। समझा। कट नहीं करेंगे लेकिन करना ज़रूरी है। श्रीमत न मानने से मार्क्स तो कट होती हैं ना! अन्त में जब आप अपना पोतामेल ड्रामा अनुसार दिल

के टी.वी. में देखेंगे और टी.वी. नहीं, अपने ही दिल की टी.वी. में बापदादा दिखायेंगे, तो उसमें इस श्रीमत की मार्क्स कट नहीं करेंगे। फिर भी बापदादा का प्यार है। समझते हैं कि बहुत जन्म के अलबेलेपन के संस्कार पक्के हैं ना, तो हो जाता है। लेकिन अभी अलबेले नहीं बनना, नहीं तो फिर पीछे बतायेंगे क्या होगा, अभी नहीं बताते हैं क्योंकि बापदादा ने सभी की वर्तमान समय की रिज़ल्ट देखी। चाहे डबल फारेनर्स, चाहे भारतवासी, सभी बच्चों की रिज़ल्ट में देखा कि वर्तमान समय अलबेलेपन के बहुत नये-नये प्रकार बच्चों में हैं। अनेक प्रकार का अलबेलापन है। मन ही मन में सोच लेते हैं, सब चलता है..। आजकल का सब बातों में यह विशेष स्लोगन है - ''सब चलता है'' - यह अलबेलापन है। साथ में थोड़ा-थोड़ा भिन्न-भिन्न प्रकार का पुरुषार्थ वा स्व-परिवर्तन में अलबेलेपन के साथ कुछ परसेन्ट में आलस्य भी है। हो जायेगा, कर ही लेंगे... बापदादा ने नये-नये प्रकार की अलबेलेपन की बातें देखी हैं। इसलिए अपना सच्चा, सच्ची दिल से अलबेले रूप से नहीं, एकाउन्ट ज़रूर रखो।

आज इस सीजन का लास्ट टर्न है ना! तो बापदादा रिज़ल्ट सुना रहे हैं। सुनाये ना! कि नहीं सिर्फ प्यार करें? यह भी प्यार है। हर एक से बापदादा का इतना प्यार है कि सभी बच्चे ब्रह्मा बाप के साथ-साथ अपने घर में चलें। पीछे-पीछे नहीं आवें, साथी बनके चलें। तो समान तो बनना पड़े ना! बिना समानता के साथी बनके नहीं चल सकेंगे और फिर अपने राज्य का पहला जन्म, पहला जन्म तो पहला ही होगा ना! अगर दूसरे-तीसरे जन्म में आ भी गये, अच्छा राजा भी बन गये, लेकिन कहेंगे तो दूसरा-तीसरा ना! साथ चलें और ब्रह्मा बाप के साथ पहले जन्म के अधिकारी बनें - यह है नम्बरवन पास विद आनर वाले। तो पास-विद्-आनर बनना है या पास मार्क्स वाले भी ठीक हैं? कभी भी यह नहीं सोचना कि जो हम कर रहे हैं, जो हो रहा है वह बापदादा नहीं देखते हैं। इसमें कभी अलबेले नहीं होना। अगर कोई भी बच्चा अपने दिल का चार्ट पूछे तो बापदादा बता सकते हैं लेकिन अभी बताना नहीं

है। बापदादा हर एक महारथी, घोड़ेसवार... सबका चार्ट देख रहे हैं। कई बार तो बापदादा को बहुत तरस आता है, हैं कौन और करते क्या हैं? लेकिन जैसे ब्रह्मा बाप कहते थे ना - याद है क्या कहते थे? गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। शिव बाबा जाने और ब्रह्मा बाबा जाने क्योंकि बापदादा को तरस बहुत पड़ता है लेकिन ऐसे बच्चे बापदादा के रहम के संकल्प को टच नहीं कर सकते, कैच नहीं कर सकते। इसीलिए बापदादा ने कहा - भिन्न-भिन्न प्रकार का रॉयल अलबेलापन बाप देखते रहते हैं। आज बापदादा कह ही देते हैं कि तरस बहुत पड़ता है। कई बच्चे ऐसे समझते हैं कि सतयुग में तो पता ही नहीं पड़ेगा कौन क्या था, अभी तो मौज मना लो। अभी जो कुछ करना है कर लो। कोई रोकने वाला नहीं, कोई देखने वाला नहीं। लेकिन यह गलत है। सिर्फ बापदादा नाम नहीं सुनाते, नाम सुनायें तो कल ठीक हो जाएं।

आज धुरिया मना रहे हैं ना। धुरिये में एक-दो को जो भी होता है स्पष्ट दे देते हैं। तो समझा क्या करना है, पाण्डव समझा कि नहीं समझा! चल जायेगा? चलेगा नहीं क्योंकि बापदादा के पास हर एक की हर दिन की रिपोर्ट आती है। बाप-दादा आपस में भी रूहरूहान करते हैं। तो बापदादा सभी बच्चों को फिर से इशारा दे रहे हैं कि समय सब प्रकार से अति में जा रहा है। माया भी अपना अति का पार्ट बजा रही है, प्रकृति भी अपना अति का पार्ट बजा रही है। ऐसे समय पर ब्राह्मण बच्चों का अपने तरफ अटेन्शन भी अति अर्थात् मन-वचन-कर्म में अति में चाहिए। साधारण पुरुषार्थ नहीं। बापदादा ने इशारा दिया भी है कि ६६ वर्ष में अभी तक ६ लाख तैयार किये हैं। अभी ६ लाख भी नहीं हुए हैं। तो विश्व कल्याणी आत्मायें विश्व की सर्व आत्माओं का कल्याण कब करेंगे? और ६६ वर्ष चाहिए क्या? ६६ वर्ष और नहीं चाहिए? डबल फारेनर्स को चाहिए? नहीं चाहिए? तो क्या करेंगे? चलो आधा, ३३ वर्ष चाहिए? नहीं चाहिए। ३३ वर्ष भी नहीं चाहिए तो क्या करेंगे? वैसे बापदादा ने देखा है कि सेवा से लगन अच्छी है। सेवा के लिए एवररेडी हैं, चांस मिले तो प्यार से सेवा के लिए एवररेडी हैं। लेकिन अभी सेवा में एडीशन करो - वाणी के साथ-साथ मनसा, अपनी आत्मा को विशेष कोई-न-कोई प्राप्ति के स्वरूप में स्थित कर वाणी से सेवा करो।

मानो भाषण कर रहे हो तो वाणी से तो भाषण अच्छा करते ही हो लेकिन उस समय अपने आत्मिक स्थिति में विशेष चाहे शक्ति की, चाहे शान्ति की, चाहे परमात्म-प्यार की, कोई न कोई विशेष अनुभूति की स्थिति में स्थित कर मनसा द्वारा आत्मिक-स्थिति का प्रभाव वायुमण्डल में फैलाओ और वाणी से साथ-साथ सन्देश दो। वाणी द्वारा सन्देश दो, मनसा आत्मिक स्थिति द्वारा अनुभूति कराओ। भाषण के समय आपके बोल आपके मस्तक से, नयनों से, सूरत से उस अनुभूति की सीरत दिखाई दे कि आज भाषण तो सुना लेकिन परमात्म प्यार की बहुत अच्छी अनुभूति हो रही थी। जैसे भाषण की रिज़ल्ट में कहते हैं बहुत अच्छा बोला, बहुत अच्छा, बहुत अच्छी बातें सुनाई, ऐसे ही आपके आत्म-स्वरूप की अनुभूति का भी वर्णन करें। मनुष्य आत्माओं को वायब्रेशन पहुँचे, वायुमण्डल बने। जब साइंस के साधन ठण्डा वातावरण कर सकते हैं, सबको महसूस होता है बहुत ठण्डाई अच्छी आ रही है। गर्म वायुमण्डल अनुभव करा सकते हैं। साइंस सर्दी में गर्मी का अनुभव करा सकती है, गर्मी में सर्दी का अनुभव करा सकती, तो आपकी साइन्स क्या प्रेम स्वरूप, सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप वायुमण्डल अनुभव नहीं करा सकती! यह रीसर्च करो। सिर्फ अच्छा-अच्छा किया लेकिन अच्छे बन जायें, तब समाप्ति के समय को समाप्त कर अपना राज्य लायेंगे। क्यों, आपको अपना राज्य याद नहीं आता? संगमयुग श्रेष्ठ है वह ठीक है, हीरे तुल्य है। लेकिन हे रहमदिल, विश्व कल्याणी बच्चे, अपने दु:खी अशान्त भाई बहनों पर रहम नहीं आता? उमंग नहीं आता, दु:खमय संसार को सुखमय बना दें, यह उमंग नहीं आता? दु:ख देखने चाहते, दूसरों का दु:ख देखकर भी रहम नहीं आता? आपके भाई हैं, आपकी बहिनें हैं तो दु:ख देखना अच्छा लगता है? अपना दयालु, कृपालु स्वरूप इमर्ज करो। सिर्फ सेवा में नहीं लग जाओ, यह प्रोग्राम किया, यह प्रोग्राम किया... चलो वर्ष पूरा हुआ। अभी मर्सीफुल बनो। चाहे दृष्टि से, चाहे अनुभूति से, चाहे आत्मिक स्थिति के प्रभाव से, मर्सीफुल बनो। रहमदिल बनो। ९९ वर्ष समाप्त हो चुके

हैं। कम नहीं हैं ६६ वर्ष। ब्रह्मा बाप को अव्यक्त होते भी ३३ वर्ष हो गये हैं। ब्रह्मा बाप कब-कब कहते भी हैं, कब बच्चे आयेंगे, दरवाजा खोलने के लिए। तो घर का दरवाजा साथ में खोलेंगे या पीछे-पीछे आयेंगे? इन्तजार कर रहा है। तो सेवा में एडीशन करो। इससे बापदादा गैरन्टी दे रहे हैं कि थोड़े समय में अगर इस विधि से सेवा की तो आपके पास क्वालिटी की वर्षा हो जायेगी। वारिस क्वालिटी की बारिश पड़ेगी। इतनी मेहनत करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। कहना ही नहीं पड़ेगा - अभी यह कार्य होना है, इसमें सहयोगी बनो, नहीं। सहयोग की स्वयं आफर करने वाले होंगे। लेकिन साधारण पुरुषार्थ, साधारण विधि की सेवा को परिवर्तन करो। छिम-छिम होनी चाहिए। होनी तो है ही। सिर्फ अनुभूति कराने की विधि सोचो, सिर्फ भाषण और कोर्स कराने की नहीं, वह बहुत करा लिए। वर्गीकरण के प्रोग्राम भी बहुत कर लिये। जो आये उस पर छाप लगे, ८ लाख की छाप लग जाए। समझा। क्या करना है? कहते थे सर्विस का प्लैन सुनाना, कहा था ना? अभी कोई छिम-छिम करके दिखाओ। अभी धीमी चाल है। जैसे लक्ष्मी के लिए कहते हैं ना, दोनों हाथों से सम्पत्ति की छिम-छिम हो रही है, तो आप अभी श्रेष्ठ ब्राह्मण बन अनुभूतियों की छिम-छिम करो। लेकिन अनुभूति वह करा सकेंगे जो और व्यर्थ चिंतन, व्यर्थ दर्शन और व्यर्थ समय गंवाने वाले नहीं होंगे। आजकल थोड़ा-थोड़ा, बापदादा ने थोड़ा देखा है। वह भी सुनायें क्या? अच्छा आज सब सुना देते हैं। होली है ना! तो होली में बुरा नहीं मानते हैं। अच्छा।

बापदादा ने एक बात और भी देखी है, सुनाना अच्छा नहीं लगता। कभी-कभी कोई-कोई बच्चे, अच्छे-अच्छे भी दूसरों की बातों में बहुत पड़ते हैं। दूसरों की बातें देखना, दूसरों की बातें वर्णन करना... और देखते भी व्यर्थ बातें हैं। विशेषता एक दो की वर्णन करना, वह कम है। हर एक की

विशेषता देखना, विशेषता वर्णन करना, उनकी विशेषता द्वारा उनको उमंग-उत्साह दिलाना, यह कम है। लेकिन व्यर्थ बातें जिन बातों को, बापदादा कहते हैं छोड़ दो, अपनी तो छोड़ने की कोशिश करते, लेकिन दूसरे की देखने की भी आदत है। उसमें टाइम बहुत जाता है। बापदादा एक विशेष श्रीमत दे रहे हैं - है कामन बात लेकिन टाइम बहुत वेस्ट जाता है। बोल में निर्माण बनो। बोल में निर्माणता कम नहीं होनी चाहिए। भले साधारण शब्द बोलते हैं, समझते हैं, इसमें तो बोलना ही पड़ेगा ना! लेकिन निर्माणता के बजाए अगर कोई अथॉरिटी से, निर्माण बोल नहीं बोलते तो थोड़ा कार्य का, सीट का, ॐ परसेन्ट अभिमान दिखाई देता है। निर्माणता ब्राह्मणों के जीवन का विशेष शृंगार है। निर्माणता मन में, वाणी में, बोल में, सम्बन्ध-सम्पर्क में....हो। ऐसे नहीं तीन बातों में तो मैं निर्माण हूँ, एक में कम हूँ तो क्या हुआ! लेकिन वह एक कमी पास विद आनर होने नहीं देगी। निर्माणता ही महानता है। झुकना नहीं है, झुकाना है। कई बच्चे हंसी में ऐसे कह देते हैं क्या मुझे ही झुकना है, यह भी तो झुके। लेकिन यह झुकना नहीं है वास्तव में परमात्मा को भी अपने ऊपर झुकाना है, आत्मा की तो बात ही छोड़ो। निर्माणता निरंहकारी स्वत: ही बना देती है। निरंहकारी बनने का पुरुषार्थ करना नहीं पड़ता है। निर्माणता हर एक के मन में, आपके लिए प्यार का स्थान बना देती है। निर्माणता हर एक के मन से आपके प्रति दुआयें निकालेगी। बहुत दुआयें मिलेंगी। दुआयें, पुरुषार्थ में लिफ्ट से भी राकेट बन जायेंगी। निर्माणता ऐसी चीज़ है। कैसा भी कोई होगा, चाहे बिजी हो, चाहे कठोर दिल वाला हो, चाहे क्रोधी हो, लेकिन निर्माणता आपको सर्व द्वारा सहयोग दिलाने के निमित्त बन जायेगी। निर्माण, हर एक के संस्कार से स्वयं को चला सकता है। रीयल गोल्ड होने के कारण स्वयं को मोल्ड करने की विशेषता होती है। तो बापदादा ने देखा है कि बोल-चाल में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, सेवा में भी एक दो के साथ निर्माण स्वभाव विजय प्राप्त करा देता है। इसलिए इस वर्ष में विशेष बापदादा इस वर्ष को निर्माण, निर्मल वर्ष का नाम दे रहे हैं। वर्ष मनायेंगे ना। मनाना माना बनना। सिर्फ कहना नहीं, हाँ यह वर्ष है। बनना है। बनना है ना? बस ऐसे बोलो जो सब कहें और भी मोती

हमको सुनाओ, मोती दो। ऐसे नहीं कहें - नहीं, नहीं यह तो सुनो नहीं, जाओ। ऐसे नहीं। हीरे-मोती मुख से निकलें। अभिमान से बोलने से किसको दु:ख क्यों देते हो! दु:ख के खाते में जमा तो होगा ना। आप समझते हो क्या हुआ बोल दिया, ऐसे ही तो है। लेकिन दु:ख के खाते में जमा होता है। समझा। इसीलिए एकाउन्ट रखना। ऐसे नहीं अभी तो एकाउन्ट दे दिया? रखने से फायदा है।

बापदादा ने देखा कइयों ने पुरुषार्थ अच्छा किया है। अटेन्शन दिया है। तो क्या याद रखेंगे? निर्माण। तब निर्माण का कर्त्तव्य फटाफट होगा। निर्माण बनो, निर्माण करो। फिर आपेही बोलेंगे, बाबा अभी तो छिम-छिम हो गई है। होनी ही है। सारे विश्व की आत्मायें अहो प्रभु कहके भी आपके आगे झुकनी हैं। तो सुना वर्ष की सेवा का सुनाया ना! अभी देखेंगे कौन-सा सेन्टर, कौन-सा ज़ोन, ज़ोन में भी कौन-सा सेन्टर इस विधि से वारिस निकालते हैं। अभी कोई वारिसों की छिम-छिम करो। वह होगी अनुभूति कराने से। सबसे बड़े ते बड़ी अथॉरिटी अनुभव है। अनुभवी को कोई बदल नहीं सकता। अच्छा।

डबल फारेनर्स को एक सेकण्ड में कोई भी व्यर्थ बात, कोई भी निगेटिव बात, कोई भी बीती बात, उसको मन से बिन्दी लगाना आता है? डबल फारेनर्स जो समझते हैं कि कैसी भी बीती हुई बात, अच्छी बात तो भूलनी है ही नहीं, भूलनी तो व्यर्थ बातें ही होती हैं। तो कोई भी बात जिसको भूलने चाहते हैं, उसको सेकेण्ड में बिन्दी लगा सकते हैं? जो फारेनर्स लगा सकते हैं, वह सीधा, लम्बा हाथ उठाओ। मुबारक हो। अच्छा, जो समझते हैं कि एक सेकण्ड में नहीं एक घण्टा तो लगेगा ही? सेकण्ड तो बहुत थोड़ा है ना! एक घण्टे के बाद बिन्दी लग सकती है, वह हाथ उठाओ। जो घण्टे में बिन्दी लगा सकते हैं, वह हाथ उठाओ। देखा, फारेनर्स तो बहुत अच्छे हैं। भारतवासी भी जो समझते हैं एक घण्टे में नहीं आधे दिन में बिन्दी लग सकती है, वह हाथ उठाओ। (कोई ने हाथ नहीं उठाया) हैं तो सही, बापदादा को पता है।

बापदादा तो देखता रहता है, हाथ नहीं उठाते, लेकिन लगता है। लेकिन समझो आधा दिन लगे, एक घण्टा लगे और आपको एडवांस पार्टी का निमन्त्रण आ जाए तो? तो क्या रिज़ल्ट होगी? अन्त मते सो गति क्या होगी? समझदार तो हो ना? इसलिए अपनी मनसा को बिज़ी रखेंगे ना, मनसा सेवा का टाइमटेबुल बनायेंगे अपना तो बिन्दी लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। बस, होंगे ही बिन्दी रूप। इसलिए अभी अपने मन का टाइमटेबुल फिक्स करो। मन को सदा बिज़ी रखो, खाली नहीं रखो। फिर मेहनत करनी पड़ती है। ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन के बच्चे हो, तो आपका तो एक-एक सेकण्ड का टाइमटेबुल फिक्स होना चाहिए। क्यों नहीं बिन्दी लगती, उसका कारण क्या? ब्रेक पावरफुल नहीं है। शक्तियों का स्टॉक जमा नहीं है इसीलिए सेकण्ड में स्टॉप नहीं कर सकते। कई बच्चे कोशिश बहुत करते हैं, जब बापदादा देखते हैं मेहनत बहुत कर रहे हैं, यह नहीं हो, यह नहीं हो... कहते हैं नहीं हो लेकिन होता रहता है। बापदादा को बच्चों की मेहनत अच्छी नहीं लगती। कारण यह है, जैसे देखो रावण को मारते भी हैं, लेकिन सिर्फ मारने से छोड़ नहीं देते हैं, जलाते हैं और जलाके फिर हड्डियां जो हैं, वह आजकल तो नदी में डाल देते हैं। कोई भी मनुष्य मरता है तो हड्डियां भी नदी में डाल देते हैं तभी समाप्ति होती है। तो आप क्या करते हो? ज्ञान की प्वाइंटस से, धारणा की प्वाइंट्स से उस बात रूपी रावण को मार तो देते हो लेकिन योग अग्नि में स्वाहा नहीं करते हो। और फिर जो कुछ बातों की हड्डियां बच जाती हैं ना - वह ज्ञान सागर बाप के अर्पण कर दो। तीन काम करो - एक काम नहीं करो। आप समझते हो पुरुषार्थ तो किया ना, मुरली भी पढ़ी, DD बारी मुरली पढ़ी फिर भी आ गई क्योंकि आपने योग अग्नि में जलाया नहीं, स्वाहा नहीं किया। अग्नि के बाद नाम निशान गुम हो जाता है फिर उसको भी बाप सागर में डाल दो, समाप्त। इसलिए इस वर्ष में बापदादा हर बच्चे को व्यर्थ से मुक्त देखने चाहते हैं। मुक्त वर्ष मनाओ। जो भी कमी हो, उस कमी को मुक्ति दो, क्योंकि जब तक मुक्ति नहीं दी है ना, तो मुक्तिधाम में बाप के

साथ नहीं चल सकेंगे। तो मुक्ति देंगे? मुक्ति वर्ष मनायेंगे? जो मनायेगा वह ऐसे हाथ करे। मनायेंगे? एक-दो को देख लिया ना, मनायेंगे ना! अच्छा है। अगर मुक्ति वर्ष मनाया तो बापदादा जौहरातों से जड़ी हुई थालियों में बहुत-बहुत मुबारक, ग्रीटिंग्स, बधाइयाँ देंगे। अच्छा है, अपने को भी मुक्त करो। अपने भाई-बहनों को भी दु:ख से दूर करो। बिचारों के मन से यह तो खुशी का आवाज निकले - हमारा बाप आ गया। ठीक है। अच्छा।

बाकी दादियां पूछती हैं - बापदादा का प्रोग्राम क्या होगा? यही क्वेश्चन है ना! तो बापदादा कहते हैं जैसे अब तक प्रोग्राम चल रहा है, उसी विधि से चलना ही है। बाकी कभी आवश्यकता हुई तो दादियों की दिल पूरी करेंगे, लेकिन आवश्यकता हुई तो। दादी समझती है बाप का आना तो बहुत सहज है ना। क्यों नहीं बापदादा आवे। लेकिन रथ को भी तो देखो। ७७ वर्ष पार्ट बजाना भी आफरीन है। इतनी बड़ी शक्तियों को धारण करना, छोटी बात नहीं है। दादी क्या करती है बतायें, कोई भी बात होगी कहेगी अभी-अभी जाओ, सन्देश लेके आओ। तो बच्ची कहती है दादी अभी तो दिन है, रात को जायेंगे। नहीं, नहीं, अभी-अभी जाओ। मरना तो पड़ता है ना। शरीर से तो मरना पड़ता है ना। चाहे सन्देश हो, चाहे बापदादा की पधरामनी हो। पधरामनी तो बड़ी बात है लेकिन सन्देश में भी अशरीरी, मीठा मरना है लेकिन मरना तो है ना! इसलिए फिर भी बापदादा का दादियों के लिए बहुत-बहुत-बहुत रिगार्ड और प्यार है। प्यार की रस्सी में बांधना अच्छी तरह से आता है। अच्छा।

मीटिंग के भाई-बहनों से

जो भी मीटिंग के लिए आये हैं वह उठो। अच्छा। और भी आने वाले होंगे। मीटिंग में इसी विधि से सर्विस के प्लैन बनाना और मुक्त वर्ष मनाने की सहज विधि बताना - एक दो को राय देना। इस वर्ष में सब मुक्त हो जाएं। हो सकता है? एक वर्ष में हो सकता है? बोलो, हो सकता है? हाँ तो

बहुत अच्छी कर रहे हैं, दिल खुश कर दिया। ऐसे ही खुश करना। बस हर एक अपने को मुक्त करो, दूसरे को नहीं देखो। अपनी जिम्मेवारी तो ले सकते हो ना। अगर हर एक ने अपनी-अपनी जिम्मेवारी ले ली तो सब हो जायेगा। आपको फालो करने वाले आपेही फालो करेंगे। एक्जैम्पुल तो बनो ना। अच्छा। तो ऐसा प्लैन बनाना। यह कान्फ्रेन्स हुई, यह भाषण हुआ, यह नहीं। मन की स्थिति के प्रोग्राम बनाना। अच्छा।

सेवा का टर्न - राजस्थान, इन्दौर का है – सेवाधारी बहुत हैं। ग्रुप भी बड़ा है ना! अच्छा सभी ने अपने पुण्य का खाता जमा किया! दुआयें ली? यह बहुत सहज विधि है, जमा करने में सबसे सहज विधि है, दुआयें दो अर्थात् दुआयें लो। दुआयें देना ही दुआ लेना है। तो आप सबने दुआओं का खाता जमा किया, तो आपके खाते में मार्क्स जमा हो गई हैं। अच्छा है, यह भी एक चांस मिलता है। तो पहले सुनाया था ना - वह होते हैं युनिवर्सिटी के चांसलर, आप हो पुण्य के खाते का चांस लेने वाले चांसलर। तो बहुत अच्छा किया। सभी ने अच्छी सेवा की। सबको सुख दिया। ठीक रहे ना! सेवा ठीक रही? सेवा में कोई तकलीफ तो नहीं हुई? नहीं। बहुत अच्छा।

कल्चरल विंग, सोशल विंग और सिक्यूरिटी विंग की मीटिंग चल रही है

कल्चरल वर्ग – कल्चरल वर्ग वाले सभी कल्चरल करने वाली आत्माओं को ब्राह्मण कल्चर भी सिखाते हो ना! तो कल्चरल और कल्चर दोनों ही सिखाते सभी आत्माओं को बाप के समीप लाते रहो। कल्चरल तो मनोरंजन है, तो सदा मनोरंजन कैसे रहे, वह शिक्षा वा वह विधि भी सिखाके सभी को सदा खुश बनाना। अच्छा है यह भी सर्विस का साधन अच्छा है। लेकिन दोनों साथ-साथ हों। तो सब सेवा में सन्तुष्ट हो ना! सन्तुष्ट हो?

सिक्यूरिटी वाले – मन की सिक्यूरिटी, तन की सिक्यूरिटी और धन की सिक्यूरिटी तीनों ही सिक्यूरिटी आज के जमाने में बहुत आवश्यक हैं।

सिक्यूरिटी वालों को पहले आत्माओं को मन से विकारों की सिक्यूरिटी और तन से बुरे कर्म करने की सिक्यूरिटी और धन को सफल करने की सिक्यूरिटी.. तो तीनों ही काम करते हो ना! या सिर्फ सिक्यूरिटी स्थूल तो नहीं करते ना, पहले मन की सिक्यूरिटी, जितनी अपने मन की सिक्यूरिटी होगी, उतनी ही दूसरे को भी मन की सिक्यूरिटी में आगे बढ़ा सकेंगे। अच्छा काम है, बहुत आवश्यक कार्य है। सिक्यूरिटी सबसे आवश्यक है और ऐसे सिक्यूरिटी वाले तो विश्व के लिए बहुत कल्याणकारी आत्मायें हैं। तो बहुत अच्छा कार्य कर रहे हो और सदा आगे बढ़ते रहना, बढ़ाते रहना। अच्छा।

सोशल वर्ग – हर वर्ग का कार्य तो बहुत सुन्दर है। वर्तमान समय में सोशल वर्ग का कार्य भी आवश्यक है। और सोशल वर्कर में विशेषता होती अथक और प्यार से हर कार्य में सोशल वर्क करना। तो आप तो मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, इसलिए अथक भी हैं और हर कार्य में हर विधि से सोशल वर्ग द्वारा आत्माओं का कल्याण कर भी रहे हैं और करते भी रहेंगे। ठीक है ना? बहुत अच्छा। अभी हर एक वर्ग जो बापदादा ने विधि सुनाई उसी विधि प्रमाण प्रोग्राम बनाना। ठीक है ना! अच्छा।

चारों ओर के सर्व होलीएस्ट आत्माओं को, सदा निर्माण बन निर्माण करने वाले बापदादा के समीप आत्माओं को, सदा अपने पुरुषार्थ की विधि को फास्ट, तीव्र कर सम्पन्न बनने वाले स्नेही आत्माओं को, सदा अपने बचत का खाता बढ़ाने वाले तीव्र पुरुषार्थी, तीव्र बुद्धि वाले बच्चों को विशाल बुद्धि की मुबारक भी है और होली की भी अर्थात् सेकण्ड में हो ली, बिन्दी लगाने वाले बच्चों को बहुत-बहुत याद-प्यार, कोने-कोने के बच्चों को बापदादा विशेष याद-प्यार दे रहे हैं। आपके पोतामेल भी मिले हैं, याद-प्यार के पत्र भी मिले हैं, कार्ड भी मिले हैं और दिल के संकल्प भी पहुँचे हैं, दिल की रूहरूहान भी पहुँची है, उन सबके रिटर्न में बापदादा पदमगुणा याद-प्यार दे रहे हैं। याद-प्यार के साथ सभी बच्चों को नमस्ते।

दादियों से बापदादा की मुलाकात

अभी भी जितना नजदीक से आप मिलते हो, उतना कौन मिलता है! (निर्मलशान्ता दादी से) अच्छा पार्ट बजा रही हो। प्रकृति को चलाने का ढंग अच्छा है। (बाबा चलाता है) और आप चल रही हो। चलाने वाला चला रहा है। सभी अच्छे चल रहे हैं। शरीर को अच्छा चलाने का ढंग आ गया है। अच्छा है, जो हो रहा है अच्छा है। अच्छा। ओम् शान्ति।

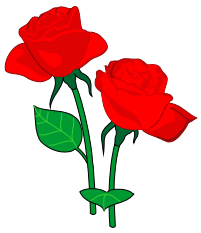

अव्यक्त सन्देश

(अव्यक्त वतन से प्राप्त अव्यक्त सन्देशों का संग्रह)

ब्रह्माकुमारी दादी हृदयमोहनी जी एवं मोहिनी बहन द्वारा अव्यक्त वतन से बापदादा ने जो दिव्य सन्देश दिये हैं, यहाँ उन्हीं का संकलन है।

अप्रैल 2001 से अप्रैल 2002 तक

5-5-2001

बाप को अपना अविनाशी कम्पेनियन और कम्पनी बनाओ

आज बापदादा को काल आफ टाइम ग्रुप की याद दी और समाचार सुनाया। बापदादा ने बड़े स्नेह स्वरूप से मीठा मुस्कराते हुए बोला - इन बच्चों में भी उमंग-उत्साह अच्छा है कि विश्व की आत्माओं को स्व परिवर्तन द्वारा शान्ति, शक्ति की प्राप्ति हो।

देखो बच्ची, बच्चों ने समय की पुकार सुनी। बाप ने फिर इन लवली बच्चों के दिल का आवाज सुना। बाबा ओ मीठे बाबा मर्सीफुल बाबा, मेरे बाबा। अब बच्चे भी जानते जाते हैं कि बाबा कौन है, क्या है इसलिए बापदादा भी दिल की याद-प्यार दे रहे हैं। बाप कहते बच्चे, सदा अपने बच्चे के सम्बन्ध से अधिकारी बन पूरा अधिकार लेते रहो। बस बाप को अपना अविनाशी कम्पेनियन बनाओ और हर हाल में अपना सहारा और सहयोग देने वाली कम्पनी है, इस अनुभव से सहज आगे बढ़ते चलो। बाप के याद की गोदी वा छत्रछाया में सदा सेफ रहो। कोई भी समस्या, परिस्थिति आवे सिर्फ दिल से याद करो ओ मेरे मीठे बाबा तो अनुभव करेंगे बापदादा मेरे साथी बन साथ हैं और सफलता सामने अनुभव होगी क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों की सफलता जन्म सिद्ध अधिकार है।

ऐसे कहते बापदादा ने विशेष सर्व लण्डन निवासी बच्चों को सेवा में साथी बनने वाले बच्चों को नाम सहित याद दी और साथ में दादी जानकी को बहुत प्यार किया कि बच्ची अपने रथ के रहस्य को जान शक्तिवान रथवान बन आगे बढ़ रही है और आगे भी सूली से कांटा बनता जायेगा। उड़ती, उड़ाती रहेगी। साथ में अपनी मीठी दादी को भी याद किया कि बाप के मीठे स्नेह के साथ के अलौकिक झूले में झूलते शरीर को और सेवा को बहुत आगे बढ़ाती रहती है। दोनों दादियों का उमंग-उत्साह सबको उड़ा रहा है, मैं तो साक्षी हो मुस्करा रही थी।

12-5-2001

लक्ष्य की सम्पन्नता के लिए दृढ़ता और परिपक्वता की आवश्यकता

आज बापदादा के पास पहुँची तो बापदादा का बहुत मीठे रूप से मिलन हुआ। क्या देखा, बापदादा लाइट की पहाड़ी पर खड़े हैं और बापदादा के चारों ओर से भिन्न-भिन्न शक्तियों के भिन्न-भिन्न रंग की लाइट चारों ओर फैल रही हैं। यह रूप तो बहुत दिल को आकर्षित करने वाला था। आप भी अपने दिल में रूहानी आर्टिस्ट बन सामने लाइये तो ऐसा ही लगता कि १. मधुरता २. स्नेह ३. शक्ति और ४. विश्व सेवा, सबका स्वरूप था। मैं भी धीरे-धीरे सुन्दर अनुभव करती आगे बढ़ती गई। कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्ची क्या देख रही हो! वर्तमान समय हर बच्चे को ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान रूप में अपनी रूहानी शक्तियों को स्व प्रति और सर्व के प्रति कार्य में लगाना है तब विश्व परिवर्तन, विश्व कल्याण होगा।

उसके बाद बाबा ने समाचार पूछा, मैंने सुनाया कि बाबा अब ११ मई की तारीख आ गई है तो सब तरफ आपकी श्रीमत प्रमाण संस्कार परिवर्तन की लहर फैली हुई है। सब तरफ योग भट्ठियां बहुत अच्छी चल रही हैं।

सबका अटेन्शन इस बात पर है कि परिवर्तन करना ही है। मधुबन में सर्व स्थानों में सबने रिज़ल्ट की चिटकियां लिखी हैं। उसमें अटेन्शन तो सबका रहा है लेकिन परसेन्टेज किसकी कितनी, किसकी कितनी है। फारेन में भी चारों ओर बहुत अच्छा अटेन्शन है। काल आफ टाइम वालों को भी यह बाबा का दिया हुआ काम बहुत याद है। बापदादा बहुत प्यार से सुन रहे थे और ऐसे लग रहा था जैसे सब बच्चों को बाबा दिल से प्यार दे रहे हैं। उसके बाद बाबा बोले, बापदादा भी सब तरफ की रिज़ल्ट अटेन्शन की देख हर्षित हो रहे हैं लेकिन आगे उसमें सम्पन्नता लाने के लिए और दृढ़ता परिपक्वता लानी है। परसेन्टेज़ को बढ़ाना है क्योंकि अब समय प्रमाण चारों प्रकार की हलचल और बढ़ती जानी है:- 1. प्रकृति की 2. वायुमण्डल दूषित की 3. माया के नये-नये प्रकार की बातों की। 4. आत्माओं के आपसी सम्बन्धों की। इसलिए अब हर समय बच्चों को रूहानी लाइट के कार्ब में सेफ रहना है। लाइट-माइट हाउस बन स्व परिवर्तन द्वारा औरों प्रति भी परिवर्तन के वायुमण्डल की लहर फैलानी है, जो एक दो को देख औरों में भी स्वत: सहज बल मिले। बापदादा आज विशेष हर बच्चे को स्व-परिवर्तन द्वारा सर्व ब्राह्मणों में संस्कार परिवर्तन का सहयोग दे, उमंग-उत्साह बढ़ाने के कार्य में निमित्त बनने की जिम्मेवारी का ताज पहना रहे हैं। बोलो, यह ताज धारण करने की हिम्मत है ना? बस यही हर समय संकल्प हो कि इस कार्य में ''पहले मैं''। मुझे ही निमित्त बनना है, सम्पन्न करना है। किसी भी बातों को देखना नहीं है। आगे बढ़ना है, बढ़ाना ही है। इसके बाद बाबा को इस वर्ष में और आगे होने वाले प्रोग्राम्स का समाचार सुनाया। बाबा बोले, बच्ची प्रोग्राम्स तो सब अच्छे बनाये हैं। अच्छे उमंग-उत्साह से सर्व के स्नेह से सम्पन्न करो, इसमें प्रत्यक्षता स्पष्ट सामने आयेगी।

उसके बाद बाबा को जगदीश भाई का समाचार सुनाया। सुनते ही बाबा के नयनों में जगदीश जी प्रति स्नेह समा गया और बहुत दिल व जान से स्नेह दे रहे थे। फिर बोले बच्चे ने दधीचि ऋषि समान अपनी हड्डियां सेवा में लगा

दी। शरीर की नॉलेज में और सेवा के उमंग में बैलेन्स कम रखा इसलिए बीमारी बढ़ गई और सहन करना पड़ता है। बापदादा सभी बच्चों को कहते हैं डबल नॉलेजफुल बनो - शरीर और सेवा के। लेकिन आसक्त होकर नहीं, साक्षी होकर बैलेन्स रखो। फिर भी बच्चे ने सेवा दिल से की है। सेवा के नये-नये प्लैन्स और प्रैक्टिकल करने के निमित्त बने हैं, पुण्य जमा है। इसलिए सर्व का स्नेह, दुआयें, प्यार रिटर्न में मिल रहा है।

13-5-2001

स्पेशल बच्चों द्वारा वतन से स्पेशल सेवा करने का पार्ट

(१२ मई २००१, भ्राता जगदीश जी ने अपना पुराना चोला छोड़ बापदादा की गोद ली, वतन से प्राप्त दिव्य सन्देश तथा दादी गुलजार जी का अनुभव)

ड्रामा में भिन्न-भिन्न दृश्य हम सबके सामने आते हैं और यही शिक्षा देते हैं कि जो भी दृश्य देखते हैं वह साक्षी हो करके देखें और जो सहयोग हम दे सकते हैं वह दें। तो हम सबने आत्मा को स्नेह का, शक्ति का सहयोग दिया और आत्मा बहुत सहज बाबा के पास चली गई। एक सेकण्ड की बात थी। मैं सामने ही थी, तो मैंने नहीं समझा कि यह जा रहा है, लेकिन मैं समझती हूँ मुख से सहज ही सांस निकला। आँखें आधी खुली हुई थी और बिल्कुल सेकण्ड में बॉडी शान्त हो गई अर्थात् आत्मा बाबा के पास चली गई।

तो आज अमृतवेले हम बाबा के पास गये, वहाँ तो बाबा की गोदी में जगदीश भाई आकारी रूप में लेटे हुए थे। और बाबा अपने हस्तों से उनके माथे पर हाथ फेर रहे थे और जगदीश भाई भी बहुत मीठी दृष्टि बाबा से ले रहे थे। तो बाबा ने कहा देखो, बच्चा चाहता था कि मैं अभी इस शरीर से तो सेवा कर नहीं सकूंगा तो बाबा ही मुझे बुला लेवे और जो सेवा मेरे से लेनी हो, वह लेवे। तो इसको ३-४ दिन पहले से ही यह संकल्प आ रहा था कि मुझे जाना

है, जाना है। तो जब आत्मा को संकल्प आ जाता है कि जाना है, तो वह जल्दी जाता है। तो हमने देखा कि उसे संकल्प था कि मुझे हॉस्पिटल में नहीं जाना है। शुरू से ही यह कहते थे। ड्रामानुसार मधुबन की हॉस्पिटल का पार्ट था, परन्तु २ दिन पहले बहुत अन्दर से था कि मुझे पाण्डव भवन ले चलो। तो जो इनके दोनों संकल्प थे कि हॉस्पिटल में नहीं जाना है और अभी जाना है। तो यह दोनों संकल्प बाबा ने पूरे किये और सहज बाबा के पास चले गये।

तो बाबा ने दृष्टि देते हुए पूछा बच्चे, अभी बाबा के पास पहुँच गये हो। तो मैं भी सामने गई थी। तो बाबा ने कहा बच्चे को यही आश थी कि मैं मधुबन से ही जाऊं, तो ड्रामानुसार देखो इनकी यह भी आशा पूरी हो गई, जो मधुबन से ही इस आत्मा को बाबा के पास आना था और मधुबन से ही विदाई लेनी थी। और विशेष तो हमारी दादी जी निमित्त थी तो उनसे ही जैसे छुट्टी के लिए रुके थे। तो लास्ट में दादी मिली, उसको बाहर से स्मृति नहीं थी लेकिन अन्दर आत्मा को तो स्मृति होती ही है। तो बाबा ने कहा इनके सब संकल्प पूरे हो गये। फिर बाबा ने कहा कि बच्चे को एक संकल्प और था कि मैं बाबा को प्रत्यक्ष नहीं कर सका, उसके लिए हमें और कुछ करना चाहिए जो बाबा प्रत्यक्ष हो जाए। तो इनका यह जो संकल्प है, अभी बाबा इसकी दूसरी सर्विस से पूरा करेगा। एक संकल्प इसका रह गया कि मैं बाबा को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनूं। तो बाबा ने कहा कि यह भी बच्चे की जो आश है, बाप को प्रत्यक्ष करने की उसके लिए किसी भी रूप में बाबा इनको निमित्त बनायेगा। यह भी बच्चे की आश पूरी हो जायेगी।

उसके बाद बाबा ने कहा कि बच्ची आप तो जानती हो कि यह हमारा स्पेशल बच्चा है। मैंने कहा बाबा स्पेशल तो बहुत हैं, तो बाबा ने कहा स्पेशल इस बात में है कि यह पहला ही बच्चा है जो बेगरी लाइफ में सरेन्डर हुआ है। तो हमें भी याद आया, कि जब यह समर्पण हुआ तब कमलानगर में सिर्फ दो छोटे कमरे थे। जहाँ कोर्स किया वह एक छोटा-सा स्थान दूसरा था, फिर मकान लेने में बहुत सहयोग दिया। लेकिन जब पहला कमला नगर का

सेन्टर लिया तो उसमें केवल दो ही कमरे थे, हाल भी नहीं था। एक में बहनें रहती थी और एक में जगदीश भाई रहते थे। वहाँ ही सारा कारोबार चलता था। और शुरू से इनका बहनों से बहुत प्यार था। हमें याद है उन दिनों गर्मी बहुत थी, तो कमला नगर से ४-५ किलोमीटर दूर बर्फखाना था, तो यह वहाँ जाकर सेवा करके वहाँ से अपने कंधे पर बर्फ की जो बड़ी ईंट (सिल्ली) होती है वह ले आता था। और सभी बहनों को ठण्डा पानी अथवा शरबत आदि पिलाने की सेवा करता था। और बाबा के डायरेक्शन से पहले-पहले कुम्भ मेले के लिए लिटरेचर तैयार किया था। पहला वह बुक लिखा था। तो सेवा के निमित्त शुरू से ही बने, इसलिए बाबा ने कहा कि यह स्पेशल आत्मा है इसीलिए मैं इस बच्चे से वतन में भी स्पेशल सेवा कराऊंगा। रोज़ अमृतवेले अपने साथ वर्ल्ड के ग्लोब पर खड़ा करके इसको भी सकाश देने की, लाइट हाउस बनकर आत्माओं को लाइट देने की स्पेशल सेवा इनसे वतन से कराऊंगा, और इनकी जो दिल है बाप को प्रत्यक्ष करने की, वह भी बाबा इनकी आशा किसी भी रूप से ज़रूर पूरी करायेगा।

फिर बाबा ने जगदीश भाई को कहा बच्चे अभी वतन तुम्हारा घर है, तुम खाओ, खेलो, आराम करो, जो मन में आये वह करो। ऐसे कहते बाबा ने मेरे को कहा कि आप जगदीश जी से मिलेंगी। बाबा ने कहा आप बात करो - मैंने कहा जगदीश जी, आप बाबा के पास आ गये! तो कहा आना ही था। बाकी मुझे यह बहुत खुशी है कि मधुबन निवासियों ने और आप सबने मुझे बहुत सहयोग दिया, जो मेरी सेवा की उससे मैं बहुत-बहुत खुश हूँ। तो सभी मधुबन निवासियों को और जो भी आवें सबको मेरी बहुत-बहुत याद देना। ऐसे कहते मिलन मनाते मैं साकार वतन में आ गई।

14-5-2001

अपने पुराने संस्कारों को भस्म करने में एवररेडी बनो

सदा के रीति प्रमाण बाबा के पास पहुँची। तो बाबा कुछ टाइम मुझे दिखाई नहीं दिये। मैं खड़ी थी तो थोड़े ही समय में बाबा हमारे जगदीश भाई को साथ लेकर आये। मैंने कहा बाबा आप कहाँ गये थे? तो बाबा ने कहा कि मैं बच्चे को सैर करा रहा था। तो मैंने पूछा बाबा कहाँ का सैर करा रहे थे? बाबा ने कहा कि इस बच्चे की दिल थी कि जैसे आप वतन में बैठ करके सब सेन्टर्स का सैर करते हैं, बच्चों से मिलन भी मनाते हैं, तो अभी मैं भी शरीर के बंधन से मुक्त हूँ, मैं भी यह सैर करने चाहता हूँ। आप बहुत जल्दी-से-जल्दी सैर कैसे करते हैं? तो बाबा ने कहा कि आज पहले तो जगदीश भाई को मधुबन की सीन दिखाई कि कैसे सब भाई-बहन आ रहे हैं। वह सीन दिखाने के बाद, फिर इसने कहा अभी मधुबन में क्या हो रहा है? तो बाबा ने सुनाया कि अभी आपके शरीर का अन्तिम संस्कार हो रहा है। तो कहा बाबा आप वतन में बैठकर कैसे देखते हो? बाबा ने कहा यह तो सेकण्ड का काम है। जैसे टी.वी., रेडियो का स्वीच आन करते हैं, ऐसे मैं संकल्प करता हूँ, यह संकल्प ही मेरा स्वीच है। बस संकल्प से, मन की गति से कहाँ भी पहुँच सकते हैं। जगदीश भाई ने बाबा को कहा कि बाबा मैं भी यह सीन देख सकता हूँ? तो बाबा ने कहा आप भी संकल्प का स्वीच आन करो क्योंकि अभी वतन में आप फरिश्ते रूप में हो। इस समय आपके पास सब शक्तियां इमर्ज हैं। आप जिस शक्ति का भी स्वीच आन करो, वह शक्ति आपको अनुभव करायेगी। तो बाबा ने उसको यहाँ की सब सीन दिखाई। जगदीश भाई ने कहा कि बाबा यहाँ बैठकर तो सब बहुत अच्छा, स्पष्ट दिखाई देता है। यह सारी सभा तो बहुत सजी हुई है। तो बाबा ने कहा देखो यह है आपकी सेवा और गुप्त स्नेह का रेसपान्ड, जो इतने सब पहुँच गये हैं! तो जगदीश जी बोले बाबा, इतनी टीचर्स अपना सेन्टर्स छोड़कर आ गई हैं! तो बाबा ने कहा देखो सभी एवररेडी का पाठ पक्का करके आई हैं। बाबा ने या दादी ने, ड्रामा ने बुलाया और देखो सब एवररेडी होके आ गये हैं, किसने सोचा ही नहीं कि सेन्टर का क्या होगा, ट्रेन मिलेगी या नहीं मिलेगी! तो

एवररेडी का प्रैक्टिकल पाठ बच्चों ने दिखाया, इसलिए बाबा भी बच्चों को बहुत-बहुत मुबारक देते हैं और आगे के लिए भी बच्चों को यह पाठ पढ़ा रहे हैं कि जैसे अभी आपको बुलावा हुआ तो पहुँच गये। यह स्नेह का रेसपान्ड दिया। ऐसे हर कार्य में भी यही पाठ पक्का करना। ऐसे कहते बाबा बहुत राज़युक्त मुस्कराने लगे।

मैंने कहा बाबा आप बहुत मीठा मुस्करा रहे हो, ऐसे लगता जैसे आपके मुस्कराने में कोई राज़ है। बाबा बात क्या है? तो बाबा बोले बच्ची, जैसे मधुबन में सभी इशारा मिलते ही पहुँच गये, वैसे अगर बाबा कहे कि बच्चे एक सेकण्ड में अपने पुराने संस्कारों को आग में जला दो, ऐसा भस्म कर दो, जो अंश मात्र भी नहीं रहे तो क्या बच्चे इसमें एवररेडी होंगे! जैसे इस बात में पास हो गये, ऐसे इस बात में भी पास हो जायेंगे? मैंने कहा बाबा, वह रिज़ल्ट तो आप जानो, हम लोग तो नहीं जान सकते। तो बाबा ने कहा बाबा को ड्रामानुसार बच्चों में भी निश्चय है और बच्चों को बाबा में निश्चय भी है तो दिल का प्यार भी है। निश्चय और प्यार यह दोनों ही बल बच्चों में हैं। तो जहाँ निश्चय है वहाँ विजय होती है, जहाँ प्यार होता है वहाँ कुर्बानी होती है। मैजारिटी बच्चों के पुरुषार्थ में परसेन्टेज है लेकिन प्यार में परसेन्टेज नहीं है, इसलिए बच्चे प्यार में कुर्बानी करने में क्या देरी करेंगे! तो जैसे अभी पेपर में सब पास हो गये ऐसे फाइनल पेपर में भी ज़रूर पास हो जायेंगे। टोटल रिज़ल्ट में बाबा ने देखा, कि बापदादा ने जो ६ मास में २७ परसेन्ट का इशारा दिया था, उसी प्रमाण मैजारिटी सभी के अन्दर लक्ष्य है कि हम बाबा को परिवर्तन का रेसपान्ड दें लेकिन लक्षण में परसेन्टेज है। सभी तरफ की रिज़ल्ट में अटेन्शन रहा है, लक्ष्य को भी अन्डरलाइन किया है लेकिन टेन्शन फ्री हो जायें, लक्षण को भी 100 परसेन्ट अन्डरलाइन करें तो क्या नहीं हो सकता!

फिर बाबा ने जगदीश जी को कहा आप क्या समझते हो? तो जगदीश भाई ने कहा मेरी तो यही एक आश रह गयी, हमने सोचा था कि हम संगठित

रूप में एक दो को अभी ऐसा पुरुषार्थ करायें ताकि बाबा जो चाहते हैं उस रीति सभी फुल परसेन्टेज में पास हो जाएं। तो बाबा ने कहा तुम तो [illegible] के बजाए [illegible] मई को आ ही गये। अच्छा है शरीर से मुक्ति तो मिली। तो पुराने संस्कारों से भी मिल गई। अभी तो नया होगा, नये संस्कार होंगे। मैंने कहा बाबा यह आया तो सही, [illegible] के बजाए [illegible] में आ गया लेकिन तकलीफ क्यों सहन होती है? मैंने जगदीश जी की तरफ आँखें करके यह बात कही, हमने सोचा कि देखें यह क्या कहता है! तो वह चुप रहा लेकिन बाबा ने कहा कि इस बच्चे की काफी समय से एक आश थी कि बाबा मुझे धर्मराज पुरी में नहीं भेजना, यहाँ भले मुझे कर्मभोग चुक्तू कराना। और दूसरी आश थी कि मेरा मृत्यु बहुत सहज हो। लेकिन बाबा ने जैसे सुनाया है कि बच्चा डबल नॉलेजफुल बनने का बैलेन्स नहीं रख सका, सेवा खूब की, शरीर पर ध्यान कम दिया इसलिए बीमारी बढ़ गई और तकलीफ सहन करनी पड़ी। लेकिन मृत्यु बहुत सहज हुआ। यह इसकी सेवा का पुण्य है, जो ऐसे सहज गया जो सामने वालों को भी पता नहीं चला।

उसके बाद मैंने कहा कि बाबा सभी भाई-बहनें जो आये हैं, सबने बहुत-बहुत याद दी है और दादी ने तो सन्देश दिया है कि इतने सब भाई-बहन आये हैं तो बाबा आ जाए। तो बाबा मुस्कराया, मुस्करा के हाँ ना नहीं की, बाबा चतुरसुजान है ना। तो ऐसे ही बात को चला दिया और कहा कि तुमने जगदीश भाई से पूछा कि यहाँ वतन में आकर क्या कर रहा है? तो मैंने जगदीश जी की तरफ देखा, तो जगदीश जी बोले कि बाबा ने मुझे कहा है - अभी तुमको जो भी करना है, अमेरिका देखना है, स्पेश देखना है, राकेट में सैर करनी है, परमधाम का सैर करना है या सेन्टर्स का, जो भी आपकी दिल हो वह पूरी कर लो फिर तो आपको पार्ट बजाना पड़ेगा। ऐसे कहते जगदीश जी चुप हो गये।

फिर मैंने कहा बाबा आप धीरे-धीरे सभी को एडवांस पार्टी में ले रहे हो, इसका मतलब क्या, यहाँ भी तो चाहिए। तो बाबा ने कहा क्यों तुमको डर

लगता है क्या? मैंने कहा बाबा डर तो नहीं लगता है, मैं तो वतन में आ जाऊंगी। लेकिन आप नम्बरवार सबको लिये जा रहे हो। तो बाबा ने कहा एडवांस पार्टी में सब प्रकार की आत्मायें चाहिए। अभी एडवांस पार्टी के प्लैनिंग बुद्धि में फोर्स आयेगा। आप लिस्ट निकालना जिन्होंने यज्ञ में सेवा करते-करते शरीर छोड़ा है, उसमें सब प्रकार के बच्चे हैं। स्थापना में सभी प्रकार के चाहिए ना! मैंने कहा बाबा यहाँ कमी हो रही है और आप वहाँ इकट्ठे कर रहे हो। तो कहा कि आप लोगों के लिए ही कर रहा हूँ, क्या आपको योगबल से जन्म नहीं लेना है! आपके लिए ही तैयारी करा रहा हूँ। यह ड्रामा की भावी बनी हुई है, जो बाबा भी बदल नहीं सकता। इसलिए बच्ची एडवांस पार्टी एडवांस में काम कर रही है और आप अपने संस्कार परिवर्तन का एडवांटेज उठाओ, जो बाबा आर्डर करे फुल परिवर्तन। मैंने कहा बाबा फुल परिवर्तन कैसे करेंगे! तो कहा मैं भी समझता हूँ कि ब्रह्मा बाबा जितना सम्पूर्ण तो सब नहीं बनेंगे, नहीं तो सब नम्बरवन हो जायें, होंगे तो सब नम्बरवार, लेकिन अपने हिसाब से तो सम्पूर्ण बनें। आर्डर करूं कि बस संस्कार परिवर्तन, तो एक सेकण्ड में एवररेडी हो जाएं, तो इसका एडवान्टेज लेना है।

फिर मैंने सभी की जगदीश भाई को याद दी तो जगदीश भाई ने कहा मेरी भी खास मेरे साथी पाण्डवों को और विशेष टीचर्स को याद देना, जो इतना जल्दी मेरे प्रति पहुँच गई हैं। नाम मेरा है लेकिन पहुँचे तो बाबा के प्यार में हैं। टीचर्स के प्रति बाबा को कहा कि बाबा आप भी इन्हों को बहुत-बहुत याद-प्यार दो ना। तो बाबा ने कहा मेरी तो याद-प्यार है ही और मैं आज अमृतवेले जो विशेष पावरफुल योग में बैठेंगे, उन सभी बच्चों को कोई-न-कोई शक्ति की विशेष गिफ्ट दूंगा। तो जगदीश भाई ने कहा कि हमारे तरफ से भी कह दो कि यह गिफ्ट है। तो सभी आज अमृतवेले विशेष यह अनुभव करना। थके हुए भी हो तो भी खास अटेन्शन देके कोई-न-कोई शक्ति की अनुभूति करना। हिम्मत बच्चों की मदद बाबा की एक्स्ट्रा होगी। फिर जगदीश

भाई ने खास हॉस्पिटल वालों को बहुत याद किया। कहा हॉस्पिटल वालों ने (डाक्टर्स, नर्सेज आदि) सभी ने जो सेवा की वह भूलने वाली नहीं है और चक्रधारी बहन, साधना बहन, योगेश भाई, चिमन भाई इन सबने जो प्यार से सेवा की है, उन्हें भी बहुत-बहुत शुक्रिया कहना। फिर जब मैं बाबा से छुट्टी ले रही थी तो खास निर्वैर भाई को याद किया। कहा निर्वैर भाई ने बहुत तोड़ निभाई और बहुत दिल से मेरी सेवा की। फिर कहा कि दादी ने भी मेरी बहुत सेवा की। इतना काम होते हुए भी रोज़ मेरे पास ओम् शान्ति करने ज़रूर आती थी और लास्ट में भी ओम् शान्ति करके गई। तो दादी ने बड़े दिल से जैसे दुआयें दी। इसलिए दादी को भी याद किया। फिर बाबा ने कहा, अभी तो तुमको बहुत टाइम हो गया सभी नीचे इन्तजार कर रहे हैं। ऐसे याद-प्यार लेते मैं नीचे आ गई।

17-5-2001

याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा कार्य करने से यादगार बनते हैं

आज आप सबका याद-प्यार लेते हुए जब वतन में पहुँची, तो आज बाबा से नयन मुलाकात करते ऐसे लगा जैसे कहते हैं एक आंख में मुक्ति, एक आंख में जीवनमुक्ति तो उसी रीति से आज बाबा के नयनों से स्नेह और शक्ति इन दोनों की भासना आ रही थी। और इस स्थिति में जैसे खोये हुए थे। फिर बाबा बोले बच्ची क्या समाचार लेके आई हो! यह साज़ भरा आवाज़ ऐसा लगता था जैसे कहीं दूर-दूर से आ रहा हो। तो मैं बाबा को देखती ही रही, ऐसे लगता था जैसे जादूगर ने अपने स्नेह और शक्ति के जादू से अपनी ओर खींच रखा है। मैं बोल नहीं सकती थी, जैसे उसी स्थिति में स्थित थी। तो बाबा ने फिर कहा कि बच्ची क्या सन्देश लायी हो? मैंने कहा बाबा आपको सबने याद-प्यार दिया है और साथ ही साथ हमारे जगदीश भाई को भी दादी जी सहित सबने बहुत-बहुत याद-प्यार दिया है।

तो बाबा मुस्कराये और मैं चारों तरफ देखने लगी कि जगदीश भाई कहाँ है। तो बाबा ने कहा क्या देख रही हो बच्ची ? मैंने कहा मैं जगदीश भाई को देख रही हूँ, वह दिखाई नहीं दे रहे हैं। तो बाबा ने कहा कि बच्ची आज सतगुरुवार है ना, तुम भोग किसके लिए लायी हो ? तो मैंने कहा कि सतगुरु बाबा के लिए और बाबा फिर अपने बच्चों को भी खिलाता है। तो बाबा ने कहा कि पहले आप जिस कार्य के लिए आयी हो वह कार्य करो, तो मैने जैसे भोग स्वीकार कराने के लिए हाथ बढ़ाया तो बाबा मुस्कराये और बाबा ने कहा कि देखो बच्ची ४-५ दिन जगदीश बच्चा बाबा के वतन में रहा और जो बच्चे की इच्छा थी देखने की, जानने की, बाप के पास रहकर अव्यक्त वतन का अनुभव करने की...वह सब बाबा ने बच्चे की इच्छा पूरी की, सब अनुभव कराया, आज वतन से बच्चे की विदाई का दिन है।

तो बाबा बच्चे को तैयार कर रहा है तो जैसे ऐसे लगा कि बाबा आह्वान कर रहा है और कुछ ही सेकेण्ड के बाद मैं सामने देखती हूँ कि जगदीश भाई धीरे-धीरे आ रहे हैं। जब नज़दीक पहुँचे तो बहुत प्यार से बाबा से नयन मुलाकात करने के बाद जगदीश भाई ने मुझे देखा और बहुत प्यार से मुस्कराये। कहा आप आ गयी। मैंने कहा हाँ, आपको सबने बहुत-बहुत याद-प्यार दिया है। तो उन्होंने बाबा को देखा फिर मुझे देखा और मुस्कराया। तो बाबा ने कहा कि बच्चे मधुबन से आज भोग आया है, तो मेरे साथ-साथ आपको भी स्वीकार करना है। जगदीश भाई ज्ञानी तू आत्मा तो है ही, तो कहा कि पहले तो सतगुरु बाबा स्वीकार करेगा क्योंकि सतगुरुवार है और उसके बाद में आप फिर हमको खिलाइयेगा। तो बाबा ने कहा बच्चे इसमें तुम्हारा भी नाम लिखा हुआ है, तुम्हारी याद भी समाई हुई है तो कहा नहीं पहले आप। तो बाबा को हमने पहले भोग स्वीकार कराया फिर बाबा ने अपने हाथ से बड़े प्यार से जगदीश जी के मुख में गिट्टी खिलाई, अमृत पिलाया। जगदीश जी इतना प्रफुल्लित हो रहे थे, इतना गद्‌गद् हो रहे थे कि बार-बार यही बोले बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा.. आपने मुझे कितना बड़ा

सौभाग्य दिया और बाबा उनके सिर पर बहुत प्यार से हाथ फेर रहे थे। मैं दोनों का प्यार देख रही थी फिर मैंने कहा जगदीश जी आप ठीक हो! तो बोला बाबा के पास में तो कौन नहीं ठीक होगा, न ठीक होने वाले भी ठीक हो जाते हैं। और मैं तो बहुत-बहुत खुश हूँ कि बाबा ने मेरी सब इच्छायें पूरी कर दी।

पहले मैं सोचता था कि आप लोग कैसे वतन में जाते हो, वतन कैसा होगा। ज्ञान की बुद्धि से मैं वतन को इमर्ज करता था लेकिन आज मैं प्रैक्टिकल अनुभव कर रहा हूँ कि वतन में कैसी स्थिति होती है और वतन का अनुभव क्या होता है। वतन में बाबा के साथ में मिलन, बाबा की भासना, बाबा का प्यार और बाबा के साथ में जो मुझे रहने का इतना सुनहरा अवसर मिला, यह मेरे लिए सबसे मूल्यवान, सबसे भाग्यवान समय है जो बाबा ने मुझे सब अनुभव कराया। वैसे कहते थे जैसे एरोप्लेन से हम नीचे देखते हैं ऐसे ही वतन से नीचे देखते होंगे। लेकिन नहीं जब हम एरोप्लेन से नीचे देखते हैं तो नीचे बादल होते हैं और नीचे दिखाई भी देता तो पता नहीं चलता कौन है, क्या है, छोटे-छोटे जैसे गुड़ियों के घर होते हैं, ऐसे दिखाई देते हैं। लेकिन बाबा जो मुझे वतन से नीचे दिखाता है उसमें मैं सब कुछ इतना स्पष्ट देखता हूँ जैसे साकार वतन में कोई ऊपर छत से नीचे देखे तो सबके चेहरे भी दिखाई देंगे, क्या पहना है वह भी दिखाई देगा, क्या कर रहे हैं - वह भी दिखाई देगा तो बाबा के साथ मैंने वतन से जो कुछ भी देखा वह मैंने बहुत स्पष्ट देखा। जो मेरी दिल थी मैं यह-यह देखूँ, बाबा ने मुझे सब दिखाया भी और अनुभव भी कराया। बाबा ने मेरे को सब सेन्टर्स का भी चक्कर लगवाया। अमृतवेले का भी बच्चों का योग, बच्चों की स्थिति, रूहरूहान, बच्चे जो बाप के आगे अर्जी डालते थे, वह सब सीन बाबा ने मुझे दिखाये। रात का समय भी दिखलाया, कैसे सो रहे हैं, कैसे सुबह हो रही है, यह भी सब बाबा ने दिखलाया। और कैसे अण्डरग्राउण्ड यह परीक्षण करते हैं, कैसे ऊपर जा रहे हैं। तो ऊपर का, नीचे का सब अनुभव बाबा ने मुझे कराया। सर्व प्रकार के ज्ञान का अनुभवी बना दिया। बाबा ने मुझे इतना स्नेह दिया, इतनी शक्ति भरी है जो लगता है कि बाबा मुझे जैसे फिर से इतनी श्रेष्ठ,

इतनी ऊंची सेवा के लिए तैयार कर रहा है। जैसे कोई परीक्षा में जाता है तो तैयारी कराते हैं ना, तो बाबा भी मुझे ऊंची परीक्षा में, ऊंची सेवा में भेजने के लिए मुझे तैयार कर रहा है।

और आज बाबा ने मुझे इशारा दिया कि बच्चे अभी तुम बाबा के पास में रहे, सबकुछ अनुभव किया, अब तुमको सेवा के निमित्त जाना है। तो बाबा मुझे जहाँ भेजेगा मैं तो एवररेडी हूँ। बाबा ने हर प्रकार से मेरे को एवररेडी बना दिया है। तो आज मैं इस वतन से अपने साथियों से विदाई ले रहा हूँ। तो साकार वतन निवासी मेरे सभी भाई-बहनों को मेरी बहुत-बहुत याद-प्यार देना कि आप सबने मेरे को बहुत प्यार दिया, स्नेह दिया, सेवा की.. जहाँ-जहाँ भी मैं बीमारी के कारण गया, निमित्त बीमारी थी लेकिन मैं समझता था कि यह बीमारी-बीमारी नहीं है लेकिन बाबा मुझ से बेहद की सेवा करा रहा है। तो मैंने शरीर को नहीं देखा लेकिन मैं जहाँ भी गया, सेवा ही करता रहा और मैंने अपनी सेवा का यादगार सभी स्थानों पर छोड़ा। और सबने मुझे प्यार दिया, चाहे वह लण्डन हो, बाम्बे हो, अहमदाबाद वाले हों, हास्पिटल वाले हो और दिल्ली शक्तिनगर, डेरावाल, दिल्ली की जितने भी सेन्टर्स हैं, सभी भाई-बहनों को मेरी याद-प्यार देना और साथ-साथ विशेष दिल्ली के डा. गुप्ता जी, परिवार को बहुत याद दी कहा इन्होंने मेरी बहुत बड़े प्यार और लगन से सेवा की है। मधुबन निवासियों को तो मैं क्या कहूँ, सबकी शुभ भावनायें मुझे सदा उमंग-उत्साह देती रही, सदा मुझे आगे बढ़ाती रही और सदा मेरे अन्दर शक्ति पैदा करती रही और कैसे मैं इतना दिन वहाँ रहा, कैसे समय निकल गया, पता ही नहीं चला। तो मैं सेवा का रिटर्न क्या दूँ और कैसे दूँ, मेरी शुभ कामनायें सदा सबके साथ हैं। और साथ-ही-साथ उन्होंने कहा कि सोनीपत में जो सहयोगी-स्नेही पंजाब-हरियाणा के भाई-बहनें हैं, जिन्होंने इतना सहयोग दिया, मेरी बात को सुना, समझा और यथा शक्ति करने की कोशिश की है, उन सबको मेरा बहुत-बहुत याद-प्यार देना। मैंने कहा कि जगदीश भाई आज तो आपने याद-प्यार का भण्डारा खोल दिया।

तो बोले बात यह है कि मैं अब इन सबसे विदाई ले रहा हूँ ना तो एक-एक करके मेरी आँखों के सामने सबकी तस्वीरें आ रही हैं और मैं कैसे सबके स्नेह का रिटर्न करूँ, यह मेरी समझ में नहीं आता है लेकिन मेरे अन्दर उनकी याद है इसीलिए मेरे अन्दर से उनके प्रति याद-प्यार निकल रहा है।

फिर बोला कि अब तो मैं निश्चिंत हूँ, मेरे को और कोई इच्छा नहीं है। बाबा बैठा है, दादी बैठी है, गुलजार दादी बैठी है सारे भाई-बहिन बैठे हैं, जो कुछ करेंगे वह अच्छे के लिए करेंगे और उन सब बातों में सफलता मिलेगी, इसलिए मैं तो निश्चिंत हूँ कि जो कल्प पहले हुआ था वही होगा और वही हो रहा है। सोनीपत की जमीन के लिए कहा कि जो मेरे विचार थे, जो मेरी दिल थी, जो मेरे संकल्प थे वह मैने सब कह दिये। मेरे अन्दर ऐसा नहीं है कि यह रह गया, वह रह गया, मैंने अपने सब संकल्प पूरे कर दिये, अब मेरे अन्दर कुछ रहा नहीं। तो जैसे वह अपने मन की भावनायें बोले जा रहे थे। फिर उसके बाद बाबा ने कहा कि बच्चे तुम्हारे अन्दर जैसे बहुत ज्ञान भरा है, ऐसे सब आत्माओं के प्रति शुभ भावना और शुभ कामनायें भी भरी पड़ी है। सभी आपके संस्मरण सुनाते रहते हैं। तो बाबा ने कहा कि जो याद में रहकर, याद और सेवा का बैलेन्स रखकर कोई भी कार्य करते हैं उसका यादगार बन जाता है। तो आप अपना यादगार छोड़कर आये हैं, जो आपको सब किसी ना किसी रीति से याद करते रहेंगे।

फिर जगदीश भाई ने कहा कि जिसका नाम न लिया हो उसको भी मेरी याद-प्यार स्वीकार हो और दादी जानकी को बहुत याद-प्यार दिया कहा कि दादी जानकी की शुभ भावनायें सूक्ष्म में मिलती रहती हैं, उनको रिटर्न में मेरा बहुत याद-प्यार देना। सभी हमारे मुख्य भाइयों, मुख्य बहनों को, सभी मीटिंग वालों को सबको बहुत याद-प्यार देना और ऐसे याद-प्यार देते उन्होंने बाबा के तरफ देखा तो बाबा जैसे उनको बहुत प्यार से दृष्टि दे रहे थे। देते-देते-देते जैसे जगदीश जी सूक्ष्म-सूक्ष्म-सूक्ष्म बनते-बनते एकदम बिन्दु बन जैसे एक लाइट में समा गये। और बाबा ऐसे ही उनको लास्ट तक

देखता रहा। उस समय बहुत गहरी शान्ति का अनुभव हो रहा था, फिर बाबा ने उसी शान्ति में मेरे को दृष्टि देते इधर भेज दिया। ओम् शान्ति।

27-5-2001

डबल लाइट बन उड़ने के लिए मेरे को तेरे में परिवर्तन कर सब बोझ बाप को दे दो

आज जब मैं वतन में बाबा के पास पहुँची तो बाबा ऐसे वरदान का हाथ जैसे सबके ऊपर घुमा रहा था। मैंने कहा बाबा मैं तो आज सबकी याद-प्यार लेके आई हूँ। बाबा ने कहा मैंने आपके पहले ही सोनीपत की धरनी को इमर्ज किया है क्योंकि इस बच्चे की (जगदीश जी की) बहुत शुभ भावना थी कि मैं भी इस सोनीपत की धरनी को देखूं, क्या-क्या नीचे हो रहा है, वह बाबा मुझे भी नीचे दिखाना। तो यह मेरा मुरब्बी बच्चा है, मुरब्बी बच्चे की तो सब आशायें बाबा रखता ही है। तो बाबा ने सिर्फ ऐसे किया जैसे किसको बुलाया जाता है, तो जगदीश जी पहुँच गये। बाबा ने कहा बच्चा, तुम्हारी यही आशा थी ना कि इस धरनी पर जो पहला प्रोग्राम हो रहा है, वह मैं ज़रूर देखूं। तो देखो। तो जगदीश जी बहुत ध्यान से एक-एक को देख रहे थे। चारों ओर लास्ट तक जैसे उनकी दृष्टि गई। सभी को देखते मुस्करा रहे थे। आप सब भी मुस्करा रहे थे। बाबा ने कहा अभी देख लिया। कहा, हाँ बाबा बहुत अच्छा देखा। तो बाबा ने कहा कि देखो बच्चे आपका जो भी संकल्प रहा हुआ है, वह यह सब भाई बहिनें पूरा कर देंगे। आप निश्चिंत रहो। तो जगदीश जी हंसने लगे। कहा बाबा मेरी यह दिल है कि जो भी सारे वर्ल्ड के इतने सब हमारे ब्राह्मण भाई-बहनें हैं, उन सबकी अंगुली से यह ऐसा स्थान बने जो वर्ल्ड में वन्डरफुल हो। जैसे और ८ वन्डर्स गिनने में आते हैं तो यह स्थान भी एक वन्डरफुल इन वर्ल्ड हो, ऐसी मेरी इच्छा है। तो बाबा ने कहा देखो आप अभी निश्चिंत हो जाओ, आपके जो सहयोगी भाई-बहनें हैं, वह ऐसे ही बनायेंगे जो वन्डर आफ दी वर्ल्ड होगा। तो बहुत खुश होते हुए कहा

कि बाबा बस मेरी और कोई इच्छा नहीं है, मेरी यही इच्छा है कि बाबा को प्रत्यक्ष करें। जो भी इस रास्ते से आवे-जावे, सुने, तो उसे बाबा-बाबा ही दिखाई दे। बस बाबा प्रत्यक्ष हो जाए, वर्ल्ड की कोई भी आत्मा बाबा के परिचय से वंचित न रहे। हर एक को कुछ तो वर्सा मिलना चाहिए। तो बाबा मेरी एक ही आशा है कि बस इस धरनी द्वारा बाबा की प्रत्यक्षता हो और सभी आत्माओं को मुक्ति व जीवनमुक्ति का वर्सा आप द्वारा ज़रूर प्राप्त हो। तो बाबा ने कहा कि अरे बाबा क्या नहीं कर सकता, वह तो जादूगर है! बाकी तुम निश्चिंत रहो। बाबा उनको बार-बार कह रहे थे, आप निश्चिंत रहो। तो जगदीश जी ने कहा कि बाबा अभी मैं यहाँ इमर्ज हुआ हूँ ना, इसलिए मुझे अपने दिल के उमंग आ रहे हैं, बाकी मैं निश्चिंत हूँ।

उसके बाद बाबा ने कहा देखो आपके लिए भोग आया है। जब आप हॉस्पिटल में थे तब खाना कम खाते थे, अभी आपके लिए जो भोग आया है, वह पेट भरके खा लो। तो कहा बाबा पहले आप मेरे को खिलाओ। तो बाबा ने कहा क्यों नहीं, तो बाबा ने भोग की थाली से हलुआ हाथ में लिया और गिट्टी बनाकर उसको खिलाने लगा तो कहा नहीं बाबा पहले मैं आपको खिलाऊंगा। तो उसने भी गिट्टी उठाई और बाबा के मुख में डाला, बाबा ने उनके मुख में डाला। ऐसे बहुत प्यार से भोग स्वीकार किया।

फिर बाबा ने कहा बच्चे, तुम्हारी जो भी आशायें हों या सन्देश देना हो तो वह बच्ची को सुना दो, वह जाकर सुनायेंगी। पहले तो वह बाबा में ही मस्त था फिर मेरे को देखा। कहा गुल्ज़ार बहन आपने तो बहुत अच्छा पार्ट बजाया है। आपने भोग लगाया, आप मेरे से मिलने आई... मेरी यही इच्छा थी। आप भी मिली, बाबा भी मिले। फिर कहा कि मेरे तरफ से सभी भाई-बहनों को यही कहना कि बस अभी जो बाबा की आशायें हैं ना - वह जल्दी-से-जल्दी पूर्ण करें। ढीलाढाला नहीं चलें। ढीले क्यों चलते हैं, उसका भी कारण सुनाया कि कोई-न-कोई चाहे संस्कार का, चाहे परिवार का, चाहे माया का, चाहे समस्याओं का... बोझ है, इस कारण ढीले चलते हैं। तो

सभी को मेरी तरफ से यही कहना कि आज सारा बोझ बाबा को दे दो। मेरा-मेरा नहीं कहो, तेरा-तेरा कहो। मेरा शब्द अगर बोलना है तो मेरा बाबा कहो लेकिन और जो हद का मेरा-मेरा है उसमें सिर्फ यही परिवर्तन करो, मेरा के बजाए तेरा करो। बस अभी बोझ हटा दो, कोई भी प्रकार का चाहे मन का बोझ हो, चाहे परिवार का हो, चाहे शरीर के कर्मबन्धन, कर्मभोग का हिसाब हो, कोई भी बोझ हो, आज आप मेरे के बजाए तेरा कर दो, बाबा को दे दो। तो आप सभी हल्के हो जायेंगे और हल्के जो होंगे वह उड़ेंगे, उसकी तेज गति होगी।

फिर बाबा ने कहा कि बच्चे को यही है कि अभी जब समय फास्ट हो रहा है - नई-नई बातें हो रही हैं। जो असम्भव बातें हैं वह भी सम्भव हो रही हैं। तो जब समय की गति फास्ट हो रही है, तो बच्चों को भी अभी तीव्रगति से सिर्फ चलना नहीं है, दौड़ना नहीं है, हाइजम्प नहीं देना है लेकिन उड़ना है। तो उड़ने में देरी नहीं लगेगी। बाकी चलने में तो पत्थर भी आयेंगे, कंकड़ भी आयेंगे। सब कुछ आयेगा लेकिन उड़ने में कोई भी समस्या नहीं। और फास्ट गति में आ करके जो बाबा की आशायें हैं, उसी समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकरके बाबा के साथ अपने घर में चलेंगे। तो जगदीश जी ने कहा कि गुलजार बहन आप सभा से पूछना कि सचमुच सभी बाबा के साथ डबल लाइट बन उड़ने के लिए तैयार हैं? (दादी ने जब पूछा तो सभी ने हाथ उठाया) हाथ तो उठा रहे हो लेकिन बोझ भी उतारना पड़ेगा। जो भी बोझ हो, आज इस सोनीपत की धरनी पर अपना बोझ उतारकर जाना तो सच्चे सोने बन जायेंगे क्योंकि साकार बाबा सोनीपत को सोनपुट कहता था। (पुट अर्थात् बच्चा)।

ऐसे बाबा से भी रूहरूहान चल रही थी तो बीच में जगदीश जी भी बोल रहे थे। फिर बाबा को जगदीश जी ने कहा कि मुझे एक बात की बहुत खुशी है जो आपने मुझे सब सीन वतन से दिखाई। लास्ट में भी (संस्कार के समय भी) सब सीन दिखाई थी और आज भी दिखाई। मुझे यह समझ में नहीं आता

कि मेरे कौन से कर्म का पुण्य था जो इतने सारे वर्ल्ड के फारेन सहित, इन्डिया के सब ज़ोन से कोई-न-कोई आये हुए थे और आज भी कहाँ-कहाँ से मातायें और भाई इतनी गर्मी में, धूप में दूर-दूर से पहुँच गये हैं। तो बाबा आप मुझे बताओ कि मेरा कौन-सा पुण्य है? तो बाबा ने कहा तुम्हारा एक बहुत बड़ा पुण्य है, एक तो तुम आते ही स्थापना के कार्य में सहयोगी बने और ऐसे बेगरी टाइम पर आये, आते ही सेवा के लिए मकान भी दिलाया और सेवा भी आरम्भ की और आपने बहनों को सदा आगे रखा, इसीलिए आपका यह पुण्य जमा है। जैसे बाबा चाहता है कि शक्ति आगे हो, शक्ति गाइड हो और पाण्डव गार्ड हों, (रक्षक हों), ऐसे तुमने भी बहुत अच्छा किया जो बहनों को उमंग-उत्साह में लाकर सेवाओं को आगे बढ़ाया। छोटे मकान को बड़ा करा दिया। (कमला नगर में पहले छोटे दो कमरे ही थे, पहले मकान मालिक नहीं मानता था लेकिन जगदीश भाई का वह दोस्त था। उसे जगदीश जी की चलन पर, बुद्धि पर बहुत फेथ था। इसीलिए उसने हाल भी दे दिया, एक कमरा भी दे दिया।) तो बाबा ने कहा कि यह पुण्य आपका था जो आते ही आपने सहन बहुत किया। सहनशक्ति का मीठा फल होता है। तो तुमको इस पुण्य का फल मिला है।

फिर बाबा ने कहा कि अभी इनको ऐसा परिवार मिला है जो बहुत इच्छुक था, जैसे कोई देवता ने उन्हें यह बच्चा फल के रूप में दिया है। इनके जो माँ बाप बनने वाले हैं, उनकी यही वृत्ति थी कि मेरे पास ऐसा बच्चा आवे। तो उनके पास जैसे देवता से मिले हुए फल से यह बच्चा आया है। जैसे कोई बहुत आशाओं के बाद बच्चा पैदा होता है तो वह क्या होता है, इसी रीति से बाबा ने कहा कि अभी तो गर्भ में है लेकिन जन्म होगा, तो बहुत लाड-प्यार मिलेगा।

फिर जगदीश जी ने कहा कि बाबा मेरी एक और आश है, यह जो सभी गर्मी में आये हैं ना। आप इन्हों पर फाउन्टेन मुआफ़िक गुलाबवाशी डालो। तो बाबा ने कहा वतन में क्या बड़ी बात है, वह तो मैं संकल्प का स्विच आन

करूंगा, यह सब हो जायेगा। तो बाबा ने ऐसे स्विच आन किया और एक फाउन्टेन इमर्ज हो गया और उससे चारों ओर गुलाबवाशी होने लगी। फिर बाबा ने कहा और कोई आशा है? कहा नहीं बाबा, मेरी सब आशायें पूरी हुई। मेरी सबको याद देना और जो यहाँ विशेष सेवा कर रहे हैं। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि के सभी भाई-बहनों को भी बहुत-बहुत याद देना। फिर बाबा ने भी सभी को बहुत-बहुत याद दी और मैं साकार वतन में आ गई।

21-6-2001

मात-पिता को फालो कर मायाजीत, प्रकृतिजीत और कर्मेन्द्रिय जीत बनो

आज जब भोग लेकर वतन में गई तो एक विचित्र सीन देखी। वैसे तो मम्मा-बाबा दोनों ही इक्ट्ठे दिखाई देते थे लेकिन आज मम्मा वतन में अकेली बैठी हुई थी। तो मैं सोचने लगी कि आज बाबा नहीं दिखाई दे रहा है। मम्मा अकेले बैठी है। लेकिन मम्मा का उस समय जो स्वरूप था वह इतना प्यारा वात्सल्य भरा था, जो मैं मम्मा के उस प्यार में खो गई, मुझे भूल गया कि बाबा नहीं हैं। मुझे ऐसे लगा जैसे मम्मा आज बाबा की भी भासना दे रही है और अपना भी दुलार दे रही हैं। तो मैं जैसे मात-पिता की गोद में समा गई। मैं यह अनुभव ही कर रही थी तो इतने में बाबा आये, मैं बाबा की ओर देखने लगी, मैंने कहा बाबा आप कहाँ गये थे? तो बाबा मुस्कराये, कहा कि आज आपने मम्मा को बुलाया है ना। मैंने कहा बाबा के बिना मम्मा नहीं, मम्मा के बिना बाबा नहीं। तो बाबा मुस्कराने लगे। फिर बाबा ने मम्मा को कहा कि बच्ची बताओ, आपको कितने बच्चे हैं? कितने बच्चे आपको पहचानते हैं? कितने बच्चों ने आपको देखा है? तो मम्मा बाबा को बहुत प्यार से देख रही थी और मुस्करा रही थी। तो बाबा ने कहा चलो आपको दिखलाऊं कि

आपको कितने बच्चे जानते हैं। इतने में एक बहुत बड़ी सभा वतन में इमर्ज हो गई। पहले मम्मा-बाबा दोनों सारी सभा को दृष्टि दे रहे थे। सब बच्चे इतने प्रेम में, लगन में मगन थे जैसे कोई जादू में बंधे हुए बैठे थे। तो बाबा ने कहा पूछो बच्ची मम्मा को कौन जानता है? फिर बाबा ने पूछा मम्मा की पालना कितनों ने ली है? तो बहुत थोड़े बच्चों ने हाथ उठाया। फिर बाबा ने कहा अच्छा साकार में बाबा को कितने बच्चों ने देखा है? तो उसमें थोड़े ज्यादा थे।

तो बाबा ने कहा कि इतने मम्मा-बाबा से डायरेक्ट जन्म लेने वाले, पालना लेने वाले हैं, बाकी सब कौन हैं? फिर बाबा ने सुनाया कि यह सब बच्चे मात-पिता के संकल्प की रचना हैं। बाबा ने इनको कहाँ-कहाँ से अपना बनाया है, अनुभव कराया है। यह संकल्प की रचना भी पावरफुल है, जो कितनी दूर-दूर से आई है। भले इनके अन्दर आता है कि हमने साकार में नहीं देखा लेकिन अव्यक्त रूप में इनको मात-पिता की पूरी अनुभूति समय-प्रति-समय होती रहती है। अनुभव की चीज़ कभी भूलती नहीं है। तो बाबा ने कहा देखा बच्ची - कितने बाबा के बच्चे हो गये हैं।

फिर मैंने कहा मम्मा अभी सब कहते हैं कि अब कुछ नवीनता होनी चाहिए, सबके अन्दर आता है कि आप सब कहाँ हैं, अब तो कुछ पर्दा खुलना चाहिए कि यह कहाँ-कहाँ हैं! तो मम्मा ने बाबा की ओर देखा। बाबा ने कहा कि अच्छा बच्ची बता दूँ कि फलानी जगह तुम्हारी मम्मा है, फलानी जगह दीदी है, आप वहाँ जाकर पहचान लोगी! हमने कहा बाबा आप थोड़ी मदद करेंगे तो हो सकता है। तो बाबा ने कहा अच्छा सभी साक्षात्कार मूर्त बन गये हो! साक्षात्कार, सम्पूर्ण और सम्पन्न का होता है। तो आप सब सम्पूर्ण साक्षात्कार मूर्त बन गये हो? तो मैं चुप रही। तो बाबा ने कहा कि जब आप बच्चे साक्षात्कार मूर्त, सम्पन्न बाप समान बन जायेंगे तो आपको कहने की आवश्यकता नहीं रहेगी, स्वत: ही आपका साक्षात्कार उनको और उनका साक्षात्कार आपको होगा। जैसे आपने अन्तिम समय में साकार

मात-पिता की स्टेज देखी - सबके बीच में होते, प्रकृति के बंधन में होते हुए भी न्यारे-प्यारे लगते थे, सबको दूर से ही साक्षात्कार होता था। सब अव्यक्त स्थिति में ऑटोमेटिकली स्थित हो जाते थे। उनको सूक्ष्मवतन का, परमधाम का, नई दुनिया का अनुभव हो जाता था। तो आप बच्चे भी जब साक्षात्कार मूर्त, साक्षात बाप समान बन जायेंगे तो समझो प्रत्यक्षता हुई कि हुई। फिर दोनों के सम्पूर्ण स्वरूप का एक दो को अनुभव और साक्षात्कार होगा। बाबा ने कहा देखो बच्ची, आप कहती हो बाबा बताओ मम्मा कहाँ है, भाऊ कहाँ है....लेकिन अभी वह समय नहीं आया है, समय आने पर सब प्रत्यक्ष हो जायेंगे।

फिर मैंने बाबा को कहा, बाबा सभी बच्चे सूक्ष्मवतन का अनुभव करना चाहते हैं, मूलवतन का गेट तो जब खुले, आप एक बार सूक्ष्मवतन का गेट तो खोल दो। तो बाबा बोले, बच्ची सूक्ष्मवतन, मूलवतन का गेट तो साथ-साथ ही खुलेगा। वाया सूक्ष्मवतन ही सब मूलवतन में जायेंगे। जब बाबा ऐसे बोल रहे थे तो एक दृश्य सामने इमर्ज हुआ - क्या देखा जैसे मम्मा-बाबा आगे-आगे, उनके पीछे सभी दादियां और ढेर सारी आत्माओं का समूह, एक दो के पीछे-पीछे बरात की तरह सूक्ष्मवतन, मूलवतन की ओर जा रहा है। थोड़ी देर में यह दृश्य मर्ज हो गया।

फिर मैंने कहा बाबा आज आपने और दादियों को, दीदी को वतन में नहीं बुलाया। ऐसे कहा तो जैसे कोई छिपा हुआ खड़ा होता है, बाबा ने ताली बजाई और सब सामने आ गये। तो बाबा ने कहा कि जब तुम अपनी माँ से मिल रही थी तब मैं इन बच्चों से मिल रहा था। मैंने दीदी से पूछा कि आपको बाबा क्या सुना रहा था? तो दीदी ने कहा तुम मम्मा से क्या बात कर रही थी? मैंने कहा मैं तो मम्मा से बहुत प्यार भरा सुख ले रही थी। तो दीदी ने कहा कि मैं भी बाबा से सुख ले रही थी।

फिर दीदी ने मम्मा को कहा कि मम्मा आप ऐसी कोई बात सुनाओ जो हर एक के अन्दर पुरुषार्थ की लहर आ जाये। तो मम्मा ने बाबा को देखा,

बाबा ने कहा कि मैं तो बच्चों को समय प्रति समय इशारे देता रहता हूँ ताकि बच्चे उलहना न दें। जैसे मम्मा को स्वयं पर निश्चय था कि मैं बाबा की श्रेष्ठ, सम्पूर्ण आत्मा हूँ, इस संकल्प से ही मम्मा की चलन, बोलचाल देखा, अनुभव किया। दूसरा - मम्मा को बाबा में कितना विश्वास था। बाबा कहता कि मैं जो हूँ जैसा हूँ, मुझे कोटों में कोई पहचानता, तो उस पहचानने में मम्मा पहला नम्बर थी। बाबा ने जो आज्ञा दी मम्मा ने उस आज्ञा को वैसे का वैसा ही किया। जीवन में लाया और एक सैम्पल बनकर दिखाया। तीसरा - मम्मा को बाप के ज्ञान में इतना निश्चय था कि कभी भी बाबा की कोई प्वाइंट को यह कैसे, यह क्या! यह कभी नहीं कहा। चौथा - मम्मा को ड्रामा पर इतना निश्चय था कि कुछ भी हो जाए, यह क्यों हुआ, कैसे हुआ... यह कभी सवाल मम्मा ने नहीं उठाया। इसमें मम्मा पहला नम्बर थी, इसलिए पहले नम्बर में पूज्य बनी। इस संगमयुग के महानता की पूजा जितना मम्मा की है, उसकी भेंट में और देवियों की कम है। अभी बच्चों के सामने मम्मा-बाबा और अनन्य बच्चे सैम्पल हैं। अब भी समय है जो इनको देखकर फालो करो, मायाजीत, प्रकृतिजीत, कर्मेन्द्रिय जीत बनो। हर एक समझे मैं अपनी कर्मेन्द्रियों का राजा हूँ, राजा बनके चलो तो यह सब बातें ऑटोमेटिकली आ जायेंगी। फिर मम्मा ने कहा कि मेरे मन की बात बाबा ने कह दी। तो सभी बच्चों को मेरी याद-प्यार देकर कहना कि बाबा ने जो यह अन्दर की स्थिति और रिज़ल्ट बताई, उसे देखते हुए रियलाइज़ करके, करेक्शन करके, कनेक्शन जोड़कर अपनी स्थिति को सम्पन्न बनायें। फिर बाबा ने मम्मा को यज्ञ का ब्रह्माभोजन खिलाया। फिर सभी एडवांस पार्टी की दादियों ने सभी को, दादी जी को, दादी जानकी जी को और सभी भाई-बहनों को बहुत-बहुत याद-प्यार दिया। ऐसे याद-प्यार देते हुए बाबा ने हमें हमारे वतन में भेज दिया।

25-6-2001

बालक सो मालिक का प्रत्यक्ष रूप में एक्जैम्पल बनो

(हैदराबाद की जमीन पर निर्माण कार्य हेतु सन्देश)

आज आप सबकी याद-प्यार वा समाचार लेते हुए जब बापदादा के पास पहुँची। तो बापदादा सामने ही बहुत स्नेह स्वरूप में ऐसे खड़े थे, जैसे बच्चों को बाप बाहें पसार कर बुलाते हैं, ऐसे हमें भी आओ बच्ची, आओ बच्ची कहकर बुला रहे थे। मैं जाकर बाबा की बांहों में समा गई। कुछ समय तो मैं उसी अनुभव में लवलीन थी। बाद में बाबा ने पूछा बच्ची क्या समाचार लाई हो? मैंने बोला बाबा आज ड्रामा में आपका निमित्त बना हुआ रूहानी माइक (चन्द्राबाबू नायडू) द्वारा जो जमीन मिली है, उनके प्रति समाचार लाई हूँ। तो बापदादा बहुत स्नेह से बोले कि ड्रामा में हर आत्मा का छिपा हुआ भाग्य समय पर प्रत्यक्ष हो जाता है। बापदादा देख रहे हैं कि बच्चे ने बड़ी समझदारी से कार्य किया है। अब फिर सब आन्ध्रा निवासी ब्राह्मण बच्चों को भी बड़े स्नेह, सहयोग, शुभ भावना से अपनी-अपनी विशेषता को कार्य में लगाना है। ऐसा एक्जैम्पुल दिखाने का चांस मिला है। यही दिखाना है कि हम सब एक हैं, एक ने कहा दूसरे ने माना, क्योंकि मानना ही माननीय बनना है।

बापदादा तो आन्ध्रा के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं कि बड़े जोन तो बड़े हैं लेकिन यह महाराष्ट्र में भी छोटा सबज़ोन, छोटा सुभान बाप निकला। यह गोल्डन चांस आन्ध्रा को मिला है। बापदादा ने समाचार सुना कि सब प्रकार के कार्य करने वाले अच्छे-अच्छे हिम्मत वाले बच्चे भी वहाँ हैं, जो मिलकर कार्य सफल कर सकते हैं। प्लैन बनाने वाली बच्ची का भी बापदादा ने समाचार सुना। अच्छा सोचकर बनाया है। बाकी जमीन के अनुसार नीचे ऊपर सेट करना तो राय करके ही करेंगे। सब वहाँ के ही हैण्डस मिलकर सहयोगी बनायेंगे लेकिन साथ-साथ मधुबन के वा और किसी तरफ के भी कार्य करने वाले अनुभवी आत्माओं का भी अवश्य सहयोग लेते रहना है। अच्छा है जैसे यह भाग्यवान आत्मा (चीफ मिनिस्टर) विशेष माइक एक एक्जैम्पुल बना है, ऐसे ही ब्राह्मण बच्चे भी ब्राह्मण संसार में हर कार्य में

बालक सो मालिक का प्रत्यक्ष रूप दिखायेंगे। राय देने समय मालिक, लेकिन जब मैजारिटी वा निमित्त बने बड़े फाइनल करें तो बालक बन दिल से स्वीकार करें, न कि मजबूरी से। इसको कहा जाता है बालक सो मालिक। बोलो, सभी बच्चे ऐसा एक्जैम्पुल बनेंगे ना!

सब आये हुए बच्चों में यही उमंग रहे कि अपने में हिम्मत, उमंग, दृढ़ता और हर एक को स्वमान देने की भावना से आगे बढ़ते रहेंगे तो अवश्य एक्जैम्पल बन फाइनल एक्जाम में नम्बर आगे बन जायेंगे। बापदादा तो सदा हर बच्चे को सफलता का वरदान देते ही हैं।

26-6-2001

अपने ऊँचे स्वमान में रह समस्याओं को खेल समझकर पार करो

आज बापदादा के पास सर्व विशेष टीचर्स प्रति जाना हुआ। जाते ही बापदादा ने पहले तो स्नेह युक्त मिलन मनाया और बांहों का हार हमारे गले में डाल दिया। उसके बाद बोले, बच्ची क्या समाचार लाई हो? मैं बोली, बाबा आज तो विशेष टीचर्स की भट्ठी आरम्भ हो रही है, उसका समाचार लाई हूँ। ऐसे कहते ही एक सेकण्ड में बाबा ने एक दिव्य दृश्य इमर्ज किया, तो क्या देखा - एक बहुत रॉयल राज-सभा लगी हुई है। जिसमें सब टीचर्स हैं और सारी सभा में गोल सर्कल में सफेद लाइट में, सफेद सजावट से सिंहासन लगे हुए हैं और सबके माथे पर ताज चमक रहा था। वह भी सफेद-सफेद था, जो बहुत सुन्दर लग रहा था। उस ताज के बीच में तीन हीरे लगे हुए थे। एक था लाइट ब्ल्यु, दूसरा था हरा और तीसरा था गोल्ड और लाल मिक्स। हीरों के चारों ओर सुनहरे शब्दों में लिखत थी। पहले हल्के ब्ल्यु हीरे के ऊपर लिखत थी मास्टर ब्रह्मा - आसन के पास सर्किल में लिखा था- हिम्मत और दृढ़ता सम्पन्न रूहानी शक्ति द्वारा आत्माओं की रचना निमित्त

बनने वाले मास्टर रचयिता ब्रह्मा। दूसरे हरे हीरे के ऊपर लिखा था - पालनहार मास्टर विष्णु और आस पास लिखा था - पालना के निमित्त बनी हुई आत्माओं प्रति रूहानी लव, निर्माण भाव और रूहानी साथीपन की शुभ भावना द्वारा निर्विघ्न बनने बनाने की पालना कर्ता मास्टर पालनहार विष्णु।

तीसरे हीरे के ऊपर लिखत थी - मास्टर शंकर। चारों ओर लिखत थी - सर्व साथियों और सम्बन्ध में आने वाली आत्माओं और चारों ओर के वायुमण्डल से ''व्यर्थ और नेगेटिव संस्कार, संकल्प, बोल, कर्म की कमजोरियां समाप्त कर्ता - मास्टर शंकर।''

ऐसे सबके ऊपर ताज बहुत अच्छे चमक रहे थे। मैं तो देख-देख हर्षित हो रही थी और बापदादा को भी देख रही थी। मैं बोली बाबा आज तो भट्ठी का आरम्भ है, तो आज इस दृश्य का क्या रहस्य है? बाबा बोले बच्ची, आज बापदादा बच्चों की ताजपोशी मना रहा था। भट्ठियां, क्लासेज तो बहुत बारी किये हैं, वायदे भी बहुत बार किये हैं लेकिन आज बापदादा निमित्त आत्माओं को जिम्मेवारी का ताज पहनाने की ताजपोशी मना रहे हैं क्योंकि बापदादा देख रहे हैं कि समय बहुत फास्ट जा रहा है। प्रकृति भी अपने कार्य में बहुत उग्र रूप से आगे बढ़ रही है। माया भी नये-नये रूपों से बच्चों को आकर्षित करने के पेपर लेने का पार्ट बजा रही है लेकिन बच्चों में अब स्व प्रति वा सेवा साथियों प्रति, निमित्त बने हुए स्थानों प्रति, चारों ओर के वायुमण्डल प्रति रूहानी परिवर्तन करने की जिम्मेवारी को प्रैक्टिकल लाने में बहुत धीमी गति है। इसलिए अब ब्रह्मा बाप भी, साथ में एडवांस पार्टी भी समय सम्पन्न का बहुत इन्तजार कर रहे हैं। अब नये परिवर्तन का पर्दा बदलने का समय समीप आ रहा है। इस नये पर्दे को खोलने की डोरी इन विशेष आत्माओं के हाथ में है इसलिए बापदादा इस बारी जिम्मेवारी के ताज की ताजपोशी मना रहे हैं। ताजपोशी पर राज्य अधिकारी आत्मा को सर्व के आगे कुछ संकल्प भी लेने होते हैं। तो बापदादा भी सब ताजधारी टीचर्स को यही दिल से दृढ़ संकल्प दिलाने चाहते हैं कि ''अब से दृढ़ता, परिपक्वता से, सम्पन्नता से

स्व परिवर्तन और सर्व परिवर्तन करना ही है। चाहे कोई भी हलचल की समस्या आवे, चारों ओर के सेवास्थान, सेवा साथियों वा स्टूडेन्टस वा सेवा के साधनों द्वारा पेपर आवें लेकिन हम स्वमान में रह समस्याओं को खेल समझ पार करेंगे क्योंकि विजय हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। सफलता हमारे गले का हार है। इस निश्चय के रूहानी नशे से अचल-अडोल बन, निर्मान बन, विश्व निर्माण के ताज की जिम्मेवारी निभानी ही है। स्व के और दूसरों के विघ्न-विनाशक बनना ही है।'' यही आज बापदादा ताजपोशी मनाने चाहते हैं।

उसके बाद फिर बाबा ने टीचर्स को वतन में इमर्ज किया। साथ में दोनों दादियां भी थी और बाबा ने हर एक को बहुत मीठी दृष्टि देते हुए अपने हस्तों से गले में माला डाली, माला भी बहुत वन्डरफुल थी। बाबा बोले, यह है बापदादा की श्रेष्ठ आशाओं के दीपकों की माला। माला तो बड़ी सुन्दर लग रही थी। फिर दोनों दादियों को अपने पास बांहों में समाए बोला अब बोलो, कब बापदादा के आशा की इस दीपमाला को जगायेंगे! उसकी डेट फिक्स करो तो कब यह वन्डर आफ वर्ल्ड की माला की विचित्र दीपमाला मनायेंगे?

दोनों दादियां तो मुस्कराते बाबा की दृष्टि में लवलीन थी। फिर बाबा ने कहा अब देखेंगे - इस भट्ठी में क्या नवीनता करते हो, जो अब तक नहीं हुई है। बोलो बच्ची, ऐसे ही सोचा है ना! ऐसे कहते बापदादा सबको दृष्टि देते रहे, दृष्टि लेते हुए हम मधुबन पहुँच गई।

1-7-2001

सिर्फ प्रीत करने वाले नहीं लेकिन निभाने वाले बनो

आप सभी ने जो अपने दिल से बाबा के सन्देश का रेसपान्ड प्रतिज्ञा में दिया था, तो उन प्रतिज्ञाओं का रेसपान्ड लेकर मैं बाबा के पास गई। लेकिन वतन की हर रोज़ नई-नई बातें होती हैं। बाबा और वतन तो वही होता है

लेकिन दृश्य भिन्न-भिन्न होते हैं। तो आज बाबा ने अमृतवेले हम सभी टीचर्स को एक्सकरशन (सैर) करने के लिए बुलाया था। और जब मैं बाबा के पास गई तो सदा की भांति बाबा ने मुस्कराते हुए मिलन मनाया और कहा कि आज प्रतिज्ञाओं का समाचार लाई हो! ऐसे कहते बाबा ने बहुत प्यार से बोला कि बच्ची बापदादा ने देखा कि मधुबन की वरदानी धरनी का और आपसी मिलन का प्रभाव बहुत अच्छा पड़ा है। सबने प्रतिज्ञायें तो अच्छी की हैं। बापदादा रिज़ल्ट को देख करके खुश हैं। अब इस किये हुए संकल्प को अपने आपसे रिवाइज करते रहना। मर्ज नहीं कर देना। रोज़ अमृतवेले इस की हुई प्रतिज्ञा को स्मृति में लाना कि मैंने बापदादा से क्या-क्या वायदा किया और कहाँ तक प्रैक्टिकल कर रहे हैं। अगर कोई भी बात सामने आये तो उसको बाप के सामने रख एक्स्ट्रा शक्ति ले निभाते रहना। आप एक कदम दिलाराम बाप के आगे दिल का समाचार सच्ची दिल से, निश्चय से रखना तो बापदादा पद्मगुणा सहयोग देने के लिए बंधे हुए हैं। कोई साथी या वायुमण्डल व अपने ही व्यर्थ मन के भाव हिलाने आयें तो आप दिल से बाप को याद करेंगी तो सदा बापदादा का साथ, हाथ और शक्तियों का अनुभव करेंगी। बस यही दृढ़ संकल्प करो कि कुछ भी हो, लेकिन मुझे परमात्म प्रीत की रीति निभानी ही है। स्व परिवर्तन द्वारा स्वयं तो क्या लेकिन अन्य साथियों के भी सहयोगी बनना ही है। दिल को सदा क्लीन और क्लीयर रखना है तो प्रीत करने वाले नहीं लेकिन निभाने वाले बन उड़ते रहेंगे।

बोलो, बाप के समान निमित्त बनी हुई टीचर्स साथी, ऐसा ही है ना! फिर उसके बाद बाबा ने सब टीचर्स को इमर्ज किया, आगे दादियां थी और पीछे हम सब ऐसे अर्ध चन्द्रमा के रूप में खड़े थे, तो बाबा ने कहा आओ बच्चे, आओ बच्चे, ऐसे कहते बाबा इतना बड़ा-बड़ा हो गया, बाबा की बांहें इतनी बड़ी-बड़ी हो गई जो सब बाबा की बाहों में समा गये। बाबा ने एक-एक को बहुत प्यार से दृष्टि दी, कुछ समय सभी एकदम लवलीन थे।

फिर बाबा बोले, बच्ची आज बापदादा बच्चों को एक सौगात देते हैं।

सौगात तो बहुत विचित्र थी। वह क्या थी - वह चिन्दी के समान बड़ा तिलक था, जिसमे लिखा था - ''सफलता का सितारा'', जो बापदादा ने अपने हस्तों से हर एक टीचर के मस्तक पर लगाया। ऐसे लगा जैसे आज वतन में सब एक्सकरशन मना रहे हैं। बहुत अच्छी रिमझिम थी, सब एक दूसरे से मिल रहे थे। ऐसे ही मिलन मनाकर आप सभी भी हमारे साथ अव्यक्त वतन से साकार वतन में पहुँच गये।

5-7-01

सेवा के साथ रूहानी स्वमान का भी बैलेन्स रखो

आज आप सबकी याद लेते हुए जब हम बाबा के पास गई तो आज बाबा का बहुत शक्ति और स्नेह का स्वरूप देखा। दोनों ही रूप से जैसे बाबा ने सामने मुलाकात की। फिर बाबा ने पूछा बच्ची क्या समाचार लाई हो?

तो मैंने कहा बाबा आज तो पाण्डवों की भट्ठी है, उनके लिए याद-प्यार लाई हूँ और इसके पहले सेवाओं के निमित्त हमारी मीटिंग्स भी बहुत अच्छी चली है, जिसमें कान्फ्रेन्स आदि के अनेक प्रोग्राम बने हैं। तो बाबा बहुत प्यार से सुन रहे थे और मीठा-मीठा मुस्करा भी रहे थे और ऐसे लग रहा था जैसे बाबा दृष्टि तो हमको दे रहे हैं लेकिन आप सभी को भी हमारे साथ मीठी-मीठी दृष्टि दे रहे हैं। उसके बाद बाबा ने कहा कि बापदादा बच्चों से यही चाहते हैं कि सेवा की वृद्धि के प्रोग्राम तो बहुत अच्छे बनाते हो लेकिन रूहानी स्वमान और सेवा में बैलेन्स आवश्यक है क्योंकि बापदादा और बच्चे भी जानते हैं कि अब समय की हालतों प्रमाण पहले स्व-स्थिति फिर सेवा की वृद्धि चाहिए। अब तो दिन प्रतिदिन ऐसी विचित्र-विचित्र परिस्थितियां आने वाली हैं जो आपके ख्याल-ख्वाब में भी नहीं होंगी, तो उन परिस्थितियों को सहज पार करने के लिए बच्चों की भी विचित्र आत्मिक स्थिति, अशरीरी स्थिति ज़रूरी है। बापदादा देख रहे हैं कि बच्चे हर प्रकार की बातों में नॉलेजफुल तो बहुत अच्छे बन गये हैं लेकिन पावरफुल स्थिति में अभी

अटेन्शन चाहिए। संकल्प परिवर्तन वा संस्कार परिवर्तन के लिए हरेक में पावरफुल कन्ट्रोलिंग पावर चाहिए, जो हर स्थूल-सूक्ष्म अपने सहयोगी कर्मचारी, कर्मेन्द्रियों पर राज्य अधिकारी बन सकें अर्थात् रूलिंग पावर कार्य में लगा सकें।

बापदादा तो समय प्रति समय भिन्न-भिन्न रूप से सेकेण्ड में बिन्दी लगाओ, फुलस्टॉप लगाओ, कहते रहते हैं लेकिन इस विधि को प्रैक्टिकल में लाने में समय लग जाता है। बाबा जानते हैं कि बच्चे बाप से प्यार होने के कारण संकल्प बहुत अच्छे करते हैं इसके लिए बापदादा दिल से ऐसे बच्चों को बहुत प्यार करते हैं, फिर भी लास्ट समय पास विद ऑनर बनने के लिए सेकेण्ड में पास्ट इज पास्ट और प्रेजेन्ट बहुत खुशनसीब, डबल लाइट अनुभव करें तब ही पास-विद्-ऑनर विजयी बन सकते हैं। इसीलिए बापदादा बच्चों को अब जल्दी-से-जल्दी ऐसे शक्तिशाली स्वरूप में देखने चाहते हैं। यह अभ्यास बहुत काल से चाहिए, न कि अन्त में हो जायेगा। ऐसे कहते बापदादा कुछ समय एकदम चुप हो गये और बहुत मीठा-मीठा मुस्करा रहे थे। मैं भी देखती रही। कुछ समय के बाद मैंने बोला, बाबा आप कहाँ थे!

बाबा मुस्कराते हुए बोले, बच्ची पाण्डव-पति अपने साथी पाण्डवों को देख रहे हैं। बापदादा का पाण्डवों प्रति एक श्रेष्ठ संकल्प है - ''हर बच्चा जैसे बाप को बहुत दिल से जान, पहचान, प्यार, सम्मान देते हैं, ऐसे ही हर बच्चे की विशेषता को जान, पहचान उसी विशेष स्वरूप से एक दो को स्वमान और सम्मान दें। एक दो के सहयोगी बन आगे बढ़ें और बढ़ावें। सदा सर्व के प्रति कल्याण का भाव, सहयोग की भावना और स्नेहमयी बोल द्वारा आगे उड़ते चलें। जैसे निमित्त विशेष दादियों का सिम्बल है, ऐसे सम्मान और स्वमान के बैलेन्स में दादियों समान सैम्पुल बनें''। इसके बाद बाबा ने सर्व पाण्डवों को बहुत मीठी दृष्टि देते बोला, पाण्डवों की चारों और के सेवा की हिम्मत और सहयोग देख बापदादा बहुत खुश हैं और दिल से प्यार करते हैं - ''वाह पाण्डव ब्रह्मा बाप के हमजिन्स वाह!''

उसके बाद बाबा ने कहा कि बच्ची हमारी हमजिन्स प्रति क्या सौगात ले जायेंगी? ऐसे कहते बाबा ने दिखाया एक थाली में गुलाब के पुष्पों की डालियां थी। हमने जैसे एक डाली उठाई तो देखा कि गुलाब के फूल के पत्तों पर भिन्न-भिन्न आठों रंगों के हीरे बहुत सुन्दर चमक रहे थे और फूल के बीच में जो बूर होता है उसमें लिखा हुआ था ''अष्ट शक्तियों सम्पन्न रूहानी गुलाब''। तो बाबा ने कहा कि यह अष्ट शक्तियों का श्रृंगार सम्पन्न रूहानी गुलाब सभी बच्चों को सौगात देना, ऐसे सौगात लेते हम यहाँ पहुँच गये।

6-7-2001

दिल में बाबा का प्यार समाया हुआ है इसलिए सहज मदद मिलती रहती है

आज विशेष डबल विदेशी भाई-बहनों की याद-प्यार लेकर वतन में पहुँची तो क्या देखा, बापदादा बहुत स्नेही रूप से खड़े हैं, हमारे जाते ही बहुत मीठा मुस्कराते हुए मिलन मनाते पूछा – बच्ची, आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली, आज हमारी मीठी जानकी दादी ने सर्व की याद और लण्डन के नये बनने वाले वा मिलने वाले मकानों का बहुत अच्छा समाचार दिया है। बापदादा सुनते बहुत मीठा-मीठा मुस्कराये और बोला फारेन वाले बच्चे भी कम नहीं हैं। सेवा में सदा हाई जम्प लगाते रहते हैं। उमंग-उत्साह अच्छा है कि बाबा का सन्देश चारों ओर अवश्य देना है क्योंकि एक विशेषता बच्चों की बहुत अच्छी है - चाहे कितनी भी बीच-बीच में हलचल में आवें लेकिन दिल में बाप से प्यार बहुत पक्का है। इस प्यार की विशेषता बाप देखते हैं कि सबके मुख से हर समय हर बात में, हर कार्य में, हर वस्तु में नेचुरल बाबा-बाबा शब्द निकलता है। मेरे-पन का भाव बोल में न होने कारण बोल का प्रभाव दिल की भावना पर सहज पड़ता रहता है। यह सहज मदद मिल जाती है।

उसके बाद बाबा ने सर्व डबल फारेनर्स बच्चों को खास मुबारक दी कि

बच्चे बड़े-बड़े प्रोजेक्ट बहुत उमंग से अच्छे सफलतापूर्वक कर रहे हैं। जैसे काल आफ टाइम, कल्चर आफ पीस, लिविंग वैल्यूज़ आदि-आदि और रिज़ल्ट में अच्छे-अच्छे वी. आई. पीज भी आगे आ रहे हैं। बच्चों की अथक सेवा में चारों ओर चक्रवर्ती बन चक्र लगाने की अथक सेवा देख बापदादा खुश होते हैं और दिल से विशेष दुआयें देते हैं कि वाह मेरे बच्चे वाह!

उसके बाद बाबा को मकानों की खुशखबरी सुनाई कि ग्लोबल हाउस के साथ एडीशन ग्लोबल हाउस का अब फाउन्डेशन पड़ना है। गवर्मेन्ट ने बहुत दिनों के बाद अब छुट्टी दी है। बाबा सुनकर बहुत मीठा मुस्कराया और ऐसे लगा कि जैसे बाबा के सामने दादी जानकी और कार्य करने वाले साथी सब इमर्ज हों। बाबा कह रहे थे बच्चों की विजय तो ड्रामा में नूंधी हुई है ही। आप बच्चों की शान्तिमय रूहानी एक्टिविटी, स्वच्छता और डिसीप्लेन की विशेषता का प्रभाव अब चारों ओर फैल रहा है, इसलिए दिनप्रतिदिन सब सहज होता जायेगा। बच्चों ने बहुत उमंग, रुचि से सेवा के उत्साह से उद्घाटन रखा है। बापदादा कहते – बहुत अच्छा, खूब मनाओ, नाचो-गाओ, सेवा की धूम मचाओ, बापदादा बच्चों की खुशी में खुश है। दादी को भी बुलाया है तो सहज निकल सकती तो जा सकती है। बच्चों को मुहब्बत से की हुई सेवा का बल और फल तो मिलना ही है। सबमें सहयोग और स्नेह की लहर तो अच्छी है और ही खुशी की, बाप के प्यार की लहर छा जायेगी। फिर बाबा को स्काटलैण्ड में मकान मिलने का समाचार सुनाया। बाबा बोले यहाँ वहाँ थोड़ी इन्क्वायरी कर लेना ठीक है और बाप चाहते हैं कि जो नजदीक सेवा स्थान हैं उन्हों को गोल्डन चांस मिला है, तो मिलकर हिम्मत रख जिम्मेवारी उठायेंगे तो सर्व ब्राह्मणों की, बापदादा की मदद तो मिलती ही है। उसके बाद बाबा ने विशेष ॐ ही खण्डों के निमित्त बने हुए बच्चों को बहुत-बहुत प्यार से याद दी और बहुत प्यार दिया। हमारी मीठी बहिनें मोहनी बहन, जयन्ती बहन, निर्मला बहन, वेदान्ती बहन... साथ में फिर डबल विदेश की सेवा निमित्त निकले हुए डबल फारेन की शुरू की बहनों को जैसे वाडी बहन, गायत्री

बहन, कला बहन, मंदा बहन, दोनों मोरिन ऐसे बहनों को बहुत-बहुत प्यार किया और याद दी। साथ में चारों ओर के बच्चों को बाबा ने वरदानी दृष्टि से वरदान दिया। अमर रहो, उड़ते रहो। ऐसे ही याद-प्यार देते-लेते साकार वतन में पहुँच गई।

24-7-2001

सरेन्डर होना अर्थात्
हर श्रेष्ठ कार्य में जिम्मेवार बनना

आज आप सभी पाण्डवों की याद-प्यार लेकर जब मैं वतन में बाबा के सामने पहुँची तो बाबा ने मेरे गले में अपनी बांहों का हार डाल दिया और अपने हृदय का हार बना दिया। देखो, यह मधुर मिलन मन ही जाने। आप सब भी योगबल के द्वारा उड़कर, वतन में पहुँचकर यह अनुभव ज़रूर करना। बोलो, अभी-अभी कर रहे हो या करना है? फिर बापदादा कुछ समय के बाद बोले, कि बच्ची आज बच्चों की याद-प्यार लाई हो! मैंने कहा बाबा आज तो सेवाकेन्द्र पर रहने वाले सरेण्डर सेवाधारी पाण्डवों की याद लाई हूँ। बापदादा मुस्कराये और बोले वाह! इस ग्रुप को नाम तो बहुत अच्छा दिया है, सरेण्डर। तो आज आप इन सब बच्चों से यह पूछना कि सिर्फ अर्पण हैं वा कुछ-कुछ अर्पण हैं वा सर्व अर्पण हैं? तो बोलो, आप सब तीनों में से कौन हो? नम्बरवन हो, टू हो या नम्बर थ्री हो? ज्ञान के दर्पण में अपने स्वरूप को देखा है कि कहाँ तक सरेण्डर हैं? हर संकल्प में, बोल में, कर्म में, बाप की श्रीमत प्रमाण चलना अर्थात् सरेण्डर होना।

फिर बाबा ने कहा - बाप को बच्चों को देख बहुत प्यार आता है कि बच्चों ने हिम्मत बहुत अच्छी रखी है और सेवा अर्थ दिन-प्रतिदिन आगे चल भी रहे हैं लेकिन साथ-साथ बापदादा जानते हैं कि इस ग्रुप की और भी कई जिम्मेवारियां हैं। बोलो, पाण्डवो आपको अपनी और जिम्मेवारियों का पता है? आज बापदादा ने आप सबके ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेवारी रखी है, बताओ कौन-सी होगी? तो बापदादा बोले, एक जिम्मेवारी तो यह है जो सदा निमित्त बहनों के साथ-साथ संगठन को और निमित्त बने हुए सेवाकेन्द्र

को रूहानी अव्यक्त वातावरण वाला बनाना है। और दूसरा बाबा ने कहा कि सेवा में सदा हाँ जी, अथक और निर्विघ्न स्थिति में रहकर सेवा को आगे बढ़ाना है। समय, संकल्प और कर्म को सफल करना है और श्रेष्ठ खाते में जमा का खाता बढ़ाना है। बोलो, यह जिम्मेवारी निभा रहे हो ना!

बाबा ने फिर कहा कि ऐसे नहीं समझना कि यह तो बहनों का काम है, लेकिन सरेण्डर होना अर्थात् हर श्रेष्ठ कार्य में जिम्मेवार बनना। बापदादा की इस ग्रुप में भी बहुत-बहुत शुभ आशायें हैं, अवश्य यह ग्रुप स्व-परिवर्तन द्वारा हर सेवा स्थान में ऐसा वायुमण्डल बनायेगा जो आने वालों को आते ही रूहानी वायब्रेशन का अनुभव हो। बोलो, बच्चे ऐसा दृढ़ संकल्प किया है ना? हिम्मते बच्चे मददे बापदादा तो पदमगुणा हर समय मददगार है ही। पाण्डवों का साथी पाण्डव-पति सदा साथ है।

ऐसे कहते हुए फिर बाबा ने कहा कि बच्ची मेरे पाण्डवों के लिए आज क्या सौगात ले जायेंगी? तो मैं मुस्कराई। बाबा ने सेकण्ड में क्या दिखाया! एक सुन्दर थाली में बहुत से कमल के पुष्प थे, जो बहुत विचित्र और सुन्दर थे। हर पत्ता भिन्न-भिन्न लाइट से चमक रहा था। बोलो, वह कितना अच्छा लगता होगा! दिल को बहुत आकर्षित कर रहा था और उन पत्तों में लिखा हुआ था: ८. बापदादा को सदा साथ रखना और ७. सदा साक्षी, न्यारे और प्यारे रहना। यह सौगात तो बहुत सुन्दर थी जो बाबा ने आप सभी के लिए दी।

उसके बाद कुछ समय बाबा ऐसे साइलेन्स में चले गये जैसे बाबा को कुछ याद आ रहा है। तो बापदादा को राखी का त्योहार याद आया और कहा कि दादी तो सबको राखी बांधेगी ही, साथ में बापदादा भी चारों ओर के देश-विदेश के बच्चों को बहुत-बहुत दिल से याद-प्यार भी दे रहे हैं और इस वर्ष के विशेष बन्धन को याद दिला रहे हैं। बाबा ने बोला कि विश्व की सेवा तो करते ही हो लेकिन विशेष अपने आपको भी बन्धन में बांधना है अर्थात् अपनी भी रक्षा करनी है। कौन-सी रक्षा करनी है? हर समय अमृतवेले से

लेकर अपने अनादि, आदि और ब्राह्मण जीवन के रूहानी संस्कारों की रक्षा करनी है अर्थात् अपने प्रैक्टिकल चेहरे और चलन में प्रत्यक्ष दिखाना है और साथ-साथ बाबा ने कहा कि बच्चे बापदादा को गिफ्ट वा खर्ची भी तो देंगे ना! तो बाबा ने बोला कि अपने व्यर्थ नगेटिव संकल्प, भाव और भावनायें जो उत्पन्न होती हैं, उसको बाप को देकर मुक्त होना है। यह गिफ्ट बाबा को देनी है और गिफ्ट दी हुई चीज़ फिर वापस नहीं लेनी है। बच्चे बार-बार सोचते और प्रतिज्ञा भी करते हैं लेकिन बार-बार फिर संस्कार इमर्ज हो जाते हैं, इसका कारण क्या है? तो बाबा ने सुनाया कि बच्चे सूक्ष्म बीज को परखकर बीज को खत्म नहीं करते हैं। जैसे वृक्ष को ऊपर-ऊपर से टाल-टालियां काट लेते हैं लेकिन बीज को खत्म न करने से सीजन आने पर फिर निकल आता है, ऐसे बच्चों के आगे भी समस्याओं रूपी सीजन आने पर फिर-फिर वह फालतू संस्कार इमर्ज हो जाते हैं और बार-बार मिटाने की मेहनत करते हैं इसलिए इस वर्ष इस रक्षा के बन्धन को पक्की-पक्की डबल गांठ बांधनी है। बोलो, सभी बच्चों को यह बन्धन मीठा लगता है ना!

उसके बाद आज बाबा ने अपनी मीठी दादी सहित सब दादियों को और सब मधुबन निवासी भाई-बहनों को बहुत-बहुत स्नेह से याद किया और राखी की मुबारक दी और मीठा मुस्कराते हुए कहा कि दादी की आठ भुजाओं को याद देना। (मधुबन, ज्ञान सरोवर, हॉस्पिटल, पीसपार्क, म्यूजियम, संगम भवन, शान्तिवन और आबू निवासी वा बी.के. कालोनी वाले) जड़ चित्रों में तो अष्ट भुजाधारी दिखाते ही हैं लेकिन दादी तो अभी प्रत्यक्ष आठ भुजाधारी बन कार्य कर रही है, आठ ही स्थानों के सर्व बच्चों को बाबा ने याद दी और कहा कि हर एक बच्चा अपने-अपने नाम वा विशेषता सहित स्पेशल बापदादा का याद-प्यार लेवे और बाबा के लव में लीन हो जाए। ऐसे सबकी याद लेते और देते हुए मैं साकार वतन में आ गई।

20-8-2001

ज्ञान, योग, धारणा और सेवा में अलबेला नहीं अलर्ट बनो

आज भट्ठी में आई हुई सर्व कुमारियों की याद-प्यार लेकर बापदादा के पास पहुँची तो बापदादा ने हमेशा के मुआफ़िक सामने से दृष्टि देते मिलन मनाया और समाचार पूछा। मैंने सुनाया कि हमारी दादी को छोटी-छोटी कुमारियों प्रति बहुत प्यार रहता है, तो दो साल वाली कुमारियों को भी साथ में बुलाया है। इसलिए यह ग्रुप बहुत बड़ा दो हजार तक हो गया है। बापदादा बोले, दादी को चारों ओर का ख्याल अच्छा रहता है। जिम्मेवारी का ताज अच्छा फिट हो गया है। बापदादा तो सदा निमित्त बनी दादियों को रोज़ स्पेशल शाबास बच्ची, शाबास का वरदान देता है। सदा बल और फल देता है। इसके बाद बाबा बोले, इस ग्रुप को तो बापदादा भी देख-देख खुश होते हैं कि किसी भी रूप से, किसी भी भावना से त्याग तो किया ही है। तो त्याग और हिम्मत का फल तो इन सबका जमा है। अब एक त्याग तो किया - लौकिक सम्बन्ध, लौकिक दुनिया छोड़ दिया। उसकी बापदादा मुबारक देते हैं लेकिन अब त्याग की परिभाषायें कितनी लम्बी हैं वह भी जानते हैं ना? बच्चों को त्याग क्या करना है, त्याग किसको कहा जाता है, उसकी स्पष्टता तो बताई ही होगी ना! क्योंकि बापदादा बच्चों से यही चाहते हैं कि जिस श्रेष्ठ ब्रह्माकुमारी जीवन को अपनाया है, जो श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य रखा है, वह हर कार्य करते स्मृति में रहे। यह सदा चेकिंग हो कि मेरा सोचना, बोलना, चलना, करना लक्ष्य प्रमाण लक्षण भी हैं? क्योंकि ब्रह्माकुमारी बनना साधारण बात नहीं है। कोई रिवाजी टाइटल नहीं है, बड़ी ऊंची पर्सनैलिटी है, इसको साधारण नहीं समझना कि बी.के. तो बन गई लेकिन ब्रह्माकुमारी बनना वा कहलाना अर्थात् ब्रह्मा बाप समान बनना, हर कदम श्रीमत प्रमाण चलना, अपनी चलन से, चेहरे से बाप को प्रत्यक्ष करना। बापदादा सब मीठे-मीठे बच्चों से पूछते हैं कि देखने में छोटे हो लेकिन हिम्मत बड़ी रखी है, तो लक्ष्य और लक्षण समान है ना?

बापदादा को इस ग्रुप से विशेष प्यार है कि बड़े-तो-बड़े हैं लेकिन छोटे भी कम नहीं हैं, अवश्य बाप समान बन विश्व के सामने बाप को प्रत्यक्ष

करेंगे। यह ग्रुप श्रीमत पर चलने का, पान का बीड़ा उठाने वाला ग्रुप है। ऐसा बापदादा इस ग्रुप में उम्मीद रखते हैं। सच तो बापदादा ऐसे स्नेह और दिल से बोल रहे थे जो सुनकर मैं भी बापदादा को देखते-देखते मुस्करा रही थी कि वाह बाबा वाह, कितनी उम्मीदें इस ग्रुप में हैं। उसके बाद फिर बाबा बोले, सिर्फ एक बात बाबा बच्चों को कान में सुनाते हैं कि कभी भी अलबेलापन अपने में नहीं लाना कि हम तो छोटे हैं, किया, नहीं किया। नहीं। योग, ज्ञान, धारणा में अलबेला नहीं बनना लेकिन अलर्ट बनना है। सदा यही सोचो कि मुझे बाबा के दिल में प्यार का रिटर्न दिल से देने में नम्बरवन बनना ही है। देखेंगे, कोशिश करेंगे यह संकल्प स्वप्न में भी नहीं लाना है, करना ही है। कोमलता को छोड़ कमाल कर दिखाना ही है। ऐसे बाबा हर्षित हो बोल रहे थे जैसे सम्मुख में बड़ी हुज्जत और स्नेह से बोल रहे थे। मैं तो बाबा को देखती ही रह गई।

उसके बाद बाबा बोले, बच्ची मेरे नन्हे-से मीठे-मीठे रूहानी फूलों के लिए क्या सौगात ले जायेंगी! मैं बोली बाबा जो आप देंगे। बाबा बोले, बच्ची ब्रह्मा बाप के दिल पसन्द फूल लिली-फलावर (रजनी गंधा) थे। तो आज इन बच्चों को इन फूलों की गिफ्ट बापदादा दे रहे हैं। तो बहुत सारे फूल एक सुन्दर ट्रे में रखे हुए थे। हर एक फूल के ऊपर चमकीला पाउडर भिन्न-भिन्न रंगों का डाला हुआ था, जो बहुत अच्छा चमक रहा था और डाली उसकी लम्बी होती है और एक डाली में बहुत फूल लगे हुए होते हैं। ऐसे ही वतन में इमर्ज हुए तो हर एक फूल की डाली पर लिखा हुआ था - सदा संगठन, सम्मान और स्नेह को अविनाशी बनाना। ऐसे फूलों की डाली हर एक को बापदादा ने गिफ्ट में दी और हम आप सबकी याद देते वा लेते हुए साकार वतन में पहुँच गई।

12-9-2001

साइलेन्स की शक्ति द्वारा

आत्माओं को और प्रकृति को विशेष सहयोग दो

आज बापदादा के पास गई, बापदादा बहुत शक्ति रूप और स्नेही रूप से मिलन मनाते बोले, बच्ची क्या सन्देश लाई हो? मैं मुस्कराते बोली, बाबा आप तो जानते ही हो - बाबा बोले, बच्ची बापदादा तो सदा कहते रहते हैं - एवररेडी रहो लेकिन साथ में यह प्रकृति भी समय समीप का इशारा देने लिए घण्टे बजाती रहती है। यह थोड़ी बड़ी घण्टी बजाई है कि बच्चे अलबेलेपन से अलर्ट हो जाएं। बाकी तो प्रकृति द्वारा विनाश का साधन है साइन्स, आप स्थापना वालों का साधन है - साइलेन्स। इसलिए जैसे वह फोर्स से कर रहे हैं ऐसे आप भी और योगयुक्त, कर्मयोगी स्थिति का ज़ोर-शोर से पावरफुल याद का स्वयं द्वारा वायुमण्डल बनाओ। डरो नहीं। बाकी अमेरिका में शहर के नजदीक से दूर कुछ दिन चले जाएं। बापदादा ने तो सब जगह अच्छे-अच्छे रिट्रीट स्थान बनवाये हैं - बच्चों के एशलम के लिए। इसलिए आप अपने साइलेन्स की शक्ति द्वारा विशेष आत्माओं को, प्रकृति के वायुमण्डल को सहयोग दो। परेशान आत्माओं को अपने शक्ति रूप की शान की स्थिति द्वारा सहयोग दो। यह तो छोटी-बड़ी घण्टियां बजनी ही हैं - आपको अपना कार्य तीव्रगति से कराने लिए। अचल रहो, अडोल रहो, श्रेष्ठ वायुमण्डल बनाने का सहयोग दो।

17-9-2001

नथिंग न्यू के स्मृति स्वरूप बन प्रकृति का खेल देखो

आज बापदादा के पास जाते ही क्या देखा कि बापदादा बहुत आलमाइटी अथॉरिटी रूप में विश्व के चारों ओर आत्माओं को, प्रकृति को सकाश दे रहे हैं। मैं भी दूर से ही देख-देख अपने को भी बाप समान स्थिति में अनुभव कर रही थी। सच तो वह अथॉरिटी और पावरफुल स्टेज कितनी महान और प्यारी है। कुछ समय के बाद बाबा की दृष्टि मेरे ऊपर गई। मैं दृष्टि मिलते ही

नजदीक जाते मिलन मना रही थी। बाबा बोले, बच्ची आज विश्व की हलचल का समाचार लाई हो!

मैं मुस्कराई, बाबा बोले, बच्ची यह हलचल ही मीठे बच्चों को अचल बनाने वाली है। तो सब बच्चे अचल हैं ना! क्योंकि पहले से ही जानते हैं कि यह तो होना ही है। अति का बढ़ना ही परिवर्तन की निशानी है। इसलिए नथिंगन्यू के स्मृति स्वरूप बन प्रकृति का खेल देखना है। जब आप बच्चे इस वर्ष संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन का मना रहे हैं तो प्रकृति आप मालिकों का आर्डर तो मानेगी ना! बोलो, प्रकृतिजीत बापदादा के बालक सो मालिक बच्चे, जैसे प्रकृति अपना कार्य जोरशोर से कर रही है, ऐसे ही बच्चे भी स्व के संस्कार परिवर्तन का कार्य तीव्रगति से कर रहे हैं वा प्रकृति का सहयोग देखने में ही बिजी हो गये हैं। इतनी आत्मायें नाहेक मृत्यु से परेशान हो रही हैं तो अपने बहन, भाइयों के ऊपर रहम करो। मनसा द्वारा शान्ति की सकाश दो। समय की पुकार, आत्माओं की पुकार, भक्तों की पुकार सुन रहे हो ना! तो अपने आपको चेक करो कि अपने मन-बुद्धि की लाइन वाइसलेस पावर द्वारा क्लीयर और क्लीन है? क्योंकि वर्तमान समय की हलचल के वायुमण्डल प्रमाण कोई भी समय अचानक कहाँ भी किसी समस्या को पार करने के लिए बुद्धि की लाइन बहुत प्युअर चाहिए। जो समय पर एक्युरेट टचिंग हो सके। क्या करना है, क्या होना है - यह स्पष्ट हो जाए और इसी साधन द्वारा सेफ हो जायेंगे। यह साधन इस समय के वायुमण्डल प्रमाण हर बात का समाधान है। इसलिए बिन्दु आत्मा हूँ, ज्योति बिन्दु बाबा के कनेक्शन द्वारा बिन्दु लगाए डबल लाइट बन उड़ते चलो, सकाश देते चलो, मनसा सेवा को बढ़ाओ। निर्भय बन, बेफिकर बादशाह की स्थिति में स्थित रहो। सदा यह याद रहे कि होना ही था, वह हो रहा है।

इसके बाद बाबा ने डबल फारेनर्स बच्चों को भी बहुत-बहुत मीठे स्नेह स्वरूप से याद किया और कहा मेरे डबल फारेनर्स बच्चे दूर रहते भी

बापदादा के नयनों के नूर हैं। मैजारिटी बच्चों के दिल में नयनों में बस बाबा-बाबा ही समाया हुआ है। उसी एक याद के बल से और सेवा के उमंग-उत्साह के कवच से आगे बढ़ रहे हैं। बापदादा भी विशेष बच्चों को याद का रिटर्न दिल का सहयोग सदा देते रहते हैं इसलिए हर बच्चे को नाम सहित बापदादा की याद देना।

भारतवासी बच्चे तो बापदादा की कर्मभूमि, वरदान भूमि मधुबन के समीप हैं। बाबा के दिल के भी समीप हैं। परिवार के संगठन का साकार में भी साथ है। तो भारतवासी बच्चों को भी बहुत-बहुत याद देना। इसके बाद बाबा को वर्तमान वी.आई.पीज के प्रोग्राम प्रति समाचार सुनाया। तो बापदादा सुनते बहुत मीठा मुस्कराया और बोले, समय के वायुमण्डल को देख सुन फिर भी अपना भाग्य लेने के लिए उमंग-उत्साह से पहुँच गये हैं। सभी बच्चों का शान्ति की शक्ति के प्रति और शान्ति सागर बाबा से प्यार के प्रति मधुबन पहुँचना देख बापदादा विशेष हर्षित हो मुबारक दे रहे हैं कि सदा इसी लगन से आगे बढ़ते और औरों को भी आगे शान्ति की आध्यात्मिक शक्ति के अनुभव का परिचय देते रहना। बापदादा की तो हर बच्चे में बहुत-बहुत दिल से श्रेष्ठ उम्मीदें हैं कि यह हर एक बच्चा अपने अनुभव द्वारा औरों को भी बाबा के कार्य में, शान्ति के कार्य में सहयोगी बनायेंगे। बापदादा हर बच्चे को देख खुश है कि हिम्मत रख अपने को परमात्म मदद के पात्र बना दिया। अब इसी सम्बन्ध द्वारा सहयोगी सो योगी बनने के संकल्प को दृढ़ रखते हुए सफलता का अनुभव करते रहना।

ऐसे कहते बापदादा बोले, देखो बच्ची सभी मेहमान बनकर आये और महान बनने के पात्र, परमात्म सन्देशवाहक बन जा रहे हैं, अधिकारी बन जा रहे हैं। ऐसे अधिकारी बच्चों को बाबा भी स्नेह से इस संसार के तनावपूर्ण वायुमण्डल से सदा सेफ रहने के लिए सौगात दे रहे हैं, जिससे सदा टेन्शन से न्यारे और बाबा के प्यारे कमल पुष्प समान रहेंगे। ऐसे कहते बाबा ने बहुत अच्छी सौगात दिखाई, वह क्या थी ? वह एक सुन्दर छत्रछाया थी। जैसे

राजाओं के तख्त के ऊपर छत्रछाया दिखाते हैं, ऐसे बड़ी सुन्दर लाइट और माइट सम्पन्न चमक रही थी और उसमें जो छतरी खोलने की तारें होती हैं वह अष्ट तारें थी, जिन तारों पर एक एक विशेष शक्ति लिखी हुई थी। लाइट भी भिन्न-भिन्न रंग की थी और शब्द भी लाइट के शब्दों में थे। छतरी के नीचे चारों ओर छोटे-छोटे झुमके लटक रहे थे, उस हर एक झुमके पर नैतिक मूल्य लिखे हुए थे जो भी बहुत विचित्र लग रहे थे। छतरी के बाहर ऊपर में ज्योर्तिबिन्दु स्वरूप चमक रहा था, जो लाइट फैला रहा था। सौगात तो बड़ी सुन्दर अमूल्य थी। बापदादा ने आये हुए हर बच्चे के लिए यह सौगात देते हुए बोला, कोई भी समस्या आये - चाहे मन की, सम्बन्ध-सम्पर्क की, प्रकृति के वायुमण्डल की, तो यह बाबा द्वारा दी हुई सौगात ''छत्रछाया'' याद आने से समस्या समाधान के रूप में बदल जायेगी। मन में दिलशिकस्त भाव बदली हो शक्तिशाली दिलखुश भाव और भावना प्रकट होगी। लेकिन यह सदा याद रखना -''सच्ची दिल पर परमात्म साहेब राज़ी रहेंगे''। ऐसे बापदादा से मिलन मनाए मैं साकार वतन में पहुँच गई।

20-9-2001

अन्तिम सीन को देखने के लिए साहस के साथ अपनी अवस्था को साक्षी बनाओ

आज जब बाबा के पास वतन में गई तो सदा के प्रमाण बाबा मुस्कराते हुए मीठा मिलन मनाते, अपनी बांहों में समाते बोले कि बच्ची आपकी दुनिया में क्या हो रहा है, क्या समाचार लाई हो? तो मैंने मुस्कराया और कहा बाबा आप तो सब जानते ही हो कि आपकी पुरानी दुनिया में क्या हो रहा है और आप ही पुरानी को नया बनाने वाले हो। तो बाबा मुस्कराये और बोले कि बच्चे आप सब तैयार हो, आपकी माला बन गई है? मैंने कहा बाबा यह तो टीचर जानता है कि माला बन गई है या क्या है, हम तो माला का

मणका बनने का पुरुषार्थ करते हैं, तो बाबा ने कहा कि आप बन गई हो ? मैंने कहा, बाबा वर्तमान समय के अनुसार ड्रामा प्लैन अनुसार जितना बनना है उतना तो बन चुके हैं। तो बाबा मुस्कराया और कहा चतुराई से जवाब देती हो। मैंने कहा जानी जाननहार तो आप हो ना, बाबा बोले देखो बच्ची दुनिया में बहुत हलचल है। इतनी हलचल है कि हर एक के अन्दर बदले की भावना है, बहुत आवेश, गुस्सा है। लेकिन बाबा अभी बच्चों को समय दे रहा है। नहीं तो इतना गुस्सा है बस अभी करें। लेकिन बाबा उनको किसी-न-किसी बहाने से थमा रहा है क्योंकि अभी सबकी एक मत नहीं है, जब एक मत हो जायेगी तो परिवर्तन का अन्तिम कार्य शुरू हो जायेगा। बाबा यह बच्चों को समय दे रहा है, बच्चे सेवा में तो नम्बरवन हैं। बाबा सेवा में तो सफलता भी देता है और साथ-साथ एक बार मधुबन पहुँच जाते हैं, तो बाप के घर का अनुभव करके भी जाते हैं और यह भी महसूस करते हैं, यह स्थान अन्य स्थानों से भिन्न है। आप बच्चे स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो तो थोड़ा-बहुत स्वर्ग का मॉडल उनको दिखाई देता है। लेकिन बाबा ने कहा जैसे आप दूसरों को कहते हो ना कि आप ऐसे नहीं कहो कि कर लेंगे, देख लेंगे, हो जायेगा। ऐसे आप अपने से भी पूछो कि यह भाषा तो नहीं बोलते हो। आप भी समय के साथ-साथ अपनी भाषा, अपने पुरुषार्थ, अपनी अवस्था में भी परिवर्तन लाओ। और सेवा तो आप लोगों को इतनी मिलने वाली है और मिल रही है, जो आप रोकते हो कि थोड़े आओ। अगर आप गेट खोल दो तो सम्भाल नहीं सकेंगे। सेवा की इतनी बड़ी मार्जिन है जो आप थक जाओ लेकिन सेवा लेने वाले नहीं थकेंगे। दिन प्रतिदिन जितना लोगों का ताला खुलता जायेगा तो उनको भी टचिंग होगी अभी आपके पास तो क्यु लगने वाली है। वह तो तैयार हैं, आपको भी पूरा तैयार होना है। सबकी निगाहें आपकी तरफ हैं। आपका जीवन, आपके विचार, आपकी चलन उनके अन्दर परिवर्तन लायेगी। अभी थोड़ा परिवर्तन आता है फिर ठहर जाते हैं। वह आपका परिवर्तन देखते हैं, आपका परिवर्तन अविनाशी है या ऊपर-नीचे होता रहता

है। तो बाबा ने कहा अभी आप बच्चों को अपनी स्टेज अचल, अडोल, एकरस रखना है। समय के पहले अपने को तैयार कर लेना है। बच्चों को अपनी कमाई का, अपनी अवस्था का पूरा-पूरा ध्यान रखकर पुरुषार्थ करना है। अभी तो बहुत विचित्र-विचित्र सीन देखते रहेंगे। इसके लिए अपनी अवस्था साक्षी बनाओ। अन्तिम सीन देखने के लिए भी साहस चाहिए। यह सवाल न उठे क्यों, कैसे! यह होना ही है, सामना करने की शक्ति धारण करो।

फिर बाबा को भोग स्वीकार कराया और आज कई आत्माओं का भोग था। खास गोपीवल्लभ बहन का भोग था, तो उनको बाबा ने वतन में इमर्ज कर भोग खिलाया। और कहा कि देखो बच्ची, यह आदि से अब तक अनेक प्रकार की परिस्थितियां आते हुए भी अपनी स्वस्थिति में स्थित रह अपनी भी कमाई की, पुण्य की पूंजी जमा की और अन्य आत्माओं को भी आगे बढ़ाया। आज दादा गोपाल को भी खास याद किया था, बाबा ने उन्हें भी इमर्ज किया। दादा गोपाल ने कहा कि देखो बाबा ने मुझे समय से पहले सेवा का स्थान बदलकर दे दिया। लेकिन मुझे यह खुशी है कि सभी सेवा पर तत्पर हैं। कभी-कभी बाबा मुझे यह चैतन्य फुलवाड़ी दिखाता है तो मैं देखकर खुश होता हूँ कि यह फुलवाड़ी भी आगे बढ़ती जा रही है और काम तो बाबा का है, निमित्त कोई-न-कोई को बनाता है। तो सभी को मेरी याद-प्यार देना।

फिर बाबा ने सभी को याद-प्यार दिया और कहा कि जो भी विंग की सेवा चल रही हैं, सेवा में तो वृद्धि होती जा रही है लेकिन अभी साथ-साथ अपने पुरुषार्थ में, स्वउन्नति में भी वृद्धि करती चलो। ऐसे याद-प्यार लेते मैं वापस आ गई।

21-9-2001

अपना मनोबल बढ़ाओ और मनसा सेवा करो

वर्तमान समय प्रमाण हमें अपनी शान में स्थित होकर परेशान आत्माओं को कुछ-न-कुछ अंचली देनी है। तो बाबा का यही इशारा है कि आप सब अपने को जिम्मेवार समझो और तीन बिन्दु ही याद रखो -८. हम आत्मा बिन्दु २. बाबा बिन्दु और कामकाज करते, सम्पर्क-सम्बन्ध में जो भी बातें होती हैं उसको भी बिन्दु लगाकर, व्यर्थ और निगेटिव संकल्पों से अपने को पार करके सेवा करो क्योंकि अगर व्यर्थ और नगेटिव चलेगा तो सेवा नहीं कर सकेंगे। तो बाबा ने यही इशारा दिया है कि इस समय विशेष आपको मनसा सेवा करने का समय है। वाचा प्रोग्राम्स होते हैं तो उसमें वाचा सेवा तो करते ही हो लेकिन इस समय विशेष मनसा मनोबल द्वारा आत्माओं को कुछ-न-कुछ अंचली देनी है, यह विशेष अटेन्शन रखना चाहिए। और मनसा सेवा तब होगी जब हमारा मन फ्री होगा। तो बाबा का यही इशारा है कि अब अपना मनोबल बढ़ाओ और मनसा सेवा करो। ऐसे समय पर यही मनसा सेवा ही अपने और दूसरों के लिए चाहिए।

दूसरा - बाबा कहते हैं वर्तमान समय के अनुसार एकानामी का पाठ पक्का करो। जो भी हमारे खजाने हैं चाहे संकल्प हैं, बोल हैं, कर्म हैं... चाहे स्थूल चीज़ें हैं सबकी एकानामी आजकल बहुत ज़रूरी है। बिना एकानामी के एकनामी बन नहीं सकते। एकानामी अर्थात् वेस्ट को बेस्ट में चेंज करना, थोड़े में ज़्यादा फायदा लेना... इसको कहा जाता है एकानामी। इसलिए बाबा का वर्तमान समय यही इशारा है कि सब रूप से एकानामी करो। एकानामी करने से मन-बुद्धि फ्री होंगे। नहीं तो आयेगा अभी यह चाहिए, यह होना चाहिए... उससे हमारा बुद्धियोग उसी में चला जाता है। तो बाबा ने एकनामी और एकॉनामी इस पर विशेष अन्डरलाइन कराया है, इस पाठ को पक्का करो। एकानामी है तो उसका प्रूफ है एकनामी सहज बन जायेंगे। अगर एकनामी नहीं बन सकते हैं तो इसका अर्थ है ज़रूर कोई-न-कोई स्थूल या सूक्ष्म खज़ाना कहाँ न कहाँ लीकेज है। तो हर एक अपनी अवस्था में यह प्रूफ तो देख ही सकते हैं।

बाकी तो बाबा कहते आप तो हैं ही बेफिक्र बादशाह। जो भी आजकल दुनिया में हो रहा है, उसमें डरने की तो बात ही नहीं है। आपने वर्ष ही रखा है ''संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन''... तो प्रकृति आपका आर्डर मानकर चल रही है। संसार परिवर्तन तो ज़रूर कोई साधन से होगा। आप मालिकों ने संकल्प किया है संसार परिवर्तन होना चाहिए। तो आपका आर्डर प्रकृति मान रही है। तो आप क्यों सोचो कि क्या होगा, कैसे होगा। जो होगा सब अच्छा होगा क्योंकि आपने ही प्रेरणा दी है प्रकृति को। वह कर रही है। बाबा कहता है तुम बच्चों के कारण ही समय रुका हुआ है। सोचते हैं आज शुरू करें, कल शुरू करें... सब कहते हैं – सोचो, ऐसे कदम नहीं उठाओ। तो बिचारे वह भी परेशान हैं क्योंकि हम लोग तैयार नहीं हैं।

तो बाबा का यही इशारा है कि बच्चे समय को देखकर अपने मनोबल को बढ़ायें और बेफिकर बादशाह बनकर खेल देखें। खेल देखने की आदत तो है ही, ७DDD वर्ष से खेल देख रहे हैं। बाकी आने जाने के लिए पूछते हैं तो बाबा कहते बच्चे जब हालतें खराब होंगी, उस समय और तो कोई आयेगा, जायेगा नहीं। आपको टिकेट बहुत सहज मिल जायेंगी। आप सोचो नहीं कि उस समय टिकेट मिलेगी, या नहीं। बाबा के टाइम आ सकेंगे या नहीं आ सकेंगे! और तो कोई बिचारे डर के मारे आयेंगे ही नहीं, सब आपको ही मिलेगा। इसलिए आप फिकर नहीं करो, जैसे चल रहा है, चलते चलो। बाकी जहाँ-जहाँ कोई वातावरण है, वहाँ बाबा इशारा दे देता है, यह करो, यह नहीं करो। बाकी मधुबनवासी तो हैं ही बेफिक्र बादशाह, चुल पर सो दिल पर बैठे हैं। मधुबन निवासियों के लिए एक ही काम है - एकनामी, एकानामी बस। वही ध्यान रखकर करेंगे तो बहुत अच्छा है।

23-9-2001

सदा सन्तुष्टमणि बन
सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करो

आज बापदादा के पास गई। बापदादा से नयन मिलन मनाते आगे बढ़ते, परमात्म लव में लवलीन होते सम्मुख पहुँच गई। बापदादा बड़े स्नेही रूप से बोले, बच्ची क्या समाचार लाई हो! मैं बोली, बाबा आज तो हमारी मीठी दादी जानकी जी और साथ में लण्डन निवासी सर्व बच्चों की खास याद-प्यार और सन्देश लाई हूँ। आज तो डायमण्ड हाउस के मकान बनने का कार्य आरम्भ हो रहा है। यू.के. के भाई-बहन आसपास के भी इस कार्य में हिम्मत-उमंग से इक्ट्ठे हो रहे हैं। बाबा बोले, जनक बच्ची तो बड़ी सेवा के उमंग में उड़ रही हैं। जनक बच्ची साथ सर्व लण्डन निवासियों की दिल बहुत बड़ी है क्योंकि बड़े-बड़े बाप के बच्चे हैं। बच्चों की हिम्मत और दृढ़ संकल्प अच्छा है। इसलिए जिस कार्य का संकल्प करते हैं वह सफल हो जाता है।

वर्तमान समय प्रमाण अब सेवा की वृद्धि तो होनी ही है इसलिए विदेश के बच्चों के लिए भी सेवास्थान और स्व-स्थिति तो बढ़नी ही है। बापदादा सभी बच्चों को डायमण्ड हाउस के आरम्भ होने तथा सेवा के उमंग-उत्साह की मुबारक दे रहे हैं, साथ-साथ सभी बच्चों पर रूहानी डायमण्डस की वर्षा कर रहे हैं। इस डायमण्ड हाउस द्वारा अनेक आत्मायें डायमण्ड बन अपना डायमण्ड भाग्य बनायेंगी। अब समय प्रमाण सेवाओं की खान खुलनी ही है क्योंकि आत्माओं में अब शान्ति-सुख की अंचली लेने के निमित्त तड़फ है। आपके सर्व सेवा के स्थान स्प्रीचुअल शमा बन जायेंगे और पंतगे (परवाने) चक्कर लगाते शमा पर पहुँच जायेंगे। इसलिए बापदादा सर्व यू.के. अर्थात् सदा ओ.के. रहने वाले बच्चों की बड़ी दिल पर बहुत खुश है। जनक बच्ची तो है रूहानी मस्ती में उड़ने वाली। साथ में उनके सर्व साथियों को ग्लोबल हाउस, बाबा भवन, रिट्रीट हाउस और साथ में सर्व अन्य सेन्टर के सर्व भुजाओं को बापदादा बड़े स्नेह और दिलाराम दिल से हर बच्चे को नाम सहित याद-प्यार दे रहे हैं। साथ में हर बच्चे की विशेषता पर हर एक को वरदान दे रहे हैं। बच्चे सदा सन्तुष्टमणि बन हर संकल्प में सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करते कराते रहो।

इसके बाद बाबा ने इस कार्य निमित्त बने हुए पाण्डवों को खास याद दी

और बोले, हर एक बच्चे को कोई-न-कोई विशेषता बाप द्वारा वरदान में मिली हुई है जिससे सेवा में सहज सफलता हो रही है। साथ में बाबा ने मुरली भाई को भी याद किया और कहा सदा निरसंकल्प, बाप की छत्रछाया में है और चलते रहो। बापदादा सदा बच्चों का जिम्मेवार है। साथ में जयन्ती बहन को भी दिल से याद किया और बोले, बच्ची अलौकिक-लौकिक दोनों तरफ की सेवा बहुत सफलतापूर्वक कर रही है। छोटेपन से बच्ची को सेवा में चक्रवर्ती बन चक्कर लगाने में, एवररेडी बनने का वरदान मिला हुआ है। उसको निभा रही है। इसलिए बापदादा मुबारक दे रहे हैं। और साथ में सब बहिनें जो निमित्त हैं उन एक-एक को बापदादा नयनों में समाए याद दे रहे हैं।

11-10-2001

समय प्रमाण अब शान्ति, शक्ति और सुख देवा बनो तब बाप की प्रत्यक्षता होगी

आज बाबा के पास पहुँची तो क्या देखा, बापदादा लाइट की ऊंची पहाड़ी पर खड़े हैं और बापदादा के नयनों से, मस्तक से बहुत प्यारी शान्तिमय लाइट निकल रही थी जो लाइट हाउस के समान चारों ओर फैल रही थी और बाबा इसी कार्य में इतना बिजी थे जो हमारी तरफ भी देख नहीं रहे थे। मैं भी बाबा को देख उसी अनुभव में लीन थी। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची देख रही हो - बापदादा किस कार्य में बिजी हैं। वर्तमान समय तो हर एक बच्चे की भी विशेष यही जिम्मेवारी है - स्व द्वारा विश्व की आत्माओं में शान्ति की लहर फैलायें, आत्माओं को रूहानी साहस का सांस दिलावें। जब आप बच्चों का विश्व परिवर्तन का कार्य है तो अपने ब्राह्मण आक्यूपेशन प्रमाण विश्व कल्याण के कार्य को निभाने का यह समय है। जैसे विनाश का कार्य ज़ोरशोर से चल रहा है तो आप शान्ति दाता बच्चों का कार्य इतना ही ज़ोरशोर से चल रहा है?

बापदादा देख रहे हैं कि देश-विदेश में सेवा के प्रोग्राम्स बहुत अच्छे चल रहे हैं। वह तो समय प्रमाण बापदादा का वरदान है। सेवा की खानें खुलनी ही हैं। बापदादा बच्चों की सेवा देख खुश हैं। अच्छे उमंग-उत्साह, मेहनत से कर रहे हैं। परन्तु सेवा के प्रोग्राम्स और स्व-स्थिति के प्रोग्राम्स का बैलेन्स है?

स्व-परिवर्तन द्वारा ही स्थापना का कार्य सम्पन्न होना है। तो स्व स्थिति द्वारा, बेहद की वृत्ति द्वारा स्थापना के कार्य में तीव्रता ला रहे हैं? बच्चे, स्व-स्थिति में एवररेडी हैं? हर एक बाप समान स्व-स्थिति से सन्तुष्ट हैं? बापदादा अब हर बच्चे की यही रिज़ल्ट देखने चाहते हैं। अब समय प्रमाण सदा शान्ति देवा, शक्ति और सुख देवा बनने का समय है। जब निरन्तर ऐसी स्थिति में रहेंगे तब आप बच्चों द्वारा बाप की प्रत्यक्षता होगी और अनेक आत्मायें बाप के समीपता का अनुभव करेंगी। बापदादा जानते हैं कि यह शुभ आशा बाप के हर बच्चे के दिल में बार-बार याद आती है कि बस मुझे तो बाप समान बनना ही है। परन्तु बच्चों का पुरुषार्थ कुछ समय तीव्र होता, फिर कोई समस्या, सरकमस्टांश वा संगठन के वातावरण कारण तीव्रता कम हो जाती है। लेकिन अब समय है निरन्तर लगन में मगन रहने का। इसके बाद बाबा बोले, अब तो बापदादा हर बच्चे को स्व-कल्याण, विश्व-कल्याण के आसनधारी स्थिति में ही देखने चाहते हैं। हर एक अपने को देख दृढ़ संकल्प करे कि मुझे जल्दी-से-जल्दी बाप समान बनना ही है। इसी वृत्ति से स्व में, सेवा में, आन्तरिक शक्ति में वृद्धि लानी ही है। ऐसे बोलते ऐसे लगा जैसे बापदादा बड़े स्नेह और उम्मीदों भरी दृष्टि से हर एक बच्चे को देख रहे हैं। ऐसे लग रहा था जैसे आज पाण्डवपति अपने पाण्डव सेना को एवररेडी बना रहा है।

उसके बाद बाबा को मीटिंग का समाचार सुनाया। (मधुबन में एक छोटी मीटिंग आगे होने वाले कार्यक्रमों के बारे में रखी गई थी, जिसका समाचार बापदादा को सुनाया) तो बाबा बोले, यह आवश्यक है कि प्रोग्राम्स की रूपरेखा अब शान्ति की ही थीम पर हो। बाकी जो प्रोग्राम चल रहे हैं, वह तो चल ही रहे हैं। धर्म सम्मेलन में भी अगर कोई आने लिए तैयार हैं तो होमली

रूप में और ही अच्छे स्नेही, सहयोगी बन जायेंगे। बाकी अभी तक जो प्रोग्राम फाइनल नहीं किये हैं, वह रहने दो। समय प्रमाण देखते चलो।

मधुबन में तथा चारों ओर विशेष योग भट्ठी का वातावरण हो और वाचा के प्रोग्राम्स कम, शान्ति की अनुभूति, शक्ति वा सुख की अनुभूति के प्रोग्राम्स ज़्यादा चलने चाहिए। इस विधि से प्रोग्राम्स बनाते चलो। सबसे ज्यादा स्व परिवर्तन सो सम्पन्न स्थिति बनाने पर ध्यान विशेष देना है। ऐसे कहते बापदादा ने सब बच्चों को बहुत-बहुत स्नेह सम्पन्न याद-प्यार दी। विदेश के बच्चों को भी खास याद और हिम्मत की मुबारक दी। इसके बाद बाबा को विशेष दोनों दादियों की याद दी। बापदादा बोले, दोनों मेरे मुरब्बी बच्चे हैं। बापदादा ने निमित्त बनाया है तो निमित्त बनने वालों को विशेष निमित्त बनने की मदद भी मिलती है। अब दोनों अपनी तबियत के नॉलेजफुल बन गये हैं। बापदादा दोनों बच्चियों को विशेष हिम्मत पर, दिल के प्यार के गोल्डन पुष्प चढ़ा रहे हैं। ऐसे कहते दोनों को बापदादा ने अपने नयनों में समा लिया। हम तो देख-देख खुश हो रही थी - वाह दादियाँ वाह! अच्छा।

9-12-01

प्रकृति के पांचों तत्वों द्वारा वन्डरफुल स्वागत

(ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर (दिल्ली) के प्रथम फेज़ के उद्घाटन अवसर पर)

आज के दिन चारों ओर से देश और विदेश से सभी विशेष आत्मायें इस फाउण्डेशन सेरीमनी के लिए आये हैं। उद्घाटन तो आप सबने किया लेकिन बाबा ने भी आज वतन में आप सभी का बहुत-बहुत विचित्र रूप से स्वागत किया, जो अभी तक हुआ नहीं है। जैसे ही हम वतन में पहुँची तो दूर से ही बाबा तो मुझे नहीं दिखाई दिया लेकिन एक बहुत वण्डरफुल सीन हमारे सामने आई। थोड़ा हम आगे बढ़े तो बहुत विचित्र शहनाई सुनने में आई और

उस शहनाई के बीच में प्रकृति के यह पांच तत्व बहुत सुन्दर रूप से स्वागत कर रहे थे। आप कहेंगे प्रकृति कैसे स्वागत करेगी! वह भी एक वण्डरफुल सीन थी। आज की यह सारी सभा वतन में इमर्ज थी, तो पहले हमने देखा - आकाश दिखाई दिया और उस आकाश से हम सबके ऊपर बहुत सुन्दर फूलों की वर्षा हो रही थी। तो आकाश, प्रकृति हमारा यह स्वागत कर रही थी। फिर आया वायु, वायु ऐसे चल रही थी जो चारों ओर के भिन्न-भिन्न वृक्ष के पत्तों की टालियां ऐसे हिल रही थी, हवा से टाल-टालियां ऐसे झूम रही थी, जो ऐसे सुन्दर साज़ निकल रहे थे, जो अभी तक तो हमने नहीं सुने हैं। तो भिन्न-भिन्न साजों से वायु हमारा स्वागत कर रही थी। और तीसरा नम्बर - अग्नि ने स्वागत किया। अग्नि तो वैसे जलाने का काम करती है, लेकिन क्या देखा कि एक सेकण्ड में अनेक प्रकार की मीठी चीज़ें, नमकीन चीज़ें, भोजन की चीज़ों के थाल हम सबके सामने ऐसे घूम रहे थे, जैसे चक्र होता है ना। ऐसे अग्नि ने हम सबका भोजन से स्वागत किया।

फिर जल ने स्वागत की। जैसे हम यहाँ स्लोगन वरदान रूप में देते हैं, इसी प्रकार से वहाँ बहुत सुन्दर चमकीले स्लोगन थे, जो सागर से ऐसे सुन्दर स्लोगन की थालियां निकली और भिन्न-भिन्न प्रकार के सुन्दर सजे हुए स्लोगन सबको मिलते गये। ऐसे सागर ने सभी की स्वागत की, उसके बाद पृथ्वी जैसे हम सबका आह्वान कर रही थी। आइये फरिश्ते, पधारिये, स्वागत है, स्वागत है.... तो यह पांच प्रकार से प्रकृति ने हम सबका स्वागत किया, ऐसे स्वागत कराते सभी आगे चलते गये फिर बाबा सामने दिखाई दिया। वह सीन भी बड़ी न्यारी थी।

हमने देखा कि बाबा ने इन दो दादियों (दादी जी और दादी जानकी जी) को इमर्ज किया। इन दादियों के हाथ में बहुत सुन्दर मणियां थी। ऐसी मणियां पहले हमने नहीं देखी है। बहुत सुन्दर मणियों के हार इन दोनों दादियों के हाथ में थे और उस एक-एक मणी में हम सब बच्चों की याद-प्यार समाई हुई थी। दोनों दादियों ने हम सबके याद-प्यार की माला बाबा को पहनाई। माला

पहनाने के बाद यह दोनों ही दादियाँ बाबा के दोनों तरफ ऐसे खड़ी हो गई, जो इनका शरीर नहीं दिखाई दे रहा था, सिर्फ फेस दिखाई दे रहे थे। बीच में ब्रह्मा बाबा का और दोनों तरफ दोनों दादियों का। यह तीन फेस ऐसे लगे जैसे त्रिमूर्ति ब्रह्मा गाया हुआ है। तो सभी बच्चों को बाबा ने कहा देखो यह त्रिमूर्ति ब्रह्मा है। तो यह त्रिमूर्ति ब्रह्मा के रूप में बहुत सुन्दर सीन दिखाई दे रही थी। यह सीन आप भी अपने सामने इमर्ज करो।

उसके बाद बाबा ने सभी प्रान्तों वा देशों से आये हुए भाई-बहनों को इमर्ज किया। और उनको खास ऐसे वरदान का हाथ देकर कहा बच्चे, बहुत अच्छा किया जो आप सभी इस रूहानी खेत में रूहानी वायब्रेशन का बीज डालने के लिए आये। यह भी रूहानी वायब्रेशन की सीड सेरीमनी हो गई। तो बाबा ने कहा देखो, मुख्य सब सेन्टर्स की टीचर्स और मुख्य भाई सब इकट्ठे हुए हैं। प्रबन्ध भी थोड़ा नीचे-ऊपर मिला है फिर भी सब पहुँच गये हैं। तो बाबा ने कहा भले कुछ भी है लेकिन मैं यह देख रहा हूँ, दादी ने बुलावा किया कि दिल्ली हमारी राजधानी है, आप सब पहुँच जाओ। और सभी देशों से, यहाँ-वहाँ से पहुँच गये हैं, इसकी मुबारक हो। यह संगठन की शक्ति क्या नहीं कर सकती है। संगठन के शक्ति की कमाल तो जानते ही हो। ऐसे कहते बाबा ने दिल्ली वालों को भी खास याद दी और कहा दिल्ली वालों की भी कमाल है। दिल्ली तो बाबा की दिल है, देखो वैसे तो शिव बाबा को गिफ्ट दी जाती है लेकिन बाबा ने दिल्ली वालों को गिफ्ट दी है, तो कमाल है दिल्ली वालों की भी जो बाबा ने दिल्ली को सौगात दी है। जन्म-जन्म तो भगवान को सौगात दी लेकिन इस बारी भगवान ने आप सबको सेवा के लिए यह सौगात दी है। तो एक-एक बच्चे को कहना कि बाबा ने आप सबका नाम लेकर, विशेष याद दी है। जैसे बाबा के सामने सभी बच्चे इमर्ज थे और बाबा एक-एक को नाम से याद और प्यार बहुत-बहुत दिल से दे रहे हैं। ऐसे याद-प्यार देते बाबा बोले, बच्चों से यही संकल्प कराना कि हर एक को अपने रूहानी वायब्रेशन फैला करके दिल्ली द्वारा विश्व में बाप को

प्रत्यक्ष करना ही है। तो सभी इस सभा में यही संकल्प करो।

16-1-02

अव्यक्त मिलन की आकर्षण से नियमों का बंधन निभाने में सहयोग

आज बापदादा के पास गई तो बापदादा ने बहुत स्वीट डीप साइलेन्स के रूप में मुस्कराते हुए मिलन मनाया। मैं भी उसी मीठी साइलेन्स की स्थिति में लीन हो गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आज तो मधुबन की मीटिंग का समाचार लाई हूँ और सब मीटिंग वालों की विशेष याद-प्यार लाई हूँ। दादी जी ने भी विशेष प्रेम सम्पन्न याद दी है। ऐसे सुनते ही ऐसा लगा जैसे बाबा वतन में होते भी कहाँ और हैं और ऐसे अनुभव हुआ कि दादी जी से ही रूहरूहान और मिलन मना रहे हैं।

कुछ समय बाद बाबा ने हमसे दृष्टि के इशारे से समाचार पूछा, हमने सुनाया कि बाबा आज साइंस के साधन द्वारा जो हर जगह बाबा के मिलन और मुरली देखी सुनी है तो सबको बहुत अच्छा लगा है और सब चाहते हैं ऐसे ही देखें। बापदादा बहुत-बहुत मुस्कराये और बोले, बच्चे खुश होते हैं तो बहुत अच्छी बात है लेकिन बच्चे बापदादा का पार्ट तो गुप्त-ही-गुप्त हो रहा है। ब्रह्मा तन में भी कोई भाग्यवान पहचान सके। अब अव्यक्त पार्ट को तो कोटों में कोई, कोई में भी कोई जान पहचान सकता, इसलिए बापदादा के मिलन की आकर्षण मधुबन में ही शोभा देती है और नियम मर्यादा की लकीर भी मधुबन में ही हो सकती है। इस आकर्षण के बल, हिम्मत से पवित्रता और सर्व नियमों का बन्धन निभाने में बच्चों को सहयोग और सहज होता है। इसलिए इस गुप्त पार्ट को, जैसे चल रहा है ऐसे विधि से रखना अच्छा है।

बाकी दूसरी-दूसरी बातें तो छोटी-छोटी हैं, जो भी मर्यादा को लूज़ करने

वाली हैं। लेकिन बापदादा जानते हैं कि इन साइंस के साधनों से आगे चलकर प्रत्यक्षता का पार्ट होना है लेकिन अभी इस समय ऐसे पहचान वाली धरनी नहीं बनी है, जो जैसा पार्ट है वैसे उसको पहचान सकें, अभी मिक्स है। इसलिए कुछ समय अब मर्यादा पालन करने का भाग्य आत्माओं को देने दो। उसके बाद बाबा ने सर्व मीटिंग में आये हुए मधुबन के बच्चों को बहुत-बहुत दिल से याद-प्यार दी और यही महावाक्य उच्चारे कि मधुबन निवासियों की जिम्मेवारी का ताज बहुत-बहुत बड़ा है। हर एक मधुबन के निमित्त बच्चों को हर कदम में यही याद रहे कि जो हम कदम उठायेंगे, हमें देख और करेंगे। इसलिए एकनामी, एकॉनामी से मधुबन सेवा को आगे बढ़ाते रहो।

2-3-02

रूहानी छत्रछाया ही सेफ्टी का साधन है

बापदादा के पास आप सबकी याद-प्यार लेकर पहुँची तो जाते ही सामने से बहुत पावरफुल मधुर मिलन हुआ। आज तो बापदादा का स्वरूप ऐसा शक्तिशाली था जैसे ज्ञान सूर्य चारों ओर अपने शक्तियों की किरणें दे रहे हैं। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची दुनिया के भिन्न-भिन्न विनाश लीला देख बच्चे आश्चर्यवत तो नहीं होते? बहादुर, निर्भय बन साक्षीपन की सीट पर सेट होकर ड्रामा देख रहे हैं ना? क्योंकि यह तो समय-प्रति-समय भिन्न-भिन्न रूप से हलचल बढ़नी ही है। नथिंग न्यू का पाठ पक्का है? जब होना ही है तो त्रिकालदर्शी स्थिति से देखते चलो, उड़ती कला से आगे बढ़ते चलो और दु:खी, अशान्त आत्माओं को रहमदिल बन सुख-शान्ति की अन्चली देते रहो। वृत्ति द्वारा वायुमण्डल शान्ति का फैलाते रहो। इस सेवा में बिजी रहो।

गुजरात में खिटखिट है, यह तो चलता है, कब हल्का, कब तेज होता रहेगा। अगर कहाँ ज्यादा हालत नाज़ुक है, टीचर्स बहिनें अपनी सेफ्टी

वायुमण्डल प्रमाण नहीं समझती हैं तो भले नजदीक स्थान पर शिफ्ट कर सकती हैं और सेन्टर पर कुछ मजबूत योगयुक्त अधर कुमार नहीं रह सकते तो बुजुर्ग आयु वाले भाई उनके साथ कुमार शक्तिशाली रह सकते हैं क्योंकि कर्फ्यू के कारण आना-जाना तो बन्द होता तो वह रहकर सम्भालें। लेकिन अपनी अवस्था को रूहानी छत्रछाया के अन्दर पक्का रखें तो सेफ रहेंगे। बाकी सर्व गुजरात निवासी बच्चों को खास बापदादा की शक्तिशाली याद-प्यार देना। गुजरात को भिन्न-भिन्न प्रकृति के खेल देखने का पार्ट मिला है। वह देखते रहो, अनुभवी मूर्त बनते रहो। बेफिकर बादशाह के स्वमान में सदा आगे बढ़ते रहो।

उसके बाद बाबा को शिवरात्रि का समाचार सुनाया कि सबने बहुत उमंग-उत्साह से प्रोग्राम्स बनाये हैं। बापदादा सुनते ही जैसे सब बच्चों को इमर्ज कर बहुत-बहुत प्यार दे रहे थे और यही बोले बच्चों ने अच्छे प्रोग्राम्स बनाये हैं। सबके दिल में बाप का प्यार बहुत-बहुत है तो प्यार से प्रोग्राम्स अच्छे बनाये हैं। बापदादा भी कहते बाप की जयन्ती सो हर बच्चे की जयन्ती है। इसलिए हर एक बच्चे को हीरे तुल्य जयन्ती की दिलाराम बहुत-बहुत दिल से अति स्नेह भरी, प्रेम भरी, उत्साह भरी, उड़ती कला की समर्थी भरी याद-प्यार और पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। हर एक ऐसे अनुभव करे कि मेरे को पर्सनल बापदादा मुबारक दे रहे हैं। डबल फारेनर्स हर बच्चा भी विशेष हर एक याद-प्यार मुबारक स्वीकार करे। साथ में आप बच्चों की सबसे साकार वतन में निमित्त प्यारी दादियाँ जो दिलाराम के दिल तख्तनशीन हैं ही, उन्हों को भी बापदादा के साथ आप सबकी तरफ से बहुत-बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो।

3-3-02

हलचल के वायुमण्डल में योगयुक्त, निर्भय, निरसंकल्प हो निर्णय करो

आज दोनों दादियों का सन्देश लेकर बाबा के पास गई। बापदादा ने बहुत मीठा मधुर मिलन मनाया। बाद में मैंने वर्तमान समय का वायुमण्डल सुनाया और सन्देश सुनाया, सुनते ही ऐसे लगा जैसे बाबा के सामने सर्व फारेन के बच्चे इमर्ज हैं और बापदादा बहुत स्नेह और शक्ति रूप से दृष्टि दे रहे हैं। कुछ समय के बाद बाबा बोले, हालतें तो हर दिन बदलती रहती हैं। इसलिए जिन भी बच्चों को आना है उन दिनों का ताज़ा वातावरण देख योगयुक्त बुद्धि से निर्भय, शुभ, निरसंकल्प हो निर्णय कर आ सकते हैं। अगर देहली से नहीं आ सकते, अहमदाबाद से ही आना पड़ता है तो अमृतवेले के बाद जल्दी सवेरे-सवेरे निकल आयें तो ठीक पहुँच जायेंगे। पहले भी जब अमेरिका में खिटखिट हुई थी तब भी निश्चयबुद्धि बच्चों को सब साधन मिल गये, सेफ पहुँच गये थे क्योंकि यह हलचल तो समय-प्रति-समय अपना रूप दिखाती ही रहेगी। अभी भी सब ठीक पहुँच रहे हैं। आप आने चाहते हैं, उमंग है तो मना नहीं करो।

19-3-02

अब मनसा द्वारा अनुभूति कराने और वाचा द्वारा सन्देश देने की सेवा साथ-साथ करो

आज मीठी दादी जी का सन्देश लेकर वतन में जाना हुआ। बापदादा ने जाते ही दूर से अशरीरी स्थिति की अनुभूति का बहुत मीठा सुन्दर अनुभव कराते हुए मिलन मनाया। कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्ची साकार वतन का क्या हालचाल लाई हो? मैंने दादी का सन्देश सुनाया कि वर्तमान समय

के वायुमण्डल प्रमाण याद की तपस्या ज़रूरी लगती है, इसलिए वह प्रोग्राम्स ज़्यादा रखें। बाबा बोले, बापदादा तो अब हर मुरली में बच्चों को भिन्न-भिन्न इशारे देते रहते हैं कि समय अनुसार अब आवश्यकता है - सेवा करते भी मनसा शक्ति की सेवा भी साथ-साथ हो। कर्म और योग, बैठते भी और चलते-फिरते भी साथ हो। लेकिन बच्चों को अब तक वाणी की शक्ति का अभ्यास और रुचि ज़्यादा है। मनसा और वाणी दोनों साथ-साथ रहें यह अभ्यास बहुत कम है। इसलिए सेवा में ही संस्कारों का विघ्न ज्यादा आता है। बापदादा तो यही चाहते हैं कि अब एक ही समय मनसा शक्ति द्वारा अनुभूति कराने का अनुभव और वाणी की शक्ति द्वारा सन्देश देने का कर्त्तव्य दोनों का बैलेन्स हो। अभी तक इसमें कमी है। इसलिए जब तक दोनों साथ-साथ का अभ्यास कम है तो योग भट्ठी के प्रोग्राम्स होते भी मन-बुद्धि फ्री है तो और ही व्यर्थ संकल्प बोल-चाल में मन ज्यादा जायेगा, इसलिए सेवा के प्रोग्राम्स भी बनाने पड़ेंगे लेकिन टू मच जल्दी और एक दो को देख, हमारे वर्ग का भी प्रोग्राम ३ बार हो यह रेस की भावना बदलनी चाहिए। एक प्रोग्राम के बाद एक दिन विशेष याद का रखना ज़रूरी है, जिसमें स्थूल कर्म करते भी याद का चार्ट अच्छा रखने का, कर्म और योग के पावरफुल अभ्यास का अटेन्शन ज़रूरी है। सिर्फ सेवा में बिजी रहना है, यह आवश्यकता नहीं है लेकिन बैलेन्स द्वारा आत्माओं को अनुभूति करानी है। इसके लिए अपनी श्रेष्ठ स्थिति, अपना शुभ चिन्तन शुभ वृत्ति, निरसंकल्प स्टेज में बहुत ध्यान देना ज़रूरी है।

उसके बाद मैंने बाबा को बताया कि दादी जी इस वर्ष फारेन में जाने के लिए पूछ रही हैं क्योंकि कइयों ने अपने जाने के लिए आफर की है। बाबा बोले, बच्ची समय अनुसार जितना आना-जाना कम हो उतना अच्छा है। बाकी जहाँ जिस आत्मा का जाना बहुत ज़रूरी है उनके लिए तो जाना ही पड़ेगा। बाकी फारेन सेवा में फारेन वाले ही एक-दो को मदद करें तो अच्छा है।

2-4-02

स्व, सेवा साथी और विश्व-परिवर्तन के लिए अपने शक्ति स्वरूप को इमर्ज करो

आज बापदादा के पास दादियों का और सर्व आई हुई निमित्त बनी हुई टीचर्स का याद-प्यार लेते हुए वतन में पहुँची। तो सामने से ही मधुर मिलन हुआ लेकिन आज का मिलन बहुत न्यारा और प्यारा था। क्या देखा, बापदादा अपने सर्वशक्तिवान रूप में खड़े हैं। बाबा के गले में एक बहुत सुन्दर माला चमक रही थी जो भिन्न-भिन्न रंग के [illegible] रत्न थे। उन हर रत्न के बीच में एक-एक बहन का चित्र बहुत सुन्दर था। मैं दूर से ही देखते आगे बढ़ती गई। बाबा बोले बच्ची, आज मेरे निमित्त सर्विसएबुल बच्चों की याद लाई हो? बापदादा तो अपने सेवा के साथियों को सदा अपने दिल में रखते हैं।

उसके बाद बाबा को हमने समाचार सुनाया, बापदादा मुस्कराते, सब बच्चों को दृष्टि देते हुए बोले, बच्ची जानती हो - बाप बच्चों से क्या चाहते हैं? अब तो बाप हर बच्चे को विश्व की स्टेज पर अपने विशाल सर्व शक्ति रूप में प्रत्यक्ष देखने चाहते हैं क्योंकि शक्ति रूप द्वारा ही शिव बाप प्रत्यक्ष होना है। ब्रह्माकुमार कुमारी स्वरूप तो नेचरल है ही लेकिन अब विशेष शक्ति रूप इमर्ज चाहिए, जिससे ही स्व परिवर्तन निरन्तर नेचुरल होगा और उस स्व परिवर्तन से ही सेवा साथी और विश्व की आत्माओं का परिवर्तन होगा।

बापदादा देख रहे हैं कि बच्चे नॉलेजफुल तो बहुत अच्छे बने हैं लेकिन नॉलेज की हर प्वाइंट को (जैसे बीती सो बीती, बिन्दी लगाना, शुभ भावना, शुभ चिंतक बनना आदि-आदि) इन हर प्वाइंट्स को पावर के रूप से यूज़ करने में कमी है क्योंकि नियम है कि हर प्रकार की पावर कोई-न-कोई

परिवर्तन अवश्य करती है। यह तो परमात्म पावर है, इससे क्या नहीं हो सकता। इसलिए खुद भी सोचते हैं जितना जैसा परिवर्तन होना चाहिए वैसे परिवर्तन नहीं है लेकिन अब समय अनुसार इस ग्रुप को सर्व के आगे सदा शुद्ध संकल्प में परिपक्वता, सत्यता, सम्पूर्ण स्वच्छता, सम्पन्नता का प्रमाण स्वरूप प्रत्यक्ष रूप में दिखाना आवश्यक है। क्योंकि यह ग्रुप कोटों में कोई आत्मायें निमित्त हैं। अब समय और स्वयं के परिवर्तन में तीव्रगति लाना अति आवश्यक है। हर श्रेष्ठ संकल्प में स्वयं में निश्चयबुद्धि बन निश्चित विजयी बनना ही है। होना ही है और हुआ ही पड़ा है। यह अनुभव स्वयं द्वारा सर्व को कराओ। साथ-साथ बाबा बोले अब विशेष आत्मायें क्या-क्या सहयोग बेहद सेवा में दे सकती हैं, जो सब समझें कि यह हमारे हैं, उस बेहद सेवा का कोई प्लैन बनाओ क्योंकि आप सब बेहद के हो। ऐसे महावाक्य उच्चारते बाबा ने सर्व को बहुत मीठी दृष्टि से याद-प्यार दिया। दादियों को विशेष याद दी और मैं साकार वतन में आ गई।

3-4-02

समय प्रमाण
योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवा की विधि अपनाओ

बापदादा को वर्तमान समय का वातावरण सुनाया। बापदादा बोले, बच्ची हर एक बच्चा वर्तमान वायुमण्डल को तो जानता ही है कि अब समय, प्रकृति अति में जानी ही है, वह जा रही है इसलिए हर बच्चे को सेवा में बाहर आना-जाना और अपने स्थान पर रहने लिए अब बहुत योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवा की विधि अपनाना आवश्यक है। मधुबन में आने-जाने या कहाँ भी आने-जाने की मना नहीं है लेकिन जिस समय निकलते हैं उस समय वायुमण्डल को देख बाप की टचिंग द्वारा कदम उठायें। बाकी सेवाकेन्द्र और सेवा को बहुत शक्तिशाली और सेफ्टी से चलाना है। डरना नहीं है

सिर्फ निरन्तर सहज योगी शक्तिशाली स्वरूप में स्थित रह कदम उठाना है।

5-4-2002

अब अपनी मूर्त से हर एक को आत्मिक रूहानी सीरत का अनुभव कराओ

(मीटिंग में आये हुए भाई-बहनों प्रति)

आज बापदादा के पास मीटिंग में आये हुए विशेष भाई-बहनों का, दादियों का याद-प्यार लेते हुए वतन में पहुँची। बापदादा बहुत मीठी दृष्टि से प्रेम के सागर में लहराने का अनुभव करा रहे थे। ऐसे लगा कि जैसे हमारे साथ आप सब भी बापदादा के सामने इमर्ज थे। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची आज मेरे सर्विसएबुल बच्चों का समाचार लाई हो! बापदादा तो चारों ओर के सर्विसएबुल बच्चों को देख-देख हर्षित होते हैं क्योंकि बापदादा के सेवा के साथी विशेष भुजायें हैं। अब तो बापदादा ने सेवाओं की भिन्न-भिन्न विधि सिखला दी है।

बापदादा अब इशारा देते हैं कि मनसा सेवा अपनी श्रेष्ठ स्टेज द्वारा, वाणी की सेवा मधुरता, निर्माणता और रूहानियत द्वारा और कर्मणा में कर्म और योग के बैलेन्स द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क में सर्व शक्तियों, गुणों की विशेषता द्वारा सेवा करने में ही सहज सफलता है। अब तो इन सब निमित्त सेवाधारी बच्चों को बापदादा इस नज़र से देखते हैं कि जब विश्व परिवर्तन करने की जिम्मेवारी का ताज धारण किया है तो अब समय की, प्रकृति की तीव्र रफ्तार को देख हर एक बच्चे की मूर्त से आत्मिक रूहानी सीरत दिखाई दे। अभी वह झलक चेहरों से दिखाई कम देती है। सेवा करना या प्लैन बनाना तो साधारण मनुष्य भी करते रहते लेकिन बच्चों के चेहरे से वह रूहानियत, अलौकिकता, फरिश्ते पन की स्थिति की भासना दिखाई दे। जैसे सुन्दर चित्र अपने तरफ आकर्षित स्वत: सहज करते, ऐसे बच्चों का

चैतन्य चेहरा सहज अनुभव कराये कि यह न्यारे और प्यारे विशेष आत्मायें हैं। जैसे ब्रह्मा बाप जगदम्बा माँ को देखा। उसकी सहज विधि है कि नॉलेज को धारण करने के साथ-साथ नॉलेज की भिन्न-भिन्न प्वाइंट के अनुभवों के अनुभव में मगन रहें, मनन मूर्त रहें, उसकी आवश्यकता है। अभी नॉलेज की हर प्वाइंट के अनुभवी मूर्त कम दिखाई देते हैं। लेकिन जब अनुभवों में मगन रहेंगे तो स्वत: ही स्व में भी छोटी-छोटी बातों को मिटाने और परिवर्तन करने में सहज होगा, समय नहीं देना पड़ेगा और सेवाकेन्द्र का वातावरण भी शक्तिशाली रहेगा और मनसा सेवा सूरत द्वारा रूहानी सीरत का भी सहज अनुभव होगा। बस अब यही धुन लगी रहे कि विश्व की हर आत्मा को मुक्त बन मुक्त करना ही है। स्वयं को किनारा कर सर्व का सहारा बनना ही है।

ऐसे कहते कुछ समय जैसे बापदादा वतन में थे ही नहीं, कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची बापदादा विश्व का चक्कर लगाने गये तो बहुत-बहुत दु:ख-अशान्ति का वातावरण है। सबके मन में क्वेश्चन है अब क्या होगा? लेकिन आप बच्चे खुशखबरी सुनाने वाले हो कि अब स्वर्ण युग आयेगा। ऐसे मिलन मनाते दृष्टि लेते रहे। बापदादा ने सबके लिए बहुत-बहुत याद दी और हर एक के लिए एक सुन्दर चित्र दिया जिसमें वर्ल्ड के गोले पर खड़े हो विश्व को मनसा शक्ति द्वारा शान्ति का वायब्रेशन सकाश दे रहे हैं, जो बहुत सुन्दर चमकता हुआ चित्र था। ऐसे मिलन मनाए हम साकार वतन पहुँच गई।

23-4-02

हर समय, हर शुभ कार्य, श्रेष्ठ सहयोग में हाँ जी का पार्ट बजाओ

आज बाबा के पास भविष्य प्रोग्राम्स प्रति जाना हुआ। जाते ही बापदादा ने स्नेही मूर्त, मोहिनी मूर्त से दृष्टि देते हुए मिलन मनाया और अपनी बांहों का हार हमारे गले में पहना दिया। हम भी बांहों के हार में समा गई। कुछ समय

के बाद बाबा बोले, बच्ची आज क्या-क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आज तो आपके आह्वान का प्रोग्राम लाई हूँ। बाबा बोले, बाप तो बच्चों के बुलावे पर हर समय आवश्यकता अनुसार जी हाजिर है ही और यही राय बच्चों को भी देते हैं कि हर समय हर शुभ कार्य, श्रेष्ठ सहयोग लिए जी हाँ, हाँ जी का पार्ट बजाते चलो, उड़ते चलो। संगमयुग पर बापदादा को बच्चों के सिवाए और काम ही क्या है। याद-से-याद तो मिलती ही है। उसके बाद बाबा को भट्ठियों का प्रोग्राम सुनाया। बाबा बोले, यह समय-प्रति-समय आपस में मिलना, शक्तिशाली स्नेह युक्त पालना देना बहुत आवश्यक है। बापदादा भी बच्चों का स्नेह मिलन, रूहरूहान करना, रिफ्रेश होना देख-देख हर्षित होते रहते हैं। इसलिए ही तो यह बेहद का स्थान बना है। सिर्फ सीज़न और समय को देखते चलना। समय अनुसार अब तो बच्चे भी बढ़ने हैं और बच्चों की स्थिति भी बढ़ती जायेगी और स्थान भी बढ़ते ही जायेंगे। ये ही ड्रामा की नूंध है, जो होनी ही है।

उसके बाद बाबा को दादी जी और अपना बाम्बे में हॉस्पिटल के उद्घाटन प्रति जाने का समाचार सुनाया। सुनकर बाबा मीठा मुस्कराते बोले, यह साधन भी वन्डरफुल है। बहुत अच्छा सेवा का साधन और आत्माओं में सेवा के स्नेह का आवाज फैलाने वाला है क्योंकि जो गवर्मेन्ट डिपार्टमेंट ने स्वयं आफर की और अब भी साथ में दिल से सहयोग दे रहे हैं। यह सहज साधन है। बच्चे योगिनी, मीरा, अशोक मेहता फैमली सभी स्नेही सहयोगी दिल वाले और सब निमित्त सहयोग देने वाले एक-एक बच्चा बहुत अच्छी मेहनत कर रहे हैं और साथ में श्रेष्ठ भाग्य भी साथ है जो सब सहज सहयोग दे रहे हैं। अच्छे उमंग-उत्साह से आगे बढ़ रहे हैं और आप सबके जाने से भी और उमंग-उत्साह आगे बढ़ेगा। निमित्त हर एक बच्चे को खास नाम सहित याद और बधाई देना। उसके बाद मैंने बाबा को दादी जानकी जी की सर्विस का समाचार सुनाया और याद दी। याद देते ही ऐसे लगा जैसे दादी जानकी और सर्व साथी भाई-बहनें बाबा के आगे इमर्ज हैं और बापदादा बहुत

मीठी-मीठी स्नेह भरी दृष्टि से बधाई दे रहे हैं। और बोले जनक बच्ची को उमंग बहुत है, विश्व को सन्देश दे बाप से मिलाने का। इतने में क्या देखा कि बाबा ने दादी जी को भी इमर्ज किया और कहा यह ब्राह्मण आत्माओं में उमंग-उत्साह दिलाने में विशेष निमित्त आत्मा है। ऐसे कहते ही बाबा ने दोनों दादियों को अपने हृदय में समा लिया। हम तो देखकर खुश हो रही थी, इतने में बाबा बोले, बच्ची आप भी आकर समा जाओ। दोनों दादियों का आपसे दिल का प्यार है। ऐसे ही हम तीनों ऐसे समा गई जैसे तीनों एक हैं। बस यह वन्डरफुल दृश्य तो अति अलौकिक प्रिय था। बाबा तीनों को मीठी दृष्टि देते बोले - मेरे सच्चे, मेरे दिल के दुलारे सदा उमंग-उत्साह में रह औरों को भी उमंग-उत्साह दिलाने वाले बच्चे बाप को अति प्रिय हैं, सदा समीप हैं। ऐसे ही अलौकिक मिलन मनाए मैं अपने वतन पहुँच गई।

17.5.2002

बाप समान बनने के लिए निःस्वार्थ और निर-इच्छुक बनकर तपस्या करो

आज बापदादा के पास अपनी दादियों और आप सबका याद-प्यार और समाचार लेकर वतन में पहुँची, तो सामने से ही बापदादा ने रूहानी नयनों द्वारा मिलन मनाया और अपने होली हस्तों द्वारा, आओ बच्ची, आओ बच्ची कह कर बुलाया। मैं भी दिलाराम के दिल के स्नेह के सागर में समाने का अनुभव करके समा गई। कुछ समय तो उसी मिलन में मगन के अनुभव में थी।

बाद में बाबा बोले, बच्ची आज क्या समाचार लायी हो? मैं बोली आज देश-विदेश दोनों का समाचार लायी हूँ। अपने भारत में तो सभी ब्राह्मणों में अभी योग-तपस्या का बहुत उमंग है। सभी बहुत रुचि से अखण्ड योग, 16 घण्टे का योग कर रहे हैं। सब सेन्टर्स पर अच्छा वायुमण्डल है। मधुबन में भी सेवाओं के साथ-साथ तपस्या के प्रोग्राम भी बहुत अच्छे चल रहे हैं। विदेश

में भी तपस्या के साथ दादी जानकी को भिन्न-भिन्न कार्य के बड़े प्रोग्राम्स मिल रहे हैं। अभी भी एक धर्म नेताओं के संगठन में 'मिलेनियम वर्ल्ड पीस सम्मिट' के तरफ से निमन्त्रण मिला है, जिसमें सिर्फ धर्म नेतायें ही होंगे (प्रतिनिधि नहीं)। बापदादा बोले, बच्ची समय अनुसार अब धीरे-धीरे प्रत्यक्षता का रूप प्रत्यक्ष हो रहा है। जैसे एक तरफ बॉम्बे में गवर्मेन्ट ने दिल से ऑफर की है, दूसरे तरफ धर्म नेतायें भी स्वयं ही निमन्त्रण दे रहे हैं। साथ में भिन्न-भिन्न वर्ग जैसे एज्यूकेशन वाले और सब कहते हैं कि आध्यात्मिकता का कार्य ब्रह्माकुमारियाँ ही सही रूप से कर सकती हैं। इसी रीति से सन शोज़ फादर का पर्दा खुलना शुरू हुआ है। सब तरफ देश-विदेश में अब यह मानते हैं कि इन्हों का कार्य, सिस्टम प्रमाण बहुत अच्छा है। ऐसे कहते ही बापदादा बहुत गम्भीर रूप में ऐसे लगे जैसे कोई गुह्य बातों के विचार में खो गये हैं। मैं भी देखती रही। कुछ समय के बाद मैं बोली बाबा आप कहाँ चले गये थे? बाबा बहुत राज़युक्त मुस्कराये और बहुत धीरे-धीरे बोले, बापदादा अभी-अभी दो बातें देख रहे थे - एक तरफ सेवाओं की प्रत्यक्षता का पार्ट खुल रहा है। दूसरे तरफ बच्चों के तरफ देख रहे थे कि सेवा में निमित्त बने हुए बच्चों में बाप समान सम्पन्न बनने की विशेषतायें कहाँ तक प्रत्यक्ष हुई हैं क्योंकि बच्चों में बाप समान बनने की स्थिति प्रत्यक्ष होने से प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजता है लेकिन अभी तक बाप देख रहे हैं कि बाप समान बनने में अभी अन्तर है, यह समानता ही समाप्ति का आधार है। मैंने देखा आज तो बापदादा को बहुत डीप सोच चल रहा था। मैंने कहा बाबा इसका मूल कारण क्या है जो सब चाहते भी हैं फिर भी समान बनने में अन्तर रहता है? बापदादा मीठा मुस्कराये और बोले, बच्ची क्या सुनाऊं यह तो गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने, बहुत सूक्ष्म बातें हैं। मैं बोली बाबा आखिर ठीक तो होना ही है, बाबा बोले बनना तो है और बनाना भी इन बच्चों को ही है। तपस्या तो अच्छी कर रहे हैं लेकिन तपस्या में बाप से लगन है, प्यार है, लेकिन तपस्या अग्नि रूप नहीं बनी है, ज्वाला रूप नहीं बनी है। इसलिए कई बच्चों में अब तक

सेवा का अभिमान, बुद्धि का अभिमान, विशेषताओं का अभिमान, मैं-पन का अभिमान..... यह भिन्न-भिन्न रॉयल रूप में समाया हुआ है। सेवा अच्छी करते हैं लेकिन सेवा भाव में भिन्न-भिन्न देह-अभिमान का रूप मिक्स हो जाता है, उसको पहचानते नहीं हैं। अपने को राइट समझते हैं। यह तो मेरा होना ही चाहिए, मिलना ही चाहिए, यह सूक्ष्म रॉयल इच्छा, अच्छा और समान बनने नहीं देती। बाप समान नि:स्वार्थ, निर-इच्छुक बनने में विघ्न डालती है। इस बात को स्वयं महसूस भी नहीं कर पा रहे हैं। इस कारण ही आवाज़ बुलन्द नहीं फैलता है, रुका हुआ है।

बापदादा देश-विदेश के सर्व बच्चों को कहते अपने को आपे ही सूक्ष्म चेक करो और चेन्ज करो, तो दु:ख अशान्तिमय दुनिया भी चेन्ज हो जायेगी। उसके बाद बाबा ने आज विशेष डबल फारेनर्स को याद किया और बड़े स्नेह रूप से बोले देखो, यह ब्रह्मा बाप की अव्यक्त फरिश्ते रूप की रचना बहुत प्यारी लगती है। बापदादा से दिल का प्यार अच्छा है, बापदादा भी बच्चों को सदा फरिश्ते समान उड़ती कला में ही देखते हैं इसलिए बहुत करके बच्चे गिफ्ट भी हार्ट या फरिश्ते रूप का ही भेजते हैं। सेवा का उमंग-उत्साह भी अच्छा है। वृद्धि भी अच्छी है। बापदादा हरेक निमित्त बच्चों को सेवा की मुबारक देते हैं।

बापदादा सर्व बच्चों को कहते हैं सदा स्वमान की सीट पर सेट रहो तो माया अपसेट नहीं करेगी क्योंकि आजकल माया भिन्न-भिन्न रूप से अपना प्रभाव डाल अपना बना लेती है लेकिन हे मेरे दिल तख्तनशीन स्वमान के तिलकधारी बच्चे, सदा अयोग्य बातों से, अयोग्य स्वभाव-संस्कार से व अयोग्य सम्पर्क-व्यवहार के प्रभाव से न्यारे और बाप के प्यारे रहना है। सी फ़ादर करते उड़ते चलो, उड़ाते चलो, हर समय सफलता स्वरूप अनुभव करो। बापदादा की छत्रछाया तो सदा साथ है। ऐसे कहते बापदादा के आगे सर्व डबल विदेशी बच्चे इमर्ज थे। और बाबा हर एक को चारों तरफ ऐसी मीठी-मीठी स्नेह और शक्ति भरी दृष्टि दे रहे थे। वह दृश्य तो देखने और

अनुभव करने वाला था। बोलो, सर्व डबल विदेशी अभी-अभी उसी उड़ने वाली रूहानी प्यारी दृष्टि का अनुभव कर रहे हो ना? उसके बाद बाबा ने सर्व भारतवासी बच्चों को भी बहुत-बहुत याद-प्यार दिया और बोले हर बच्चा बाप के नयनों का नूर है। बच्चे ही बाप का संसार हैं, उसके बाद दोनों दादियों और साथियों को बाबा ने याद किया और बोले बाप बच्चों की सेवा पर बलिहार है। ओम् शान्ति।